THE INSTITUTE FOR ADVANCED STUDIES OF WORLD RELIGIONS

FILM—STRIP NO. MBB—1971—85-93

BUDDHIST SANSKRIT MANUSCRIPTS

MICROFILM [illegible] MBB

MBB-1971-85
1. Film strip number

21
2. Source

GUHYASAMĀJA TA[illegible]TRA (PARĀRDHA)
3. Ti[illegible]

TATHĀGATAGU[illegible]YASAMĀDHI

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

N.S. 835 + 880 = A.D. 1715
5. Year in which MS was copied (Nepali Samvat and Christian Era)

6. Name of Scribe

NEPĀLĪ PAPER
7. Material (Palm leaf, etc.)

NEVĀRĪ
8. Script

15 cm. x 30 cm.
9. Size

10
10. Lines to a page

125
11. Number of leaves in complete work

X
12. Missing leaves

13. Author and Date of composition (if given)

31
14. Number of Chapters

15. Remarks Compare this manuscript with MS No 60. This text has thirty one chapters however, MS No. 60 has only 21 chapters.

November 28, 1971
Date photographed

[illegible]गगनगञ्जसमाधिः

गुह्य॥

॥ॐ नमः श्रीवज्रसत्वाय॥ ॥एवं मया श्रुतमेकस्मिन् समये भगवान् सर्वतथा
गतकायवाक्चित्तवज्रयोषिद्भगेषु विजहार॥ अनभिलाप्यानभिलाप्यैर्बुद्धबोधिस
त्वानां मध्ये वज्रगर्भ ... मकार्षित् ... समनन्तरनिषण्णेन वज्रगर्भेण उक्तं यावत्
... सर्वतथागत ... विज्ञाप्य ...
... तथागतं ... वाचा ... सर्वतथागत ... पू
... वज्रगर्भ ... सर्वतथागत ... १
... सर्वतथागत ... अथ वज्रगर्भ प्रमुखा महा ... सत्वाः प्र
... सर्वतथागत ... कथं ...
... सर्वतथागत ... सर्वतथागताः ... ॥

[illegible] हि व स्थगार्द अवक प्रलूक बुद्धा नाम [illegible] वल वाऽ उहलं संपूर्ण प्रज्ञा पारमितकं भ
दशाहव संपूर्ण सना पहि तिस्यर्था उहव उलति [illegible] नहि न वल सर्वै गव सहावाल
कंल क्षकन०० ल्पन नलक थां [illegible] थत है मक्रा निदान [illegible] कत व ऊमत्वाहि थीप्यत ॥ न [illegible]
मिल्प नन्ड पदलि का मत्रो स्वावामा शुपदवना [illegible] ष कलक्षं थां प्रज्ञापाराया [illegible]
वाभिरादिते भू [illegible] प्रथमं भून्यतो विवि [illegible] लदहित वपधलि [illegible]
नसव काव पन्।। गंथ स्वहि किभूनया न [illegible] कावपनू। ह धालि [illegible]
सिव कन वयन।। व ऊगर्हे उक्ष वा।। व कू [illegible] नामसख्य विज्ञान कथंहव [illegible]
वभून्यानाम सख्य विज्ञानं कंहवन।। प्र [illegible] न्यानामसख्य विज्ञानं कथं हवनू [illegible]
सति भून्यानामसख्य विज्ञानं कथं हवन।। [illegible] सति वभून्यानामसख्य विज्ञानं कथं हवनू।।
मतावहि४ भून्यानामसख्य विज्ञान कथं हवनू।। कस्मा ज्ञाति रूपं न उष्णा वन [illegible] नग्रेतान

गणाग

न गंध्य नापि श्राकाव नव सा ना पिनासकः॥ नस्पर्शो नापि स्पर्श्व नविर्दं नापि वैदिकं
हगा वा नाहं॥ [illegible] यथ मार्गमव र्यद्वयव र्डिंग अप्रगर्कमहर्व्यं हर्वी ध्यंवा रिंको रपि॥ न
हर्व्यं सर्वबुद्धा नामकारणस्मसार्दं सं॥ हम्रवकानप्रज्ञा नाकिस्रह्य नन समसावकाशवासना सूर्यं
ह्यानं प्रसूकवृद्धनिर्मितं॥ नपि सर्वन ज्ञानकिं यह स्पद्व जगथवो॥ र्दृमाया र्दृम यथा वा तां मूर्त्तिर्दृग
नवनसाँ॥ म ध्यव र्हिं नद हाना मूर्द्धि लङ्क मूवाग॥ लङ्कलङ्कन लङ्का सं विह्वा वाह्वा न वन सां ह्य
ननह्य नसा लाकह्र्या नां गा त्रि विद्दभग गाति श्रीकन वक ध्यय यथा ध्व क्वा दिग्गमयका॥ सहज्ञानम
ध्यया त्रि पूर्व जन्मा गतिं गतागः॥ समना शून्यं सं विन्दूम पूर्व लक गडकित सूलपकत्रादि ध्व हल पी
ज्ञा वा र्पं गुवृद्धि मान्॥ वा श्री स्व रादि निर्गतिं विनकंम स्प्र कीर्तिं तं॥ वावि विर्कृ [illegible]
कर्मकाप्र हं॥ मर्थ हान मयं न लं सर्वप सह लग्नाप्र कं न लम सूर्य किं हिंदव स वा कं वक्र रूपि वां॥
[illegible] प वश्र ह्म विरु रूपम नाम यं॥ ह्म ध्यव सतनि हूं श्रा मि यव्र महा यूकि॥ हाद शकंत या॥ २

गुरु

वानिश्चित्व शुक्लस्य दिने लग्न सुरूपवी॥जन्मस्य काविनिर्गत्य नाहि भक्ष्य यावल्लिङ्गं॥ पञ्चमीकलशमध्ये तु स्त्र
क्षाविश्लेना सकृत्तापि वहिर्न्नं तु वज्र मध्य विनिर्गतं॥ मानि मध्य लिङ्गं नवि ठं धर्मा अष्टवीजं कुमसं
स्थवसंत स्थनव तापूसर्व्व आत्मन्नि वृक्ष पिण्डेन अ: पृथिवी तत्त्ववीजस्य वक्र स्कन्धे वया जयन्तु ॥ वा
स्कन्दु या दिवी जस्य नाम्ना कर्त्तृ विकसा॥ सम्म नाम्न वीजस्य ठि का ब्रिम्ब अतु नी स्थव मत्ती वासाह वी
जातां वा हृत्वा क्रम अक स्कन्ध॥ वलिका हृद दक्षपूप पुष्पांना हि मूल यां अनुगास्कन्धेन वीजानां
स स्थनं वा न यो द्विविना॥ व्यापि वाप्य जगा स्तुविस्तु वचायस्य जगासो॥ ज्ञा अ वी हव तक स्य वु
या स्त्र स्तुना॥ कृपनं हृगामि स्या स्त्य ठ संवन क स्कन्धु॥ कर्मा कर्मा हवक स्य माव दृ हवव
न कृत्स सर्व्व कर्म्माणि यत्कि॥ वील सम्पूर्ण पूहं॥ प्राग स्तु सम ना प्राकं ज नने राग वनं हवद कर्म
दह मदा हमंना दश ष्टवना हव ना॥ स भ कि स्तु ग दानस्य धेन व्याव लिङ्ग नवल्ला वरे ज स्या विज्ञा:
नियाय ताम्नं सम साहृ भं॥ निर्व्वाणं सिद्धि नावी वं निश्चयं मत्तनं ज्ञिकमितिा॥ मानवं हगीनी श्चेव

नथभग

ग्रहित्रि वं भवबीन थ॥ब्र क्ष लिङ्क डी ही वेव वे थथमू डींन थनंटी॥ बक किंगो लिविनी वेव वा
श्रुलिनी नश्वे वंबा॥प्रह्मपायविश्वननपूछ पक्रु लवलल॥सवीनव्या॥प्र यत्वनयपअ है
दानजायत॥क्षुरु क्रु क्रियत इ४ रवं॥यात्र वीया॥पिरद वय भासू जा पंच वि अ प्राकाकूलदद
नहदिका४॥व्रा क्ष नी विज कूल जान पात थगाकामना॥क्रुतिनीय जगमजी माला॥बी क्रिस्वा॥दि
कूल ना॥अमन वज लिक थं नै वे श्रा॥गोपाल कि: मना॥ कर्म कूल जा॥पू श्री दूप लि वमहा॥
वेशव कनी मना॥नटी मनौ प्र कूली वेव न जकी फर्मकू॥ली नथ॥ब्रा विपश्र कू लीव्या ना:
नलवक्षु॥लिनीन था॥प थैमू डाउ विनिश्चिता॥जथगाता नां कूलं वेक संकम घ॥रि धीयन
नथना या॥गान: श्रीमा न्नागक स्यनथे व वा॥क्षूल या प्रह्लयायू क्षा नथगा॥ली हि थी यन॥कूल पं
चविथं पु: कंसं नं न रुप कूलं॥प भक्रि वि थ तां यानि का य वा॥क्रि: रु हदने ४॥कू लानां प थ ॥
ना वां न व: हकि श्व त्वब्रु पिनो॥वजवलप भमहीथ या सं प्रस्ह नि कू॥निवफो॥ना॥कि राव का हा:

भमसु

त्वातिरिक्तं नास्ति न द्वैता ॥ निष्कलो मंजदेवो विनिःप्रपंचस्वरूपवत ॥ वेदान्ताकाराश्च वला:
ला लोकाः ॥ लिंकोक्तः ब्रह्मा विष्णुः शिवः शक्ता विवृद्ध न मूर्तयः ॥ ब्रह्मा निवृत्तिर्वृद्धा विष्णु वि
ष्णुर्मूर्तयः ॥ शिवः सदा सकला नास्ति सर्वेषु सर्वाणि निष्कलं नमास्ति स्वरूपं नन तत्त्वं वृद्धा यत्ना ॥ हन ॥
देह सकलत्वात् सूक्ष्मा दैवत निनिगाद्यतां ॥ ह एतत् सासीति वृद्ध सामगा वानि निकथ्यते ॥ तथा निषिद्धि
अनया हृदयेश्वर्यादि सुभक्ति लाभ स्वरूपवा कृ भा हृदय लाहवावानि निति ॥ ऊननी हृदये प्रहृता ऊन
यति यस्माऊरा कानं ॥ हृगीती ति तथा प्रहृता विलागां दर्शयंत्य ८ ऊकी हृदये प्रहृा यंऊना स
र्वसत्वा नां ऊकीति तथा स्फुटा ॥ इ हि द्वितीय हृदये प्रहृा गुहा स्पदू हिती ति निगाद्यता ॥ नर्द्धे कीहृ
दये प्रहृां वचलत्वं हाकूप ॥ क्ष्म सर्गा हृदत्ति यस्मा हृ ऊ म्बी न स्मा हृ प्रकथ्यते ॥ ऊ पऊ ल्पन
मा ख्याऩं मालिका द्वितिप्र ऊ ल्पना नुनाम गुल पनर व: सामन्त नाम गुहा मूर्च्छता ॥ कवन्नू था
हवं मूल गुह ल हा भाटनं तथा ॥ नन्दयं विकिनं मवक्ष्य यस्मादि विनन्तं ॥ विहलं प्राप्य मथ भीमास्त्व

नथआ

नस्तु स्वंतु ऊं नं स्वाया ॥ मवहा यन्नस त्वेन हकं तस्त्वं क्षमानमू स्वात ॥ ॥ ॐ श्री सर्वज्ञ
थायानकाय बोधि क्रूवजय तस्या ॥ जिनह सत्त्व क्षान सर्वा [illegible] बाई मू हि [illegible]
[illegible] विहला [illegible] विनाविल प्रकाव धं प्रथम पटल ॥ ॥ अथ हफ्तौ शीलक्षा
याकि कान धर्मां कथयिष्यामि ॥ अक्षान्त कल्प्य वहि: कायं अक्षान्तव हिर्वा काय कार्यानूद
र्शी विहव नी स्पृपिस प्रज्ञान तस्य निर्माणि विनिय लोक अहि क्षा क्लेस नस्य ॥ अक्षान्त वदना वहि
र्वा काय कार्यानूद्दे वदन अक्षान्त वदना स्व वदनानू दर्शी विहव निमी स्पृपिस प्रज्ञा नस्य निर्मा
नविनी लोक अ हि क्षा दौर्मनस्य ॥ अक्षान्त सहि र्धा धर्म अ धर्मानू दर्शी विहवनी स्मृपिस
प्रज्ञान स्य निर्मान विनीय लोक अहि क्षा दौर्मनस्य ॥ अक्षान्त विल वहि र्धा विल्ह अक्षान्त
वहि र्वा विल्यविलानू दर्शी विहवनी स्मृपि स प्रज्ञानस्य निर्मानु विनीय लोक अहि क्षा दौ
र्मनस्य ॥ अमानि व [illegible] नामि ॥ अमूस [illegible] नाय कानाम कू धलावा धर्मा

८

मञ्जु

मनूत्पादाय छन्दं जनयति व्यायच्छति॥ वीर्यमारभते चित्तं प्रगृह्णाति॥ सम्यक्
प्रतिदधाति॥ उत्पन्नानां पापकानामकुशलानां धर्माणां मनूत्पादाय छन्दं जनयति
व्यायच्छति वीर्यमारभते चित्तं प्रगृह्णाति सम्यक् प्रतिदधाति॥ उत्पन्नानां॥
कुशलानां धर्माणां स्थितये असंप्रमोषाय भावनाये परिपूरये भूयोभावाय
वृद्धिवैपुल्याय छन्दं जनयति वीर्यमारभते चित्तं प्रगृह्णाति सम्यक् प्रणि
दधाति॥ ऋद्धिपादानि सम्यक्प्रहाणानि॥ छन्द[illegible]प्रहाणसंस्कारसमन्वा
गतं ऋद्धिपादं भावयति॥ विवेकनिश्रितं विरागनिश्रितं निरोधनिश्रितं व्यवस
र्गपरिणतं॥ चित्तसमाधि... वीर्यप्रहाणसंस्कारसम
न्वागतं ऋद्धिपादं भावयति॥ विवेकनिश्रितं विरागनिश्रितं व्यवसर्गपरिणतं
मीमांसा... वीर्यसमन्वागतं ऋद्धिपादं भावयति॥ ...
गृहीक समाप्ति त्रकृरा १

ठाणांग

भीड्रिय रद्द कारीव वानि गानू धर्म्मानुप्र हृद्रियथ प तिवि थाकि। सन चू धर्म्मानुप्रक्ष वकृ॥
गानी याह वनि ॥६॥ दं स्त्याप्र हृद्रियं॥ उकानि पं चड्रियानि पं वव लानि ह वनि अयावलं
स्म लिव लं वी र्य व लं ॥६॥ मा ति पं व व लानि॥ कम्म कन माति सप्फ वा क्षं ओ नि॥ कय थ स्म निसं
वाक्षं गवीर्यसं वाक्ष प्रीतिसं वाक्षं गं प्रम्ब्र हि संवाक्षं गं समाचि संवाक्षं गं॥ उवंक्ता सस्वक्षं गं
विवकनिः स्फं विमागानि ४ स्फकं नि गा धनि ८ स्फन वव सत्त्र पचि दा नं धर्म्म पनि यापदि। सप्फ
सस्वाक्षं गा॥ दिन स्वयनि॥ उर्घा वूर्ता मार्गसू उ कानम ॥ सम स्य हिया लोका स्वासाम दष्टि
स्फू हिकानू॥ सवन जीवनमा वेतपूर्व प्रजूत सम उन कायक वं दक नमान व दष्टि
सम्मू हि गानू॥ ता कूद भ ख न द हिसमू हि गानू पूल दष्टि समू हि नाय याक्त संसावपति
लि डी दहदित सम्मू हि नाथे ॥ संकस्मे नागाद्व यभा हाः॥ क्रिभाः सस्फु हि स्फ ॥ का स्वक ल्यात्र संक॥
५ यानि य॥ सक स्वैः भी लसचि प्रजा विमूकिः विमूकि स्फ सादर्ना न स्फ अ॥ सम्फ हि स्फ नि का सं

६

नयुक

कृत्स्नक्षय इति॥ सूत्रे व्याख्यास्यामः कृत्स्नक स्य॥ यथावा बाला लानेन पवं कापर्य तिः॥ लानेपवानूप ह

नि स्या सत्वा हिकयाक्षिबा वा समन्वागतो हवति यथा बा बासमनागत यामव कन्वति॥ सूत्रे व्याख्यास

स्यात्वा कृत्य कर्म कृष्णं कृष्ण विपाकं नलकर्मा कवाति॥ यत्कर्म शुक्लं शुक्ल विपाकं कथाति॥ नत्कर्म हि

सत्वाति॥ यत्कर्म शुक्लं कृष्णं विपाकं नत्कर्म नाहि मलकवाति॥ यत्कर्म कृष्णं शुक्लं विपाकं कृष्णं कृया

मवंव र्कथौ॥ न कर्म्मा हि सत्वा नाति प्रतिसंवर्त्तते॥ सम्य कर्म्मा कर्माक्षय सूत्रे व्याख्या॥ यदार्थवत्ल धृताज्ञनः

संलक्ष्य त्वनुसूले कैनलान्। कृत्स्नतान लयनेतान कथसूनता — वावशीलात्वनीषु कला॥ आलाह

आला संतुष्टि नवयता सूर्यानूला कत्सा जीवनता अपमूवाल समागम जीवः या वा यासामी थ्यावेस

वृक्ष नवाग वप भा हद्वे भानूल विठ्वा यामेन क्रोति॥ वा यास ४ समागमं मार्गमा गसुभावतागा नि

र्वाण गामी प्रतिपद समर्पयति॥ वायाम संतनूत क्रोति॥ अयमूत्रवाल सम्यग्व्यायामः॥ यमृत पखिलन

सपक सयम इत्कायकृटिला संसार दो षादिः नव संदर्शिका निर्वाण पथप्रत्यवेक्षतिः स्मयतां आर्य

मार्यमार्गयप्रकि प्रयागाथा॥ ६॥ यस्स य जस्स सम्मत्तं पि ठ॥ सम्मत्तेन समाधि र्म निस समाधिः ॥ ६ ॥ नः समता
विशाक्रा यसमत्कृ हि वहं निश्री ममव जामनि॥ अय कस्य य स्स सम्मत्तं समाधिः॥ ३ ॥ जोउव समाको
गथथा नात्पूर्विना यास्तु हसयथ॥ आलयावाधिस त्वो ना मिस्थि यादिल्बनूपि ७॥ आलयः सर्व्वसत्त्वानां स्व
आदीना विज्ञाप न ॥ कूवालाधाधिसत्वानां वृद्धत्वा वाहिकाः पना ॥ चाविश श्राधि वित्रानां प
मांति हपूर्व नां॥ ६ ॥ द्विया लमस्तंतना नां पृ कत्वं नदनं तनं॥ स्वदह वेव वृद्धत्वं हि नंना मत्र कृत ८
विनृ दहादन्यत्र वृद्ध त्वम हस्तान तात्रनं महत्॥ स्वदहत्वं म हात्म्यानं सर्व्व संकस्य च र्क्ति नां॥ व्याप
कः सर्व्व त्वानां दहत्वा पिन दहरु॥ वज्रगर्भ आह दहक तमतावः॥ कस्मात्॥ भगवन्के हिव
नाधि कं वतु र्वज्र प्रदहन ॥ वाधिवि कुस्व वृध्य दानाधि या त्रिंश यामना॥ कथम्॥ आह यास्सक्र॥
रूपा उदि याधामातु वाम नी॥ कर्म्म जाता वकी सषाधा॥ चिस्म वमातुना॥ सर्व्वीशीक स उष्मात
त्सात्म सना श्रव धृ नीवा॥ प्रमाणा स्तु वन्हीव सामान्या हेतु दायिका॥ विया गा प्रमनी सिक्रा मा त॥ गयाक

[illegible] कथा। त्रिवर्ग कामिनी [illegible] ॥ २ ॥ नाना [illegible] भगवन्की [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] पर्य्यन्तं ॥ ॥
[illegible] श्री सर्व्वज्ञ [illegible]
[illegible] ॥ अथ भगवन्के सर्व्वज्ञ [illegible] पूजां कृत्वा [illegible]
भगवन्[illegible] ॥ अथ भगवान् सर्व्वज्ञ [illegible] विदित्वा सर्व्वज्ञ [illegible]
[illegible] ॥ सर्व्व [illegible] ॥ सर्व्वबु-
द्ध [illegible] भगवान् [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ विचित्र कर्म्म [illegible] विचित्र विधि [illegible] ॥ बुद्ध [illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥ सर्व्वबुद्ध [illegible] सर्व्व [illegible] ॥ सर्व्वबुद्ध [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] विश्व [illegible] ॥ बुद्धादि [illegible] ॥ सर्व्वश्रीमा

र्ययास्ति स्वाद्रूपपतिवर्कलैनेश॥ विविक्तमायामडूर्य्यंमूकिन्नीतिसूत्कथा॥वेहायगमृनंश्चाधि
र्वाधिवद्विकल्पयित्वधासृद्रीकासृवनासिद्धिर्जोफिनीतिप्राप्तिद्याति॥सुविता विश्वमूजा
सुसर्वता विश्व सवचैविति॥वजवजपरवेवपसंपसववनथा॥नतिर्मतिधवंवेवरवस्तु
र्थकृलानिव॥जूपसर्वतथगातालिस्वनविवजपदोानामसमाधिसमापयंद्दंवाधि
विलृस्पलगहाव॥नभूस्यंनापिवासृत्यंमध्यमातापलस्पत॥ब्रह्मापावमितापीगम्भूपाय
कनूभमनं॥कगस्कुकनूप्रमपायप्रब्रह्मापावमिकासृहं॥अविकल्पचूधर्मचूनराधो
नवरावना॥अविकल्पाधिमाक्रविकल्पयलर्वकल्पनां॥अविकलाचूधर्मचूसलार्थ
पविकलसनां॥सर्वतथागतालवंप्रतिअलवावसमा॥ततासोधर्मवातालनग॥कतामहापा
संकवगुदविसन्ती॥इयधिकाः स्वधिकयागताश्रूनतकालमाज नसकुवनिसा॥नम
लुयागाविमसलभावकनमास्कुसलालकलकलावना॥नमास्कुसंसावार्हवभारुजा

दृष्ट्वा ॥ नमोस्तु सर्वजगद्धिताय नैकपर्षकिं नमाम्यहं सदा ॥ पूजनं पिपूजां कुलाप्रति पद्यवमा
हि ॥ हा च स्वरग नस्य वसल धर्म्मकाविग्रहं हगावा नाहाय यदि क्रियमार्ग लं पाया
रुरु लक्षणं ना ॥ अस्समाहित यागत तिस्र भवसमाहिन ॥ यस्मात् सर्व्वात्मानं विज्ञानमा
को ॥ नक विस्र जिवृद्ध न भर्त विज्ञान धमा ॥ विज्ञ विकृतं न विद्रूपं विज्ञान लप्तं संपदा
कार्यं प्रकाश ताले धर्म्मार्थं धर्मराव ना ॥ यस्मी धर्म वन्हस्वन नन्दी आगमिवा थिः ॥ मा
का हिउ वजुवसा बहुल नांपल त्यन ॥ सुरूह क्का हुत्त प अ बाम लवव स्थितं ॥ ॥
इति श्री सर्वधर्म [illegible] समाधिराजे [illegible]
नाम [illegible] ॥ ॥ अथ भगवान् प्रव [illegible] सर्वधर्म निर्दश्यं समल्या
सर्वज्ञ ॥ सस्मृह सदा वनु पिं ॥ आभयं न हवकरु वांत्र क्षः स्यात् स्वसुनात ना ॥ स्वप्रहु
पाद्मिताः संवृता कान मूपि ही ॥ एवं विषयाणी सर्व्वपा श्री हर्द स्थितं ॥ किं न विस्कन

कथाद्

ाब्रू तसंरूपाक्षि विवृक्ष्लं॥ वृक्षलंयदप्रापंकस्मा॥ सख्यायकोटिमविन॥ प्राप्राप्तसिं
ज्मनिपननुसंस्थिलेव॥ अथवज्रधननसंथवाननेववज्रवर्हि सम सम नवलि
हि स्वाक्रूयां मननस पिस्काङ्॥ माहिदेवाना भमान स्ही वा वपंवमकृत्वास त्वा॥ स्वपुलिव
वायननज्ञानलिखांगां कना प्रतिवद्या स्म स्वा॥ स्वकृतिसंसाव वर्हिनाजमान ४॥ कूर्वस्पन
कयाव्रीलेवा माहिलास्संन ॥ अतउवगाल्वि हस्कु विदग्धपूजननिर्मिता पूकि॥ अानस्वा इः
रवद्विधागांसंसानार्हि वपालि नानप्रलयपलना॥ क्ष्मा प्रह्नाया वसू निर्मिता॥ स्कुस्वल ८
स्ता सोलरूथा॥ ठे अतुमू निर्मललालोकथा॥ यननप लहान वा लनाक्षस्पनस्स्वनू पिनथ॥ ओं
श्वन वंज्ञिलायननवपंजिलनाटकदिवां॥ रूपमवशुद्धलक्षमं स्कन्धा पतनधानव ४
तसुहृतिसमप४ समन्तायथामध्रून्॥ भाहं भाह विशुद्धा सूर्य विशुद्धाः नगं नगा विशुद्धा
मानं मानविशुद्धा मह्ना मान॥ ॐ र्षा ॐ र्षा विशुद्धा विशुद्धस्कु वज्र धर्मा थथ॥ विज्ञ पा

नत्तुम्

ति वृक्षाः पंचस्कन्धसमयान्ति ॥ अतः परं वृक्षाणि पञ्चक्षणानि परे वृक्षाः वर्णान्ताः स
र्ववज्रगर्हक्षान्ति ध्यतुष्टाः ॥ अप्रमेयाध्यतलरत्नगुणूवकुलहृद्यना ॥ मगुणूहीनाः सर्वानन्द
हेतिमलसूज्ञानपि ॥ जम्बूद्वीपनाम्नि वृक्षक्षयिनत्रिकालकंशूब्राः ॥ ऊकानाकूतिमस्त्रवयंसेवं
मध्यहवति ॥ त्रिकालमहलनमपवालिविनिः सृतां ॥ धर्माद्यपति विरवात माभिमांहगङ्गस्यपि ॥ न
समध्यानपरंसूक्ष्मपत्रसकाहिकां ॥ नवालिकालिषामिअसूक्ष्मवगर्भव्यवस्थिता ॥ कृष्ट्वक्रिकर्म
संहारमलनूपदादहिता ॥ पत्रेषु दक्ष्याटयववदानिसंस्थितानि वै ॥ मज्ञानांखैवनक्राद्यं
सर्वज्ञालं वाक्षनूहों ॥ तानि वज्रगर्हलक्ष्पापितानास्पदक्षाक्रिकिंवन ॥ ऊकवटनपपंश
वर्तुलनानि पंचानन्दपि समानि मितानि ॥ वज्रावलीपञ्चागतानि प्रतिदलमस्वादि स्याक
ति ॥ त्रमांसभ्रूहुकिंठरकं विद्यतपवमसवम ॥ अस्मादिवर्णैव वर्षिताः पवमस्मनैकवः ॥ अ
कादः सर्ववर्णैः त्रमतार्थनायकयानगवसमहिता ॥ सर्वमज्ञाकुदहिनां ॥ प्यारवेआंगनप

गधमग

दल प्रवृत्तिकायातात्यक्रांग अमृतो कादलवर्तिहस्तक गति कर्म्मानुगामि सिद्धया ॥ या:
सर्व्वास्तु महर्षयाह्वस्तव नसम्पूर्वकामां विना कावर्गां सूक्ष्म ध्यान स्थावर वसानि ष्मांति वर्गा
सकाद यः कश्चित्प्रसनाना म जनानां प्रतिपद्यते ॥ सह स्त्री मञ्च यथाहि तस्मादेव प्रकाश्य
ते नाहि मन्त्र ओं हूं सूर्क सर्व्व धातु [illegible] ॥ विवर्ग्ग थि महात्म्ला धर्म्मावलि लिखित श्रयक
न कश्चि त्रिप्रसाकृ मे: सिद्धा यान्तु व्यवस्थित ॥ अनन्तरमन्त्र स्थानं वाहि मन्त्र वर्ज्जस्व बं: पब १
अन्त ४ परं प्रवक्ष्यामि संपूर्णा ह्वलक्षणं ॥ त कायं पृथिवी हृय्या कर्म्म सुजातु [illegible] ना ॥ म
हाकृपा महामायं विशुद्धान्वय संस्थिता ॥ निर्म्मा[illegible] व कु वेना [illegible] वि श्वसं दल पंकजं ॥ वं कायं
तु जलं हृयं धर्म्म सुजातु मामकी ॥ तेजो प्रतिधि रूपातु दवीव ज कुलाह वा ॥ सुरवा स्थिता धर्म्म
ककतु हृदये ॥ सूर्य्य दलांबु जम कायव जि सूर्वींश्च महास्मुजातु पाण्डु रा ॥ सूर्य्यि तावल याय न द कायुक्
वी प म कुलो ह्वा स्थिता समहाग व के तु ता[illegible] दलपंकजं ॥ उं कायं [illegible] प्रहृ [illegible] वं काय

अपूपा यम्॥ वंकारन् हृषिताश्च सा वकारः॥ अहं क [illegible] वं॥ स्मृ [illegible] समाप्य [illegible] हृपाय स्वरा

वत्तः॥ उकार वंकार [illegible] पं चय मूर्जाहकं [illegible] मिति निपातन अवा व [illegible] समूदाय

हृवक ४॥ वावा मम [illegible] न भव हि म सु मा [illegible] प्रसत्ता हि [illegible] ॥ [illegible] निर्दिष्ट [illegible] महस्

रवा नाथ ४॥ [illegible] यैव [illegible] न मया [illegible] मिति॥ अत्र [illegible] न [illegible] नवा विधि [illegible] ॥ [illegible] वि गत [illegible] भगवान्

कादा [illegible] ॥ संगीतिकारकद [illegible] पानहद: स्यात्॥ [illegible] वा विगत भव वेन यजनव

सादृश्य कवव संगीतिकारक: स्यात्॥ [illegible] काह महं धर्म [illegible] नाह स्वगा [illegible] यूत ४ [illegible] प्रह्ल

यत॥ [illegible] किं यत्र महर् [illegible] ह ना [illegible] कमान्न कन स न [illegible] व वनात्॥ यस्मिं विद [illegible] नंह्ग

वन्नू कुलपूजास्कं मया उकस्मि [illegible] व कालै॥ [illegible] वकु [illegible] न मिगतं॥ [illegible] ना विं [illegible] विसा [illegible] स:

माधि ला॥ हि लं स [illegible] व यति समय: कालो [illegible] ४॥ कालो हि ति [illegible] न ४ स काल [illegible] व इ: कालस्

विंसु कालत उ वव ४॥ कोव [illegible] व न्नासा पूर्वं [illegible] गत: स काल उव्याप्य॥ गतस् [illegible] व वं [illegible] नूपद

नयुक्ता

ह्ः कायरूप्याय कल्पकोर्त्तिकवाक्यसत्यपार्ववदकः कालस्थविंशकागतक्षानवागमनविषाग
ध्वमक्षमानोपलप्यमान॥ तथागतम्धाभक्तिलकृतः विनाप्ततिगधसत्यं॥क्षा स्वावहिना
मध्यमानप्रतियत॥ व तज्जयत्रोपलप्यन्ते नागांवेवविनागांवमिथ्रीहृतमविलं॥ तथाः
गताविनागाप्रभेकः समनसःकृत॥ समनसः सर्व्वहावातां समपश्चकउच्यते॥ तथाग
तेभ्यर्य्यस्यासमग्रस्य तूपस्पयजसः प्रियप४॥ सुवर्ण्णपाथप्रय्यल्पस्यवसर्व्वहगाङ्गतिश्रीति ४ — १०
स्वस्थाहितिरगवान्॥ एवं वे पापिका धर्म्मास्का नहगावनवानिति हगवान्॥ सर्व्वतथाग
तकायवाक्चित्तनिकानपवहृदये वज्रं सेवयाभिलस्यालगावं तथविजहाय तिकिमर्कं
हवति॥ हगवानाह॥ समन्तसर्व्वतथागत विविधापायनविनयजनमत्तां सिहृतवाचिः
स्पर्थमासर्व्वतथागतकायवाक्चित्तहृदयवज्र स्वराचार्यां धर्म्मीदयायांयदाहगवान्वि
हायतदामयाजुतमितिकः॥ तथागतकं भपविहल्पमा॥ प्रज्ञाधीनाथत कुंभाक ः — नयुक्त

ला सुहृद्धवताल सिंहगास फलनयमानमापिन॥४ सहितं हिङ्गुबाज्ञ हीहि सर्व्ववृक्षाणां
सर्व्वहृल्लान मूलकं॥ यलूयमागत सोख्यार्थ हार्म्यलमूप फर्व्वगं॥ ॥ फलपूजा॥४ एवं समयाश्च
केव धूर्यधमर्मादि निस्य संहिता॥४ शुका॥४ संवृक्ष हितं विज्ञनकाय कथवजुपाधान समयाक:
थिता॥ वर्जेशहि: सलां: प्रयाकि संसान पानमिति इवं लकंफ लासाकादसहरुहीनविरु
नप्राप्ताप्रहितं नजन्मनिवृक्षत्वं वावजास त्वंवाप्याश्च वपदमविनष्टं प्राफं यश्वहरानेश्वा वृक्षा
हवकि सहासम्यगु काय लङ्कि का॥४॥ लकुसृविनमाध्र नाष्ट्र विवोप्रयाति संश्लिष्टाविहेन सुं
प्रयक्षाकसं क्लिष्टं हवतीनस्तु साधक॥४॥ श्रीमान्लवयगिशुद्धविरु: प्रह्लापाप्यप्र महेन
नन यथाहं प्राफं शुभं सवरनालकं लक्षं॥ प्रह्लापायविकावंगग गाहमं त्रिभुवनालाकन
लक्षं रलं क्षं सर्व्वगानसर्व्व हेतुप्रप्रमाधीनं विंनासनिविव लाकस्वपरार्थ करासिस्त्राणं॥
ऋृतिश्रीसर्व्वतथागत कायमाक्षिल्कवकानस्याकिनहसगुकरमाउँसंप्रूगहवकल्पना

॥ चतुर्थः पटलः ४॥ ॥अथातः संप्रवक्ष्यामि साधकानां हिताय वै॥ सिध्यति विहितव्या
यंत्र विधिं वापि प्रकथ्यते॥ वसुधं हस्तपथथागी प्रथमं देवतात्मकः॥ हूं वा जीकृत्य पद्मेन
अथा॥ पश्चान् महुलमालिख्य कुण्डयान्त्र विजानं दः णे वा विसलग हस्व शून्यमसु लपामगव
हुय कमसुलं॥ स्थिमन नजस्मा लिखेत्॥ अथवा मध्ये मन्तुप वेर्च नल समयो वृक्षे अथवा गंसु
लकादिहि॥ त्रिहस्तं मण्डुलं कर्पूर यामुस्त्रा॥ लिकं वतु॥ वियामन्त्र वस्तुवा दिव्याः पंवकुले
हवा॥ गमक्रमा गर्तेन सार्धलाहिषि कायप्यवृक्ष ४॥ प्रथमं सर्ववृक्षानां मण्डुलं गुणकाह ११
मा॥ अनन्ता स्नाक धास्त्री भगमहं तथापि धीमता॥ स्वाधिष्ठानपदं प्राप्य समयकोतिही
मा॥ मन्त्रमार्गे तथा श्रीका सम्बुद्धे ४ पनसार्थन ४॥ वज्रसत्वादि देवानां समया ह्रयति क्रमः
अथ नार्थ सर्वपत्लना रिपकार्थ ऊिना लठ॥ उयस्पर्थ यथा पागां वज्रा वार्यगुरुस्य दृष्टि मगुस्क
अथ वामा नैव वक्तुरागिनी पूजी वहागिस यीका॥ आसं संभयक्तां लपगां साधनं कृ

पूजा॥ ॥ब्रह्मानन्दस्साक्षात्सर्व्वहृद्वर्त्तिका विद्या॥ केश्याम्हंस्त्वं दृष्टी या सूर्य्यस्याश्व विशेषितावृद्ध
४॥ क्षिप्रज्ञयत्वात्समर्थत्वात्तज्ञकी समर्थवज्रकी समर्थत्वाच्च श्रुतिका उक्ता॥ मती कुलज्ञा समर्थत्वात्॥
हीनठदाता॥ शिल्पिका समर्थत्वात्॥ स्वगतस्य तां न तूमस्य॥ विपुलनीतस्वाङ्कं नान्तकां सहन्नमं
समयात्वात्सह निपुणत्मात्वस्वंमन्त्रमन्त्रस्त्वं॥ ज्ञाता: कन्या: कथिता॥ क्षितिरुद्रवनार्थ्यं ग्रामाध
केन्द्रान्तं ज्ञाहिः सर्व्वसिद्धिर्हेवतितः॥ कुलक्रमसेवकयथवार्थ्यकार्य्ययथालक्ष्यादीतत्वा॥ द्विका
नष्टेववा॥ नवयौवनसंपन्नरूपा॥ पाकं नांसस्त्राव तां॥ मां विद्यां संगृह्य त्रिभुवनगामसन्तक्रमसद
हं लक्ष्य॥ कथायस्तु हस्तमन्त्र तत्त्वक्रमं सर्व्वगंहं वा ज्ञथमार्द्धसिद्धिका तत्वं तथार्द्धविडं
यांसद्धिविरुद्धं नानाकवलक्रमं चैव कुण्डलकोटिसूत्रात्र्याहानन्तपूर्वकंकलौ पूर्वकाउक्रम
सिद्धिंपूर्वदाह्यन्वयात्॥ भाविता॥ विद्यासर्ग्गपद्मवनहि॥ तत्स्वस्ति विद्याध्वनसहन्त्या॥ घष्ठा॥ सर्व्वद
नकस्त्रश्रेष्ठेषपिहाति वव यस्य॥ गाथमालादिसत्कारैः कौलपूजादि विस्मृते॥ क्रमसंपूज

मवनं मूर्जयाम्यहं साधकानां॥ शिष्य हृमासमागच्छ प्रभवा ज्ञानू समतुल्यं॥ त्र्यध्व षथ्य क्षणक्षणं
क्षणं भूलोकेन नमस्कृतं लिखान नमस्कृ भूतपकारार्हं सर्व संकल्प वर्ज्जितं॥ सर्व ब्रह्मा मसं देह ह्म
गथाग न मूर्त्तं नमोस्तु ते॥ अज मादहृ हा न्न विष्णु दशु धर्म ग्रार्थ छभक॥ धर्म धातु समं सत्त्व
जगत् त्वं नमोस्तु ते॥ संबुद्धो बोधिसत्त्वा श्च वन्दितु पारमिताद्यु मध्य॥ संह वंक्ति सत्त्वना
थ बोधि चित्त नमोस्तु ते॥ वज्र पर्यंक सप्तमान्न स्कन्ध स्कन्ध बज्रंगगा संशेषस्तुक मितं
सर्व जगद्धीव नमोस्तु ते॥ विज्ञान मतितिविवाहूपा जगद्धि सर्व सिद्धय॥ ज्ञानाम्ब्रक वः १२
श्रीमान्बुद्ध पुत्र नमोस्तु ते॥ ह्रतुं मनुजवंदन त्वं त्वं ब्रूसूला वाहुं गुणं ह्रत्व॥ वज्रा हिषक
ण सर्व ह्रु प्रसादं कुरू सर्वथा॥ नाथ सर्व बुद्धानां दर्शनं वज्र धर्मितो॥ प्रथम श्री
चित्त वज्र मनथ नाथ प्रसीदमापह्व स्वाप्नं पूजं मे ज्ञानात्मामि विश्व संगति॥ करूणा गुरुस
कुरु दयां नाथ ससाव गति निर्ज्जितं॥ वज्रावार्य स्तु मे श्रीमान्साद कं पाहि तामयः

समूसाथ कृपा लिषी आहूयगतमनतुहे ॥ पेथे कामयुनाकी छे विकानविकताझले ॥
गगिनी यागसं मूकंचक्ठाक दाहुना ॥ पूष्यथूपा कूह पंस्रक्षू नामादसंकूले ॥ वज्रसे
स्त्रादिध्वानांमतुहू पनमाहूनें ॥ मूजायागांकक ४ कूला वार्य्यः सहूणभकूम ४ ॥ मिंवरेधे
पप्रहातेुवांधिविकूंज्ञितालजें ॥ उस्तूनवामहे थ्रूर्गर्भ कामंगल गीतिहि ४ ॥ मूज्ञयू
कृंतनः लिषीमहिपिंवकूलेगु ४ ॥ दत्वाहिषीकसंज्ञतमा वार्य्य ४ पनमंण्व वमादया
वेसमयंचमध्यदिव्यप्रकृतिसंकूनास्तिहावकंसकपूर्नवकवन्दनयाङितो ॥ कूनूभ
मूसमायूकंपथेसं ॥ विकूसंहुवं ॥ २ दलेसमपसंमनेसपूबे: समूजाहनें ॥ जका
निमिलांविद्या ॥ सिह्लाकपूर्वरा ॥ बिना ॥ कावसेवयमें आगीयावकूक्रवतीहवतूस
गायासंमूखंवंकीउपायसयमूखंतथा ॥ हूवयायलेमूहूनक्षिघेवक्रेतिपायनू
कानिकवंचनत्रेचसमनसंलिषि तभवबं ॥ खसंवथंहचतूह्लानंपयसंवि क्लिव

ह्रीं तं॥ रवं समसं वियज्ञं गुह्यं रावा हावा सकंपतं॥ प्रज्ञापाय व्याति मिश्रं यागा विना गा विमि
श्रितं॥ सत्रवक्षा लिना प्रागं सत्रवपद माकूल॥ सूक्ष्मव्यापि सत्रवा क्षोस त्रव पूज्ञ हल्लानी
नथा॥ ॥ श्रीहेरूक कलि स्नेगय तं॥ हाना लावाक इहू नो क्षूल्पा लियालि नाति व॥ आनन्दं प्रथमं वी
रंपरमानन्दं तु याति नी॥ सहजानन्द स्पसकं तं ब्रूरवापा य सर्वर्वी तं॥ प्रथमानन्द
मात्रं तु परमानन्दं सिसं ख्य॥ ४ तृतीया विरमाख्यं तु चतुर्थ सहजं स्मृतं॥ तत्वा हि षकं १२
चतुर्विधं प्रथमं कलशाहि षकं द्वितीयं गुह्याहि षकं॥ ४ प्रज्ञाज्ञानं तृतीयं तु चतुर्थ व
तथा पुनः॥ वाक्षि विलासा हि षकं नानि स्या सवा कलश॥ ४॥ भूतन्नु वै तनाय ध्याल्से व
कोयत्सूलवे॥ आवाधि सहुपर्यं तं दिवसं व क्रस मनन कल॥ ४॥ प्रवयस मसाग्रं धर्मा व
क्रमनत्कुलवं॥ प्रज्ञापाय स्वयूपात्मा विकारामनाति वि वाच्चके॥ ४॥ आखि तो॥ विगमास्तं ग॥ ४॥ स गुरुष
र्वार्थ पूर्ण सांप्रतं॥ कल्याणं वमहाआनाक्रुनाती विस्समाकुलाकु॥ नाविनाहं तयानाथ

कृष्णपक्षे सहस्रकेन तु॥ निवृत्तमिव लाभानं जानन्युक्षत्यो दप्रसादतः ४॥ सम्यक् श्रोतव्य मकां
का कुलानु॥ नाथ गोहं त्वया नाथ कृष्णपक्षे सहस्रकेन तु॥ निवृत्तमिव लाभानं जानन्युक्ष
त्यादप्रसादतः॥ सर्वथा श्रोतव्य मकां कां प्रहीनास सर्ववासना॥ निपक्षपाद यार्ह फलप्रहर्षा सहस्र
लं लाभनाश॥ यद्यदिष्टं तवं जवां नलेस्व निवदयम्॥ निनव ग्रह विकृतगुरु पापि कृप
लु तम्॥ क्षिप्र भाग हरार्थाय संप्रक्षा न छिनायब नतः॥ प्रदमापानां सपूजायदला वगुरु दर्की
कि तम्॥ श्रोत कृष्णात सहस्रं यं हा निविविधानि ब॥ वस्त्र पूरम मांत देव गाज वाजि वा कुसुम व
वा॥ कनकस्य हस्तलकटके कस्थि अंगुलि केः सम॥ यहृपाप विनंश्रोतव्य श्रीत स्वरूपकं हृहितापि
वा॥ दानं संदाहीतः मितो व्या प्रलिपस्तुं निवेदयन्॥ स्नानन सर्व ह्यांवन प्रक्षिप स्थ निवदयन्
अघ्य प्रकृति दाशाहं समर्पितं मया तव॥ एवं विज्ञाय यवस्य: सुणा फा हिमका स्पद गाकू
पूना सर्व पूजा नां सुप्रसादा ममांति कं॥ यथार्थ तन्नतु नावाध्यि प्रहा वा स्ताध्य या स्याहं॥ निघाद:

साधवमाहं॥ निषाद्य मद्यपाम्यनस्तु यां वा क्षोपदं सर्वाग्रपूजिनां॥ मनेव स्तु पापि षाम्मिस
त्वांस्ती एव वर्द्धिन:॥ इत्याशिषकाविधिवतू:॥ शिष्याधिमुक्तिं मन नसाव गाम्य॥ उत्तवगं
हीय नयाविमूकूधावे वद्याद॥ ऐषकनवतं य:संप्राप्ता हिंसकथप्रवनकूलि शल्दू
लत्तातुल्यसमावक्तं लागाकृत्र सा श्रीयइदकृति॥ महाद्याधिविक्राशिषक:॥ तच्छानूत्रुमि
लाकी इविनैयिपूजया नम्र सत्त्र अव वृक्षिषा॥ वाक्षवाना प्याविकुंचिपूलमिहं वलत्रिमर्म
लस्तुत्वयागी॥ ॥इति श्री सर्वे कथानेकाय का [illegible] १४
सत्यातैजाधिविक्राशिषका नाम [illegible]॥ ॥अथात:संप्रवक्ष्यामीग्रहापा
यार्थलाव ना॥ पत्रार्थक्षव्रवीर्या क्षं हाय्रका नांहिनामवे॥ यांविहा श्रनसंसार घानस्त्र
ववाति क्षो॥ निर्वाटाव नतिष्ठन्ति भामित्तस्वार्थ मात्रका म्म स्या प्रकर्षयपर्धके वृक्षा
नामनमलाहु काहा लिवांधि विनिर्मुक्ता ज्ञाता वाधि यनूरूता॥ पवे रुक्त न्धादिकानं धर्मा

त्रादिक्रमक्रियानकं॥ कदलीवत्सविग्रज्ञाने धर्मध्यानमुपसमासमा॥ नशून्यरूपभावनां कुर्या
नापि वाशून्यभावनां॥ नशून्यं संस्पृशेद्ध्यानी न वाशून्यमपि विस्पृशेत्॥ (निर्विकल्प) शून्यशून्य
मार्गाहि ग्राह्यं न लयभावनां॥ यविस्मावसंकल्पकं सर्वं सांदनंदं मंसृजेत्॥ उदयग्राह्य
विस्पाग विमुक्तोमुक्तोऽस्मद्ध॥ मूढसिद्धांव संकल्पकस्माद्नवसं स्पृशेत्॥ निर्विकल्पानिसंक
निष्काहमानकल्पष॥ मूर्च्छनकल्पनामुक्तो ध्यानवहावयम्॥ नवापिसत्ववेसर्वत्र
र्वं कर्तृभावना॥ सर्वस्वात्मास्ति नास्तीति न देवंपविकल्पयेत्॥ निष्प्रपंचो स्वरूपं हं पु
रुषं निवप्रकीर्णकं॥ विकारसिद्धिर्वा समस्वार्थकर्तृकृपा॥ निवातावं महादृपा ग फल
नापिमासा र्थगता समामनं भूथा॥ नमत सवकष्ट कश्चि क्षापिका विद्धि भावना भावनीयं न
चैवास्मि खवास्य नखभावना॥ नवकापि क्रिया मात्र लोक व्यंने व विद्यते॥ कर्महि लाकू वि
ति सक्लापयमार्थ विहावना न वाछ भाध कश्चि कश्चिन्न नवकाव्यस सर्पक ष नप त्रि हार्थ
पंदप्राकानिवा लक्षा ४

सङ्गि किंश्चि त्सम्पर्ककथा नपवि हार्य्य सङ्गिकिञ्चिन् अस्कंन तथा ग्रविश्वती॥ बान्धर्व्व नगाथा
पमंमायासनी विहल्लिहां॥ हवि वज्र पूर्विन्तु। त्वंख प्रकीत वन्ह भ्यतो॥ छ भ्यतेस्य भूतवेव
न थमा मथमामाया हि सर्व्वतथ॥ नथा पत्ल हग का वितर्द्धस्य ग्नाह धहिलि तिः॥ यथा कुमावत्र पीकोउ
हयत्रियसी लतं॥ उत्पत्तिमी लतं॥ हगालि ॐ प्रतिष्ठाप्य वृह्मान्नस्य ति तावता॥ किमपपूर्
यतंह्लानमा दिमध्यान्त विमर्श्मिलं॥ खुसंव थं हितग्रह्लानं वक्तुं नानाग्रभाक ॥ पभ्यकांसर्व्व
पाति गृह्यकां शवद्भवव॥ तत्तानि हत्तमं वापि प्राभृतं वि विभ्रनसां॥ कूर्व्व तांसर्व्व कर्म्मनि १२
नानपत्रग्रानवानसां॥ ग्रुरुत्समंधा गोनीयामभ्रजा यतंगत्व वदिनां॥ ग्रनदह्य मिस्कुकं वाधिविस्
मिदंयवं॥ वक्तुश्री वक्तु सद्ग्यसर्वत्वी धाधिभवव॥ प्रह्ल पावमिता श्वैपाहमैपा वमिकाम:
पी॥ सुमसवयमवाकासर्व्व व्याग्रहत्व ना॥ श्रुत्रेवसर्व्वमसेत्त्रं गुगहिले नवलासकं॥ श्रुनन्कावी: नप्पञ्च
विप्रलापसम्भूञा: श्रावकादय:॥ तत्ववलावयधीरी हावाहावविनिर्मुक्तं तावयाहि ध्यंतल्

पू॥ अ॥ अथ दानवि धर्मा संक्रमविम ल्वाह्व॥ अत्र न्तका स्क स्य ज्ञायक श्री मक्कं: सोपानायु मा ४॥
अनन्य सर्व कल्प कमा हि ल लं प्रहं कृतां म कू न तिस्र लंब॥ नाग मदि हर्ष बिम ला नु लेपं विलसि
धू स्यान मू वाव वछि॥ प्रयाह्व क ल्प न पों विमू क्त प्र हीन: नाग मदिम त प्रलपं॥ अर्कं नव
अह क मू यम ला स्कदव निर्घी गवनं ज गम दा॥ अनथ ना न्य ल्यव म फि कि वि न्नि मि ल ल नं व
ह्ह: रवना॥ ध॥ अनक सो व्याट्य हेतु लं मू मू क धैंना स्कि न न ४॥ पर्वंव मू भब इ: रव क
मव ह्मकक्के॥ सवृ ह्म सलो व्य नवा प्रु कामे ४ वि ल्लं स्कि वी ह स्यां वि वा र्थ य ल्वा कू स्य स्व ला वा
कि य गां स्व हाव ४॥ याव ल स्या न म: पचन युरू भ नूछं म नो अ ल्मि नां नाव हू ४ रव म न न्क कं
वि व हि न स्या कृ नयाव कू न ४॥ नाव लो व्य मू दा न म प्र ति सू म न का स पर्य मा र्थ व क ४॥ का यं
ल कू न य ल्ह यं स वि पू ला ज क्रि कि न लं गा निं॥ एवं न रव पा गी याना स्प नि थ यं क ला अनु ह्लाक
४॥ स्व मू म य ह्ल ह्ला वं ला फूकू गा फिं क व मू जां म कं प्र ति मा हं का न र्गाव ना स म थे ४॥ स्यात्मा

नयमा

स्यासिद्धि गत केः ध्याहृ॥ वृक्षवल्लिस्थ लक्ष्मादि कि॥ लक्रंसाङ्काहृ कर्ल्हं वां कर्ल्हं व्याः ध्वम्हः
दव गम्यासाः॥ उस्य नंन लूक्ष्कं छिरु व नमाकाभव हवति॥ सर्व स्प्र्व तः संस्पक्ष प्रापयद
क्षमन यायागन्निस्थ॥ अूयास्यति दिवानिशं स्प्र्व दनमात्र कं दकुः॥ गिवि मिरवश मि
वनिलयप ध्रायान्यथवा नगमयानतै वा॥ विक नस्पर्वस्छ नस्वगहया विकुन्ताठिनु विंत
॥ सर्वह्निः सस्क विकमम वांम क्षतुमस्प यतल्कने॥ गत्रस्क नकह्लाः साह्नाहावनाक्रूतृन॥ प्र ७८
क्षापायनन विनां वृक्ष लवेच लल्पेन साक्रांहृ॥ फ स्पाह्र ह्लांसं लायमप क्ष्माक्षिप्रदादि वांः
नर्ह्दाश्वैवे कामकामूत्राहिसं पूकः॥ विना सिद्धि॥ ह्रानक्षत्र लक्तिसस्यायाक्ष्याथ उम
ज्ञा ४॥ भाहृत्य स्पम यमूत्रा छ्ज क्ष्वा कामस्प दामहाम्त्रा॥ ॐ ह्रीं ध्यावक र्मा मृजासक ताया कतुक
वलां वियावि विधं मा गिनीप्याद य हृगछियां सं विस्पन त्रसाकाइयावपि दवनामयां॥
भाहृत स्याकं कृष्ण ४ कायसवायम लक्याति कर्मा विफदर्थ प्रकव तं पव हिय हि कि ना हव

लि॥ प्रत्यु श्वानि व भाक्रम श्मा ज्ञ गूर्ष्ण वा ग्रस्मन यव मङ्डापया याठ कार्या : सम्पत्तो वाना थ सिद्धि:
तास्त न लिंग दा ही गुरु वल्लु ज नम (श्व सिद्धि मा हि या मिष्ठ्व व नि मा तं ग सप श्वा यो वि क्षा श्रेसा कु ट॥
सा ज्ञा घ पु न ग्रु या भा या गी य त्वत्त या गमि ह सा यु क्ष स्वा क्रा प्रह्ला प्रा प्ता कि र्थि एम रु र्स त्स गा
नं न क्रश्रा हम वा हि या गी य दि पञ्च घ व सा र्ग ति सा क्रा न॥ प्रा नि दिव सु प्रा कि मा स व र्षा त्सा न प
कृ नि ल व श्रि॥ समय कृ थी व जा य ग प्र मा द या म स्र वा धि स त्व सा॥ सु भ पा क्रा प नं दे वा पू
नन्न कन न स त्व यं वि द ष्या॥ न सा स्मन य हृ न सम्चन मू कू न न त्व नि ष्ठ न मू ज्ञा या ग ॥ का
र्वा च ह स्था पा य ड थे म त्र नं श्रे र्वा॥ ए वं वृ क्षा सम्प क्षू पु ठ या रा ग न फि स्स मू प वि श्व दा व य गि
पदम विन्नू त्रि तु व न भ का प्र वू प्या ग॥ ॥ ॐ नि श्री सु वी न [illegible] का मे वा त्रि
[illegible] त्रा यो र्थ हा व ना म पू न पठ ल॥ ॥ अथ न ठ सं प्र व
क्रा सि स र्व व क वि कू र्वि गं॥ श्री व क्रा स वादि द वा गां सद्वी गा वि श्व द र्ग नं पा ह स्य पव मत्र मा स

गधामा

र्वीतत्न्यन्तसाध्यत॥ विविकठुवनवा॥पिसाध्यानादिशूवांपूत्र ४॥सर्वंगाविष्यमूढाग्र
सर्वगाविष्णुसर्वेषु ४सर्वगाविष्वकार्यानिसाधयश्रेयथअहत्वं॥मशुलंसर्वगतथता
गानांशून्यगहुानभवव॥श्रीधमांसाधनंसर्वसाम्यानांदवतोष्टवा॥किमहंकथयि
ष्यामिश्रुवि स्पंवूहनाटक॥शावनादेवतामांगाज्ञाप्यामतविधिक्रमं॥पटवाप्रकि
र्मनतायिसर्वविहिविशूर्विनो॥कथितंश्रमया तेतसत्वानांहितकाम्यया॥क्तलपंव
विश्वप्राकृत्रकमवशून्यवाक्रिशा॥वजरार्हडवाव कथयतु प्रसादनसहासर्वतस
प्रज्ञा॥डस्तहिव र्हनपेश्वरतज्ञसर्वक्ततविधिक्रमं॥ज्ञापमक्रविधानश्रेयनोक्षि
निसाध्यको४॥हमवानाहा॥प्रथमंगावयनाद्विःद्वितीयकनूलाहाव यतु॥तृतीयतु
सूहितासूपकासर्व(भावनत॥पूजनपिशून्यताथांद्विं॥द्विती यंवीतसुंहव॥तृतीयवि
श्वविश्वलिवकुर्थनासत्तकृता॥शून्यतशून्यंपवनाविहायनसिंबवो॥स्वकदिहाव-

१७

गगुरु

परवंमहवंसर्यमगुलं॥गश्रेवहृंछनिरखेवप्रह्लापायातकंपयं॥कक्ववर्न्हंमहावीर

हंकावक्रसम्हवं॥वजवनकतथसहंगलंलावयसूनश॥गसजिनतंहक्षघघाल

कंतुलावयक्रू॥वजजन्ममहावीरनीनपकजसत्रिरं॥अथवाजीलानूभएवलावपर

छयारवल॥श्रीत्रिएघावकंहभावकजन्ममहाकपं॥पूजयदक्षदवीहिक्षर्मिलवधा

विहिश॥गोचीमगलंकनंपाकिवोति:माह्गुराजंनी॥धकाहीवनहकाव्हेवकंव

किंघमसनी॥पूक्षसीगन्धहकावभवनीवशधनीधकथा॥वगुअलीतजमनूकंवादयंकू

नाहि:पूजाविधिविक्षवे:सपूछगप्रतुश॥गनछपदविनीर्मफेसर्वधर्मालमकंदव

कृ॥वंदालिकालीमार्कुहवीजमक्षगानंवहि॥सजवलुलमिशाकू॥परमानन्दस्व

रावकं॥विमलवनोस्वदहसागरादामगुलकूदना॥संहार्षनयकुद्रयधागीद्वथ

सकाहवदिति रववधुमणगानंविणुसर्वसमगुलमरूमं॥नमाहैकावजंनीलाव

गथाग

ल हूं स र्वाकौलेन हृ पिगं ॥ द्विभुज मेक वक्त्रं त्रिनेत्रं पिंगलार्ध्वकेशं च ॥ कृष्ण घण्टि
घिन कृष्ण वर्षाक्षि सिद्धे वज्रा ॥ क्रां ना वा भैव कृष्ण खङ्ग कपालं वापि वापि वामक ग दक्षि
ण कृष्ण वज्र हूंकारे श्रावण मक ॥ भ्रम श्मान कृत नैलोच कृष्ण दवी हि वाहन ग त
वसं लाय ये आगी सर्व याग मनकं वज्रं ॥ स त्वं हृगा वा स्था गी श्रीक सखु कृथ्मगन:
ज्ञानरूप धन्वाहन्वा स्व हृदयाह्वि वाजिन ॥ वज्र वानन्द खेला शाहि वज्र मानविशुद्धि १८
ग ॥ पूर्वोक मण्डल वज्र हूं हूंकार सम्फुं वं ॥ वामे कपालं सम्फुं वं ॥ वामक पालं द्वा
मृग नांच कृत पूनिमं ॥ दक्षिणे क्षिविव खड्गं हृदय स्थापि हृदयं कर्यां ॥ रूप वज्र गाले स्व
मालिं गीत विग्रहं ॥ प्रज्ञा वज्र वा वाहिं हृगव रूपिणी ॥ हावय पदित ॥ प्रथमं हावयं कृष्ण गगुम
ला कर्लिहि का या तुनि क्षत्रं ॥ वज्र मण्डल मध्य स्थं हूं कालंगत विहव यहू ॥ हावय देव
कारूप त्रिमूर्त व षड्भुजं तथा ॥ प्रथम मसित वक्त्रं दक्षि ण तु शित गांकं ॥ वामे नक स

त्रिरं त्रिनत्रिरिःप्य रूपि दां॥ सर्वालंकारसंपूर्णं कपालासनसुस्थितां॥ विरूपअगु
रूवकुककपालीगस्यपालिनं॥ धनुर्बाणधरं चैव वज्रघण्टाधरं तथा॥ प्रथमं कालं
वज्रंरूवति: पत्रिशूलं तथा॥ प्रह्लामादिसितांश्रीमान् ऊर्ध्वकेशमण्डितं॥ रूपमंवेव
कर्णचायं पद्मीकं सिद्धिमूलमां वज्रयोगिनी धातका वज्रविनायके वज्रा॥ वज्रनागीरू
मीयाव वज्रसोमावक्रथिका॥ पचैश्मी वज्रपक्षाच्च घष्ठि: ववज्रदाकिनी॥ युफमीगरू
वज्रातुपृथिवीवजातुभूतमी॥ ॥ श्रीश्री [illegible]
[illegible] ॥ ४॥ ॥
[illegible] ॥ [illegible] काहि [illegible]
नवकाष्ठादिवज्रस्यावाक्य निमिक्तु कानयन॥ कर्मावर्णादिकजस्यासंरूपावयच्छिवरूम
४॥ ॥ ॐ नाय रुनामस्वाहा॥ ॥ अस्यावीजं तु सर्वेषां प्रदावारूपञ्जनस्यायाजम्पम

स्थानामकुलकाकांकुकावयमः॥ सूमनाह्लनपूस्यनमाह्लनूपेकुकावयमः॥ समाहवदि
गकुं नरकावक्ष निर्याजय्यमः॥ हावयदकान्तिनांकुयं समृकंज हवनः॥ अनाथकुहलानां
मायाहावकुलावयमः॥ मकु मेकुलमक्षहकुपमासनं विविधःयमः॥ हावयदासदहकु
सर्वसिद्धिप्रदायिका॥ ॥ॐ नायस्वाहा॥ शिवः॥ ॐ कुमास्वाहा॥ वक्त्रः॥ ॐ यस्वाहा॥ नासा
ॐ कुस्वाहा॥ कर्णः॥ ॐ यस्वाहा॥ शिकायां ॐ नावती॥ नेत्रयो॥ चतुर्गांभवधाने स्थांविलं
मदार्यतायिका॥ हिकुला सलपर्षकासर्वारहवनादहिना॥ अरमहकुंकुसर्वमांवास
उरलमिवापनं॥ क्षाधयलमेदवानां मकुयाजरवाहिना॥ ॥ॐ फुलफुल स्वाहा॥
सर्वकर्मिकमन्त्रसिद्धि॥ वधवंयाजगकुलां श्रीगादिविषसगमिनां॥ फलं विविध
मंगाह्यजपमन्त्रविनाशनं॥ तत्रमकुप्रयाजययमः॥ मकुप्रह्लसम श्रीविवक्रांहिविना
शवयमः॥ दिवावकुमिदं नकाशयंसर्वत्रमुयतः॥ ॐ नितकाहर्वसांयायनवानिवृत

गुथमा

१९

नयुक्त

ना॥ सूर्य्यमण्डलं संचिन्त्य कालिनकिवमासलिहां। नम्यमध्यक्ली: कांचनकवर्ण्हं समप्रहं ककां
हां कप्पदालीा नमकवक्रुं वकुर्गुं गं॥ जवपलूहस्कां वडसलां॥ कूशप्रवीनी॥ अप्पा: साधनमात्र
दात्रैलाक्क वणमानयकूं॥ लकलोकनवाङा नेष्ठुडा लोकमयपने नकुपशुवशुपकाद्दय वाको
घासूपलकणवासूवान्त लकद्वयन द्वाब्वमतनेकनमक्रिदा॥ अष्टदलमिदं वक्रुंसिनव:
र्द्धे सूत्रआरुनं॥ समनतानूपसखिंप्रछेधकुकलहावकन:॥ पूर्व्वलक्रुणसंयुकं पूर्व्वकलपुसाथ
यकू॥ हावयदस्माव हूंकारं कतृवसंख्याव यकाहावयद्दवलानूपं त्रिमूखंपडुकं कथा॥ प्रथमं
अष्टिकं वक्रुं पक्ली ठकुसिन शांकं॥ वासनकेसों नेहं॥ त्रिनत्रं दिव्यानूपिणं॥ सर्वलकावसंपूर्ण्ह
कपालासनसंस्थितं॥ विम्डवक्रुं कुंव कपालं गहस्कणा॥ दिवां नेत्रवासा धवलवेववक्रु यष्ठ
नथेवव॥ प्रथमं ज्ञालावज्रहयकूजीयत्रिमूर्तंनथा॥ प्रहस्पा लिगिनं॥ श्रीमान्तूडठनमूकूठम
ठितं॥ स्हलवधूसमेतं पेवासिजालामन्तकप्पा॥ श्रीमानं हावयकूत्र हाम ख्मुसाधकाठ॥

कामाक्ष्यां विद्या वि ख्यां संयुक्तं द्रवते॥ दत्तात्रयां उ लिख द्रव्य: कपाला सन्न मुद्रिकाः॥४॥ किंचित्

पाम ना वमाया वक्र च क्रौ चतु ठकाः॥ प्रथम मालिख त्रिया धनुर्बाण धनी शूला॥ कपालं शुक्र

ग॥श्र॥ संपूर्णं अक्ष गं गच्छ पा लि नां॥ द्वितीयं च शूल हस्त म तु नक पूर्णं कपा लं च वज्र पाश

तथैव वा॥ तृतीयं वेक्ष पा लि च मालि पूर्णं कपाल वज्र च तन्तथैव च॥ चतुर्थ वज्र ह

स्ता च कपा लं वामपा लि नां॥ कुसुमैः त्रिपटाक च॥ पंचमे नीद शुल्का च कपा लं गच्छ पा

लिनां॥ डमरुं डमरू कं तथा॥ षष्ठस्यां स्व पा लि ना कपालं मद्दं पूर्णं कपा लं पंचशू २०

न था॥ सप्तमी हस्तिक्र हस्ता तु गं र च वज्र गता मूर्धा॥ कपालं न र सं पूर्णं र समा ना सूमा

लि नक॥ ॥अष्टमीक ल ग ह स्त च व वज्र प तन्तथैव च॥ कपालं नर च मं स

त्रिनं डुवपूरितं॥ कनायांतु लिखद्देवी कर्हिं कायां महा सूव ४॥ वाया लिखु नि किंतालि कतुक

ग्रा लिख तु ख्म तुल॥ वाल पा लं समा लिख्य देवी वज्रा कृशी तथा॥ वज्र पा गं तथा स्रह पं

वज्रघण्टाधरं वज्रा॥ ह्रांवज्रहस्ताय स्फुरत्प्रभाकाश्यपसमाय हूं॥ हूंकारं कर्कशं स्वाहा॥ ॐकारं
स्वरहृदितं॥ ह्रां४ कारं वाक्यं संयुक्तं शुद्धस्फटिकसन्निभं॥ क्रीं४ कारं मन्त्रसंभोगक्षस्वाहा॥ कारं न
थैवव॥ ह्रांपमन्त्रं स्मृद्धिं संभ्रमन्तेवाक्यं ऋ्वां हृ॥ क्रीं४ कारं दवतानां कुण्डलां त्रिविना सह
न४॥ वज्रांकुशना युक्तं वज्रपूजां स्वरूपन४॥ सूक्ष्मदिव्यं युक्तं नाद पालमस्तकं ननाळगा नवि
नयं वज्रं हृस्वत्वं वेववसाधक४॥ ॐवज्रे गन्धकूं कारं नथ क्रीं४ कारं भवबाधकं वज्रकं प
अर्कं नाभिकालाहृदकं या४ पूजयन्ति स्व पूर्वे प्र ज्ञामानं प्रज्ज्वलकर्माणि॥ ॥ॐ प्रह्लमह
प्रह्लस्वाहा॥ ॥ह्रांवज्रहस्तावलंबनयामिकालासनकच्छा॥ वज्रमण्डलामध्यस्थं प्रह्लनामि
ह निर्मलं॥ वितुञ्जासत्त्वपर्यंकासर्वाहननहृषिता॥ भिनवर्णं प्रलादिनां प्रह्लाभिनाति वि
रावयन्॥ नापितमस्य वीजस्य प्रह्लमापि विवर्द्धते॥ जत्रकुलिवमनानां प्रह्लावर्द्धनयाग
न४॥ वज्रमण्डलमध्यस्थं मन्त्रं नांस्पविनाशनं॥ कपालामनमध्यस्थं भकवक्त्रं वज्रउं ॐ व

नथामा

ङ्ग घ ङ्कां ववं सो मां कपालं पाणां म व वा॥ विसं स्फु विमं सनं तैन ड्या ला मा ला कुलं क थाः॥ वं कन
ङ्क मं या॥ ॥लन हां व यं ड्ढ स क्तृ वं॥ पी न व र्द्धं न हा तें ङं कं फ कां वत्न स म प्र हं॥ कपाला स न म
क्ष्म स्फुं भ क व क्रां व व जुं तुं ड्गां॥ न ला क्रें मं पं वं वी वं कपाल पा णं न श्रे व व थ ञ्ज न न क्रमं यां॥
॥लन हा व प त्प स्र व ड्रि तं॥ ज कृ व क्रं व स्तु ह स्कं प स्त्र ना ग स म प्र लं॥ धि न वी न्न ध न वी नं कपा
ल स न म ह्रि नं॥ पञ्च पा ण धं न वे व सं द्वा ह न ल ह षिं नं॥ ज नै न क्र मं यां॥ या न स्र मा न र व पा
णि नं॥ कपाला स न म क्ष्म स्फु भ का व क्रं व जुं डुं क्रां॥ कपालं व ज्र घ ण्टा व ज्र क्रू णां स व्य स य नं॥
ह यि न वे इ स्कं सा न्नि ह स द्वा ह्रुं फा लं ह षिं नं॥ र व ध्व तु स ध्वं तुं गा क वे व विं क मं ख ड्ग सं तु लं
म त्र स ध्व गा नं वी जं तुं का नं लो व ना क्रं ति॥ कपाला स न म ध्व स्फुं तु जे न ह्रा विर ह षिं नं॥ व क्र ह
स्कं ध न वी न व ज घ ण्टा न श्रे व वा॥ पा णा र व श्रे कपालं व व न गं षि व ड्रि न यां॥ सु र्व लं का न सं
पूर्व हा न नू पू व ह षिं नं॥ सि त व र्द्ध श्मा ला यं कपाल स प्रा न थाः॥ र व ध्व तु स ध्व गा न वी

२१

नयुक्ष

संपूर्णं वज्रमण्डलं ॥ कपालानां नमश्चस्कं नीलवर्णं महाकालं ॥ त्रिनेत्रं भैरवं कवक्त्रं वकपाल
मालाविभूषितं ॥ धनुर्बाणधरं चैव जङ्कं गाण्डवं भैरवं ॥ पाशं वज्रं तथा घण्टा कपालानां भ
वव ॥ वक्रं नहं फलरवं जञ्चैव वादनं खालिखं छुक्रं मण्डलं सर्वालंकारसं सिकं रावय
स्वगं मस्त्रं तु संपूर्णं वज्रमण्डलं ॥ विरूपकल्पं श्री कालपादौ तु यास्यां विशावयभुः ॥ कपालानां स
नमश्चस्कं वक्रवर्णं महाकालं ॥ सर्वालंकारं संपूर्णं तु ऊर्ध्वकेशं किंतु कं ॥ रावयदिदं यो ची
वलपूर्वक्रवलमाद्य याकोप्राव पंद्दिा नमश्चतु संपूर्णं वज्रमण्डलं ॥ नत्र सगानने विकाक
वंकावाकृति ॥ कपालानां सलमश्चस्कं तु ऊर्ध्वपूर्वलिलषितं ॥ वेभइ सनागं कुण्डलं कूर्म
भवव ॥ कपालं यक संपूर्णं पाणवं कं तथै कवा ॥ धनुर्बाणधरं वैकंठं वक्रं समावय
नृ ॥ हविकवर्णं त्रिनेत्रं तु सर्वालंकारभूषितं ॥ ॐ श्री पद्मं रावयप्रधा गीवज्रसत्वसमालव
न ॥ ॥ इति श्रीसर्व[illegible]कालपावा[illegible]वज्रनव[illegible]रुकसमाप्त

बैतै लि दल सहस लाखा इम पठला॥ ॥ छकूक खनसे नामा हिकूका पढिसा
नपाग धनाा यन सर्व दूहू वोडु तला विनयं पाखकि ता किनी विकूर्हीलग सुवंक थयासिता व
इसक ४॥ पूत हेयबकिवके सुलमावहन्, कालामा कूल बोड़ विसहूयं समनगंस ४॥ व
इन गुलमधाहुं वीजमा तांन मानसहूका नाव झीमहा नागमड्ड नापसुंस पविइय पा॥
अदयकि नगा विद्या नानागीभाप हाव न॥ ॥ डं सुवा क्राकवहलम लुः पूका हिम २२
कू पवि नाहि मह सहजा व कागम हैं॥ कइ हि सुं रहसहाव ना इहू ईहम ल हूं हड दाहि
तुहू हबू॥ कतु हिकुगु सहाव॥ तासवयि हासि कुउक कू लासु हिम हि उपहथा स्व
हंडु कू सिंकीस हुउं वंघुलीवि रहिं मधान उंयि नउहमि लदीस॥ जृदि आली डक्ष्व
हू सकूल विसञ लिविकू॥ हुंकूं योंसहाव जोडाहि नाजव मूर्हिन ४॥ वपमान हुहावयपहू नगुष्क
मीन कूपके ४ सवासु नासु॥ गंवै वंपं गंवउं॥ वीडे नूरहू ऊं दामांजूधिपमिव लिवी झालो

ज्ञा लोकबाव सीला ह्याँ माऽऽ वज्र पूर्व समाराव पश्चिमे प्रज्ञौ ॥ अक्षोभ्यं च रत्न तं तु उज्ज्वा कोण
शुभिकं वक्रु मोव स्वभाव ज्ञानके हृय स्थापि हृयानकौ ॥ स्थल मन वीव वीहृ तत्त हाष्य श्रीजहृ यानके श्वा
कमूल छ्रग गाके वन वना श्रव सं पूर्ण ॥ मू तुमालाकर्ण हाय सूर्य स्कं ता ॥ शुवा हिकं ॥ वि ष्ठ ज्ञा
धानमूर्द्धि कृ कं वे हृहृ यान्त कौ ॥ हृ कावं लुक्षव पद्म मू त्वा हृ स्वा ॥ सूलिक विश्र हं बगि ध्यध सुमा
पत्न नैवा स्पा सहृत्तं पूर्ट ॥ विस्व वंगा स्वय रूपिटां ॥ मूल मूर्ख हृस्तिरं कृ स्कं हृत्कि दीं फूज़त्त त्रिरं
वाम वकल लारी मत्र दुर्जी स्पं विकवालि वे ॥ वज्रु विभागिनी दा धं भ वं वर्ण ॥ हृ त्रिरं ॥ वज्र वजीध
नं ववं वा दा वज्रं नष्ये वव ॥ जथ्य वकंद हृति त्रि शूर्ना ॥ कृ नाम व वा ॥ वामध्य ण्ठ ये पद्म वैः ध नृ खव दं
ना मूध्य ना ॥ कपाल वत्त मवंव नकृ नीपाण मवं वा ॥ स्कं य हृ र्ध्व समे मध्ये नाना वर्लिस स्वको नष्य ॥
एर्वा वि धि विभात वैलो याही वांगर्का न्मप्र हृ ॥ गर्भे नीले नववर्हो ध वहृ वा न कर्षन्तप वा ॥ कपालं व
कं संपूर्ण व ज्रा फर्हि न ये वव ॥ वोनीय कवर्हे तु व का कृ वा स्ववनी सगा ॥ कपाल तज्ज्वकं

शेव विनाशं द्विवाहू पिनी॥ प्रभाहा कृष्णवर्णे तु कपालवमकं तथा॥ मांसपूर्णं कपालं च वर्तं
वराजभवव॥ वज्ञाअली नी वर्णेलाहा पायू पद्मात्रिनी॥ अप वास्यां कपालं व पूर्णं तु नीकं तथे
तथा॥ वरा॥ अस्मनी दूहै कृपीना लावजा॥ त्रिकु शुभय शुद्ध हस्ता वा॥ कपालं भद्र सं पूर्णं दक्षिणे हस्त य
दाचिका॥ सूचवी सीति वर्णे रारवधाज कपाल हस्ता व वज्रपाशं तथैव वा॥ फाव यद्विश्व व ः
पिनी॥ शाहिवे वत्राहं कूमध्ये [illegible] डवनांत था॥ सिंह व्या घ्रं तथा चैव वज्रमकं हिरक्त भवव त्रयोः
स्त्रादी नाम कपाल षवि [illegible] वका॥ अंसभवादिनसांचिना ४॥ हय नूपा स्फ कनपास्पान्त्रनाहा पिं २२
हि लीत था॥ वकुन्तुजा वतुर्वक्त्र स्पर्वा कन्द हृषि ना॥ बंगा वेव वीलाव सकृदं मूवजं तथा॥ हवि
तकृष्ण सिता स्याहा हर्षं सिंह व क्रूं वस्त्र धृजल हर्षं कं भप लां ली सर्व क्रोका तिस्यात्र क्रोध
अंसमन हविमा नवनो लाव यद्धिके॥ ॥ इति [illegible] ॥ तपुष्क
[illegible] हन्नू कालविनील नवन [illegible] लया॥ ॥ हूव ज्ञप्रहाया ज नह्या नजाकि वी

रा पवं । वजिनस्म यथा सुस ऋद्य धर्म्मज्ञानिवां । ॐ हि शुद्धानिमूर्त्ता सर्व्व योगादिकं ओं स्व
स्वभावशुद्धाः सर्व्वधर्म्माः स्वभावशुद्धोहं । वज्रशुद्धाः सर्व्वधर्म्मा वज्रशुद्धोहं । योगशुद्धाः सर्व्व
धर्म्मा योगशुद्धोहं । एवं कृत्वा पुन योगी ध्यानेन स्थेयकारणं । मनोनुकूलप्रदेशभूतला
नं समारभेत् । वितान वितत वै च नानावस्त्र परिस्कृतं । पताका ध्वज संयुक्तं स्रकदामाहि ४
स्फं चै ४ पुष्पाणि कुसुमयुक्तं वर्णकांशु शुक्लांकं तथा । स्फटिकाकार पायासं आसन दन्तं तु वि
लिप्यतां । धूप गन्ध तृतीयाषष्ठं कर्म्म विमारु । एवं विधि विभूषितं चैव भावयेद् ध्यानसाग
रं । मयूरपुच्छ निस विस्पन्द तुरंग दीपि । काञ्चन नाना रत्नं स्फटिकं विविधितं । किंकिणी
जालमाला तु समन्ता कुविस्फुरे ४ । हेमपतानि पवैव पंचवर्णं तु भावयत् । सूर्यमण्डु
लमाधि वाशुं गकम्पु वि वाजिन आलम्बासनविति रश्मि युक्तानता फिनीमध्यना । त्रिमूर्त्तं कु
लं चैव सत्व पर्य्यंक संस्थितां । विश्वी रूप कम्बु हृदिनं पद्मं वै च हिमहिमांशु । नीलवर्ण्ण महाघावी

सर्व्वाहन न हुषिनाथा॥ हसिफक्रोकुण्ड गाव विन्तजादिवाव्र पिसी॥ अ्दहासी कवासीतुवकव
स्तुहु सम हिना॥ खवहांगासर्द्धे थेव छिनीयपवभूसकवा॥ हुनी य वङ थेव वांस घच्छ विसाधि
नथभा नां॥ तथा छिनी प थेव पा॥ जा हांहु नीय अ्रतिधवंतथा॥ बङिमका लामतवफअहावयनू सक्षम
बूहुः हलालजा॥ किनी पृर्व्व ग आ ललमअस्पति नि धस जं॥ सिनव ल्हीस ज्आहां उविस्ती र्हु कॆ वा
सहुनी॥ हर्व्वाहन न हषिनाथा॥ जं वा यसाच्छि नां॥ सु ज्आहांवक्ष जा॥ लिनां छिकुजां उ वि वा जि २४
नाखव छांगपाहु उहावथ व जजा किनी॥ ह्लान स्याहु वहा वाहु आ लभम सहु निश्चस जं॥ किङु
जां सूत्व पर्व्व का तफ कावैः नसमप्रलो॥ खव छांगा मा गपा जु उ विकी र्हु के ग म छि नांसर्व्वा हन
न बंगासहु ज्आहा वक्ष हषि नां॥ हाव यनू धा जजा किनी नम नं॥ ह्लान स्य पञ्चिमहा एव ल्हाती नि
४सुना पून ४॥ छिनुजा सत्व पर्य्यका नी सुव ल्हीस ज्आ हिना याण्णात्र्व किकि नीकनमाद्धिना॥ गुरुस्क
सर्व्वाहन न गमज सु स ज्आहा वक्ष हु षिना॥ ह्लानस्म दक्षिण हाणा वजुअली नीलानकाहा विर्ष्व

गयागापाङ्ग्व विक्षो र्दं कजम हि नापिकितु ङेकव क्रुं व नानाह्य न ह्र चिन्ता संगाव यदि दं यागी
सम्पू र्द्ध न्न पञ्चा किमाला ॥ वै गानां सिं दि मीद वी मूरव सिंहं तु विं म यप ह ॥ सीकपीका हांक्रु नोपा ङ्क
आ ह्री सासननह ठ्ठि नां ॥ वजा कृ गनर्क्रू नी पा गाह आहा वक्त्र लषि ता ॥ हाव पक्ष्मा लिक दहा नांव
ह्निक्ष जाहा सनक था ॥ आ ॥ मर्यां वाच्छ्रि नासं ठ सपन्न व ला ॥ हलमासन ॥ धितुजा नील हीका हा वक्त्र व
काय ह्र चिता ॥ जाल घजा कृ गान्तु नर्क्रू वीपा गाक थ्रेव वा ॥ हाव ह्र लिक दहा नांव ग्निका हाम नन्प
क्ष ह्र ॥ नैआ य सांङ्कं वृ कीदवी ज ह हा सू ह्य्यानकी ॥ क हिवो समा नू का न क कृ ष्ठ सव ठ्ठि का ॥ सू
आहा वक्त्र वागान्तु ॥ ज्ञितु ङे न वि ना ज्ञित अ ङ्कै गपा गक नर्क्रू नी सर्ष्म हृव नि ह्र पि ता ॥ वायव्या म ह्र
की दवी पीतव कृ सह व ठ्ठि का ॥ वागा ॥ समा ही ना ना गह व ण ह्र पि ना ॥ धितु जा सत्व पर्यं कज ऊँ ग
पा ग नर्क्रू नी ॥ क लिता सद्य स र्व स व ष्मिका हाम न क धा ॥ आह्र जा किनी मध्यक्तु वाक्ष नाम वतु र्वि
का ॥ एवंना ग क्रमं ह्लाप था हृ नं प्रकल्पय तू ॥ पूर्व ज्ञा किनी वाङ्क्ष्य विद्द्या नील व ठ्ठि का ॥

प्र.आ.

प्रत्यागन समाप्ती नाम सर्वाहेयवलसूषिता॥ प्रत्यागन समाप्तीना कोलिता त्रिसमप्रहा॥ श्रूज्जैरत्याध
यहस्तू सशीलत्रुञ्जत्तुधिपवनाः॥ पाश्चिमवृषिलीढवीवकवर्कर यालकी॥ प्रत्यास्तत समाप्तीना वि
कीर्णहे कभ मत्तिना॥ वक वकुसूत्भहा तुसर्वा लवदारूविता॥ गर्जनी मूजवी हस्ता नांविभाहस
वीवनस॥ अनिरूलाप्रहा भोडीला वयलसर्वसर्व विरू ग्रहितियादिम ग्रामसमयंदशाय कुथा
अनिलानलसफ्नार्थ्ठजीवीजन वादयनू॥ विन्दूनादसमाक्राप्ताधमावर्ष क्ष्टिमना॥ ॥
अथनैवामामाधनं वक्त्रसं क्षिपनयश्चादिनं॥ स्वधनुमध्यागनं विकूतसर्वं यथसनुलं॥ वकं सू
यं यथनाय दवनानामश्चादयं॥ वकत्री हीजलं पूर्वं यथनायं रूनासनं॥ दवना नामहावाम्
नावकं वयथादयं॥ धर्मा दया हूचवकं क्षिपूर्शुद्ध निनामयं॥ किंजल्कंन्हहवदकं त्रिकाय वयव
क्षिनं॥ विनयसम्यक कंपयं दशासन विषीवकृ लक्ष्यापयि हवखड्गर्ष्या पविवीजकं॥ प्रश्नमाह
श्रीमा ज्ञानकं यामहान्नहासूर्यं सिद्धनाव त्रूनूपलकालिनूपलहाम्कनद्वावत्रु सर्वं ह ममभ

२१

गुरु

गोश्रृं ध्यात्वा प्रवीर्हिं ना॥ आद र्णक्षान वा ध्यन्द्र समनाह्मान्त संहव ४ वीजैविकं स्व दहस्य प्रस्य वक्र
नमू या ना॥ सर्व्वं गकमनूष्ठान विस्वा निष्पलि शृक्ष नष्ट ॥ आकार्न हावयन्पववि धमे ४ कथि गेवूहः
आलि कालि समायागम इजमूलस्य विम्बन ४ ॥ अक वाह वपितुस्य हूं फट वानवष्यकासव
विष्वसमहृतं मानुसूर्य्याविनवयका पूत्रवघकृविक्रा घे येन्द्र काके म नीप्रहं ॥ एवसंवेवनि ४ष्ठ
सूप्र हस्पाय कायवन ४ प्रह्ला लिका लपा मति वजाकं प्रस्ह दन्पाकि ॥ गोश्रृं ध्यात्व यहूसा
हृदि ४ पवस्पसक धान मा सर्व्व प्रयत्नेन मनु लयं प्रकस्य पन॥ आ ॥ सम्पू ष्ठिका वको पये
या गिनी॥ पठेः सकला सकल तावयधा विलस ॥ हूं जवनाम्यमरीची वास्पा वारूती कोवनवज्रा
डाकिनी मम्मनेनालम्बयागिनी ॥ वाम्यपृष्ट रोती वी वीव ला नी घस्मनी पूक्क सी॥ सवनी व तुलो
वेव डामि कृपैव पूवनी ॥ अधवनी उर्द्ध वनी वे वरवव वी हवनी सल ना॥ हवनि र्व्वा साष्टिका पायं
उवहिं नैः सवाद व शाविश्व वर्णं महावीजा ४ पयेस्स जाविह बिना ४ ॥ एकव कुं वकुर्मुं जं ग्रिम

गामडुल्लम ४

सुंवतुहानंगावलोकस्य प्रकाशितं ॥ वज्रधातुसमा पूज्य पद्मसम्यामकृष्ठितं ॥ कोणेषु हाणेषु:

सर्व्वपूर्वलिर्य्यहसं धिपु ॥ खविलूवज्रवन्नैस्तु हस्तयपज्ञमण्डलं ॥ तस्य वक्रवर्हि कालं प्रविश्य

लंकयपूत ४ ॥ वज्रसत्त्वपाणि क्लिफंसूक्ष्मरूं हाप लाहिनं ॥ वज्रसत्त्वकायसहंह्ल पूपश्चेमण्डलमन

अतु वूबविसर्व्वनिवत्तयम्नू डकंमण्डल विश्वलंवहाधलंकथयामितिा तताहिन्दवन्दवाग

मू हंप्रविष्यमतो ॥ सूकाय धवज्रमण्डलं विधिंल गहय निस्लिंनपश्चे पूर्वि कंवज्राविकपि

ता विधिना ॥ सर्व्वतथागतादिन संपूज्य प्रदीपस्वमाहू ४ ॥ समन्ताहननु मां सर्व्ववुद्धबोधि

सत्व ४ ॥ अहमनूका नाम ॥ मांवलामूपादाय यावदा वोधिनिषदा ना ॥ उत्पादयामि परव

मबोधिविल्लवर बोधिविचूमन्तलु वा ॥ पथते पधिकाला थ्यः सम्बा छो कृतनिश्चयात्

: त्रिविधं शीलशिक्षां वकूमलं धर्म्मसंग्रहां सत्वार्थक्रियाशीलं वप्रतिगृहामपहं इवं

वुद्धधर्म्मवसंघ वमेवहगमन्नलुवा ॥ अयात्रेदा गहीष्यामि सम्यंवुद्धयोगजा ॥ व

त्र दिव्यरूपिणी ॥ वक्रीक्रुद्धल कण्ठाव हक्ष्मृ वकमरवसां ॥ दर्थेरु रूप्रविशु श्लोकुप वेश्मशुद्ध
मूर्छितार्थ ॥ सर्वतोत्रता ४ सद्गम्या ॥ नायथमलेवा स्पर्शाभिनी ॥ ध्यायामाप त्रे मनडर्स्र रव डांगंक
थे ववा ॥ दक्षिणे नीलवज्रं वकर्हिं वांपिनथेव वा ॥ सवार्न्तत्र लद्धिफानकाकार ॥ पिंगलो
र्द्धं आनीलवर्णं महादिव्या व्याघ्रवर्म वृता कांक्षि प्रलयानलशंकाभा ॥ हिंकामू ॥ दिव्यरूपि
णी ॥ दक्षिणे सितनीलाहाडरूवयकत्ती लाला ॥ किंतु जात्रेक ववक्रावसर्वालेकानशुषिला ॥ म २८
पाले कक्रव्यञ्ज दक्षिणे कर्ह्रिं भ्रावितीं ॥ हि सितं ऽस्मशानं तल्पजानूपमाष्टला सक्षु
दूष्वसमे भयि नीलानलभी सुमकर्न ४ ह्रीं लक्ष्वरूप मालमलं लावयम ल्प्रसं वृक्ष ४ ह्रीं
यप्रकटदां ॥ ॥ जूथमत्रेत्र वक्रामि महामण्डल मूलसं ॥ वज्रधातु समाकार्य वज्रधातुः
चिति सम्पं हं लोक्षमण्डल महामुद्रा पवित्रहं ॥ साधयदि दंमकि: सर्वस्वेवविलोकतां ॥ न नयुक
वनस्तुनि युक्तनस्तु प्रमाणेन वायूना ॥ स्त्रुं ऽहामूढ यक्षोह्रीं यथास्तु क्रोतुमहुलां ॥ वतुनः

मकुटा दावज्रमण्डलाकारं पंचवक्त्रा ॐ विरूपाक्षं के ॥ नमः ॥ पनमण्डलमध्ये रक्षमाकाशमि
वनिर्मिलं धर्मनक्षविलिमूर्के विकल्प पदनं पर्यां ॥ हर्षं कृष्णमाला रूवं वज्रव रश्मूर्वकी ॥ सर्वबुद्ध
गुणाक्षत्रप्रविशं नं गुह्यकावादिनं पदा ॥ ॥ ॐ ह्रूं ह्रीं उरु अपर ६६ एवे ओ डें जें ॥ कीद्गुरुदाः
विशिष्टं हगावनवज्रमण्डलं हगावानाद प्रसूदावनूपि गं सर्वबुद्ध तथागता ॥ नवज्रकायादिरूप
दा वृत्तगुणाः प्रविशमा नमस्तं किनन्द सा निर्गथ प्रविश्य नदिपवि प्रकृति प्रशान्तवा विरूपाक्ष टीक
वर्जी हला ॥ अन्यनबाधि विरूपमूलादयनमः ॥ ॥ ॐ बाधि विरूपमूलादयामि ॥ कृपानयन संहर्त
सखानग्रहकायकी ॥ संपूर्ण कृष्णलोर्हर्मि ४ हर्षकृष्णानिह्दनी ॥ वज्रमण्डलमध्ये बाधिवज्र हि
यकं अत्रापि कायकाका यत्र बुद्धगुणाक्षककावादिरूपदा प्रविशनं प्रकिविक्षा माणन ॥ ॥
कवेगा घङवचजा ८० उदयान्तदमनपकवरमयवल रगषषहरु एताला बमण्डलः
विप्लनमन्यनत्रेषु [illegible] नत्र नक्षाप केशं विकेसि नहकिमलं समनकहृद्विश्वलादस्पृष्टिकयता

घक्षावसूजांबुप्रतिष्ठापयिष्यामि तथा सूत्रार्थं च गृहीष्यामि महावज्रकुले श्रयाव
द्रुयनुवर्तं प्रदास्यामि च तु दिने दिने॥ महावज्रकुलस्याग्रः समयं च महोत्तमं॥ सम्बु
द्धं प्रतिष्ठापयिष्यामि वाक्यं गुह्यं त्रियानकं॥ महापद्मकुले शुद्धे महाबोधिसमुद्भवा॥ सद्धर्मं सर्व
म्यूर्कं प्रतिष्ठापयिष्यामि सर्वं तेषां पूजाकर्म यथा सक्लं॥ महाकर्मकुले श्रेष्ठे॥ उत्पादयित्वा प्र
यन वा चि विकृ मनः कृवी॥ गृहीष्यामि समयं कृत्स्नं सर्वम् स्वार्थकारको भवाम्यहं॥ अनीत्तूर्णो तारयि
ष्यामि मुक्तिमप्यागम यान्यामाहं॥ मुनाश्च ... श्वासयिष्यामि सत्वान् स्थापयिष्यामि निर्वा
णे॥ अथ भगवान् सर्ववज्रधरास्त्वं नाम समाधिं समापद्य ॐ स्वभावशुद्धन यामा सा॥ ज्ञा
नानालम्बिष्ठितास्सर्वधर्मनैरात्म्यं समनुपश्यन्तु सर्वमन्त्रास्त्वं नमस्कारन्तिकं विकृविशोधि
तान् विकृत्वा विविक्तमन्यद्द्वयं ॐ॥ नमस्त्वं सर्वतथागतास्त्र सर्वधर्माः प्रकृति
प्रभास्वरा यामा घमूले न लाकृ॥ ततस्त्वं वस्तु विकृ मतन प्रकृति प्रभास्वरतानुविकुर्वित

२७

गगुरुः

तं नगानि कुल्मा द सर्वे नथागतानां ॥ नदवमानवे गावनीकृत्य तुर्ह्लो खमनक्राकृत विन्नसस्समर्दुः

निष्यादयन् विविधवनकुसुम मूदानवृष्टि ॥ विविजालामगुलमत्रिका मम हृक रमहान हृवनावि

हाम्य नक्षिमनय कावानि गति विचेपपार्दमगुलां ॥ स्तुति लानयमगुलेमूर्कै यवलसर्वविलविकालि

नमहस्पविमक्रोलेव सर्वे नथागतानां ॥ धूपिनस्तु विक प्रणम्का ॥ मह्ममति वलं प्रदिप विचित्र वर्ष्ठ पञ्च

वस्कमानूनां ॥ हूं म पपट पटाका ॥ सुगत महावार्द्धहाव वज्र प्रआहितां ॥ क्रिममलि मिखवर कृटागा

वं विकम्पनां ॥ मजा नमस्त्र ॥ हूं ॥ खहृदय वज्रमगुलमत नविन्यासा वज्रप्राव तं लाव यन्तं ॥ पंचेशु

विकं स्फ नय लर्विबूडा नसहल सूत्र वज्रमलं पनलद्ववज्रप्राप्तं ॥ सर्वाकान वयापनं वज्रव

सम प्रहां ॥ वज्रमगुला ॥ पविलिनं सर्वा लंकावस्थिनी ॥ वक्रपञ्च ध नवी वं प्रह्मानस्के कसंद

वं ॥ कृपाला संकुसवेवकपालं पाशमवबा ॥ दक्षि कृष्ण वर्जहेतु वा भमवकनप्रहां ॥ त्रिसत्त्वं षड्

ॐ वेव त्रिनडं हि व्यवृपिलां ॥ हव विधापमस्कं लाव यम्हवनमगुलां ॥ सर्वाकान वयापनं मांगुले

क्षणा ना स्मानं वज्रबिंबं विभावयेत्॥ अनेन मन्त्रम॥ ॥ॐ सिद्ध वज्र हूं॥ ॥बोधिचित्त वज्री मनु कृत्यं

तथाग
प्रयुज्य सिद्धः बोधिचित्त प्रह्लाद नं शुद्ध मं ता सु यं॥ बुद्ध मनुत्तमं धातु वज्रं निरीक्षयेत्॥ सकलां काय

धातुस्थं मवस्थं व यपु गवं वज्रं विग्रहमा त्मानं विभावयेत्॥ अनेन मन्त्रेण॥ सूक्ष्म वायुहृदय

ना प्रपञ्चाग्र॥ ॐ वज्र त्मकोऽहं॥ सर्व वृक्षमूल यक्ष कायम निवास संनिवालयं॥ जु ज्ञाना कायजंकं शुद्ध

सहावादि विवक्षितं॥ अ सूक्ष्म धारयाज्ञं वधर्मकायं निरूपयिं वज्रा लक्षं सु सं स्थितं॥ वज्रकाय

नि वज्रं ना॥ पुनः कि वज्रंकि स्वभावायामि भगवन्॥ ईद्धं तु सर्व तथागतानां॥ पूर्वं कस्य सुलांस कायाक

व स्वयपं तं बुद्ध विरवं विभावयेद नेन मन्त्रेण॥ ॥ॐ सर्व तथागता कायस्वभावं काय वज्रं तथाव

श्रीशांवत्तः तत्त्व वाधवं॥ प्रकृति का ना हि स्वभावि सर्व पूछा नकं शुद्ध॥ ॥अथ वज्र गर्भ प्रमु

गुह्य
रवा महा बोधिसत्त्वा॥ पुनर पि भगवत्कर्म तद् धावत्॥ किं नाम भगवन् गुह्य वज्र पद्म कुलमि

ति॥ भगवाना हा॥ वज्रं सर्व तथागतेषु छिन्न॥ पद्म कुलं महाद वीरं पूर्वकं तं वज्रं पद्मा त्मवि छि

श्रीवज्रसत्व स्या॥ वाह्यमण्डलं पूर्ववत् दर्श्वन नमस्याग्येन वा॥ फार्ह्व वज्रसत्वनं वायुमण्डलं मध्ये ष्टूं लो
पत्ना॥ हिरे॥ वहिर्वज्रधरवया पत्रि वा विकं॥ सर्व्व देवतासत्व नमसि वज्रा कुशमण्डु ज्ञा॥ सर्व्व कालहृद्धके॥
शा॥ विश्वपद्मार्के मण्डलं सत्व नव्या॥ आग्नेय्यादि समारूप पुष्पादि विकृष्यादि द्या॥ धा॥ वीन्या॥ वायव्यस्था
हितु ज्ञामनाः॥ पूर्व्वादि नाय लंकुश ४॥ एवमुष्य धान्यासनानि लोमादि प्रकल्पयत्॥ तत्र मध्य ज्ञीः
कावरूवं विलावपदि॥ ततस्य पूर्व्वकाष्ठ ज्ञीः कावं दक्षिणे हिः कावं पश्चिमे सिंकावं॥ उत्तरे
४ कावं॥ आग्नेय्यां हूं कावं नैऋत्यां ॐ कावं॥ वायव्यां मं कावं॥ ऐशान्यां हूं कावं सप्तत्यत्॥ वाह्यमण्डले
आग्नेय कावा॥ ॐ कावं नैऋत्यां ॐ कावं॥ वायव्यां मं कावं॥ ऐशान्यां हूं कावं न्यस्यतु॥ वाह्यमण्डलाग्नेय का
ना॥ ॐ कावं नैऋत्यां अ कावं॥ वायव्यां अकावं ऐशान्ये ऐ कावं न्यस्यतु पूर्व्वका त्र ज्ञः कावं दक्षिणे हूं का
वं॥ पश्चिमे वं कावं उत्तरे हु कावं न्यस्यत्॥ वाह्य वज्रपूर्ण मण्डलं तत पवित्रके मण्डलं विधिरूप सूक्ष्म हा
लताम्॥ ॐ डादि संतु ष्यान नान्य सता॥ पूर्व्ववत् हयवाम दवसंघं समालिखेत्॥ दक्षिणे वज्रनवकंतु

यान प्रकल्पयन्त्रा। पूर्वे वीणावत्नः दक्षिणे यत्र सत्त्ववंश। पश्चिमे मृदिंजमित्ता। ४ उत्तरे कंस्
भाय शिङ्खिथा। ते सानां भावना। आग्नेयामास्ते कि। नैऋत्यां धूपवासिनी। वायव्यां का वा
वास्कयान्त्र वीणास्थितं कृष्णवर्णं दक्षिणे वज्राविस्वा पीतवर्णं पश्चिमे मार्गवज्रा रक्तकाहा उत्तरे व
वज्रसूत्रमाह पितारता। ईशाने नाववज्रयक्षी वसी तपीतकारा। वाम्हपूर्व ऐशाने नीलवर्णा। आग्नेय्यां
वीणा। नैऋत्यां कृष्णदा। वायव्यां धूपा गृहकाश्या। वंशमया कितुडे कसूरवा। वास्कपङ्क्तिकायापूष्या।
दिविसूत्रवाविलिस्ते सूर्याति अंतश्यरक्त नव्या धितुजासूत्र। पूर्वे चार्वालिस्व द्वारा। तस्यामपस्तम्
कृष्ण कृष्णास्मि न दक्षिणे तवान नो दक्षिणे प्रथम तुऊअस्य कूं वां द्वितीयं संभूय नं। पूर्जी
यवक्रं वामपाणौ गी वी घण्टासिद्धंवज्रे। उत्तरे वायवज्रघण्टां हृदयं कारवी। हसी नखि
नरूसूर्यस्विमूर्खां। घण्टावज्राङ्कुशपाशा हस्ता मातिन्य ४ जलपाय समस्विता। शृङ्गि। जा ४ ह्रूं वंह
१ शिकिवेणा हृदय निर्द्दिशामत्र सन्देहः। इवेति भिक्षु घटिनादिनूपिशापि विज्ञ मृज्ञा पूका:

ममा

२९

गुह्य

गङ्गूला विक्रै ꣴ॥ हूल का लिंङ्ल पनि॥ ज्रूꣳ हंहूर्व क्लि सूꣳ वड सम॥ क क्ष्मै खिङ्गा: कर्पू
वला ꣳ ज्रूꣳ॥ माला॥ ꣳ धव सा लि सूट हि हूर्य वा ङ ज्रूम्रा॥ यव ला वे ट कर के॥ हक्षा शुद्ध ग
मश्रु ज्रूꣳ॥ वि वं स्तू ज्र गा वि ता॥ विङ्गूल क्लिज्र ष वाव विप र्हिꣳ॥ ज्रूꣳ मता ज्रूङ फूंहू सूवघा ꣳ
तिह्नि नल ह्वि ता वा ग ꣳ ज्रूꣳ॥ ॥सूरव पापञुप॥ हपू॥ एता दह पागी हिक्लि साहू ४ ात
तव्रं-ता-ञि-पू-सू-ना-या हि-धी-नू-स्त्री-स-प-पिहान्-पी-तु नमत्री-फूहा-ङ-ए-खा-पू-ङ-उ
ज्रूम-ना-ई-मा का-उत्रि-का-फल-का-हि-प्र-शु-सी-स्-न-सि-म कू॥ ॥ज्रूं थन लंप्रव ?
स्रूमि वा क क्षौ स मा वि वि क्रमा ध नवि ह्ला य तै त्रानाह गि ली वा ल सं गाय ४॥ पा तेगी: गम्, लम् ४
दहि नि गा रा॥ व दू॥ हृदय॥ कौ नव॥ क ल्हिका॥ कूलि कव ला व ना ह तव ला संथवा॥ ववन: नम ४
का लि का सन का॥ ज्रमूं को॥ का रिवला॥ खस्नं पवि धि॥ विवा जि ४ कून ४ खन्न ४ ज्रालिका॥ हृगिनी
नूदकं गहह समूझा हं के स्य यहा॥ पासं गान्धवाहिनी॥ ज्रागातेह्व ना हू॥ धा म या लंवा द वा द्क ९

समः ६ प्रस्तुती श्च च ४ ॥ पश्चिमे मञ्जु आक बुकुत्त म घवा ॐ ठ मा न्प सङ्गु ॥ धाधि बुकं ठ श्च आकूच यकं

श्रीन्प समालि खेकू ॥ समूज्ञ स्ल्ह्व सापन्द्र व ज्राकें समा मूकं ॥ मूद्रि तं मा ह्रिं ह क्रिं ॥ स्वह स्वम

कथा ॥ पिङ्गी व यकू ॥ पूत र्यह्ल्लापविकि याग न वाम खघां गामा ॥ त्रि ठ ४ ॥ कपालं बक संपूर्ण यघ ष्ठं क

न कन खवं ॥ दक्षिणे हृल वजं ह यसुपा विह्न यकवं ॥ कूर्कु मातुश्च एव वू घा वाम माक्रमकू ॥

स ब्रंक्का ह्रिलं बक्रकु म्य पो वू खा ॥ पञ्चं तंगा ॥ स्त्व कूमम र्भ घे ना नाव स्मि सुमक्त ठ ४ ॥ ॐ सूप बं ३०

हाव य श्रा गी लघू सि ह्रिम वा ह्रू या ठ ४ ॥ ॥ ॐ त्रिश्रीहू र्बत श्रा गत काय वा श्रिकृ ल व ज व ह

स्पा ति य हूर्प्प मत्क्रु वाॐ सं पूर्णा हृ व कल्प वा ॐ ना ल नव मऽ य ज ल ४ ॥ ॥ स्या वत्तृ श्रृतु

मिक्षु सिम्मूज्ञा वा स्क खलक्रू लं ॥ बहुस्यं प्रा गी ॥ पा वित्मा ४ कथय प्व महामूल ॥ ठ कस्तु ह गा वा नूता

कितनी बीजय वसू ना मत्समाधिं समापद्य र्हतां किती मम य मूहा ज्ञ हाव ॥ कालू पू र्वा हिनू वा नयुक

ला ॥ मूमूल्ह्रि व कक्का ला ॥ घ ता यि ह हा वा कूं ॐ क वूहे किज्ञ न ला ल्ला ॥ ता हिव लक्ष्मा कः ॐ मस्व

दन्तिवाश्च कस्मात् प्रकृष्यतें ज्ञाहिकासाम्हेनाः ॥ ब्रह्मसितवदनाश्लोगतन्तोथि प्रहृतिसाव व
ह्रकुलास्त ॥ ॥ क पालं पवगूदक्षाउ मकव थक गकिगं लोश्च सुफमीस्त ना एनकसंपु
दमेस्तु गविभ्रानंवेनकूपथा ॥ विलसा ॥ ॥ ॐ [illegible] काम [illegible] व
हस्तानि [illegible] नाउनुमुक समाजकटपतनीविक्रु [illegible] ॥ ॥
मूथानं४ संप्रवक्षामि लामानां तुलकुर्णावकु णोवाउ पातनीकमलातहावता ॥ विनवस्तु
प्रियानिर्पं नव वन्दना ॥ थिना ॥ सोगातपे वीवनाचेव संवकुदर्शनानूनमा ॥ ट्वन्वलिखि
गपसंपम्ननहें शूवकुला हवा ॥ कूमक्षगालंति गूलं स्वाभाहूणापाउ वगा ॥ नीहालवाह्या ।
वान्वह्रवलिखिनन ह्रै ह्रूर्वनीय४ह्रदा ॥ ह्रूककुलाहूगाविहूयासाहुताकिनी ॥ वका
काननकुपेनावकु पादकनाकथा ॥ स्वगालनकुकू८नापिवमननाविकासदा ॥ वकंग स्वा
लिखिनं नह्रह्रग्रूर्वयसहदा ॥ जीहवकुलाहूनाजाकिनीनाज संगयथ४ ॥ पसूयाश्चकंलव

नि या ध्वि हू फि ४ घू पूं वहि श्च॥ क्ष प्रिय ४ स्नान्॥ र्पं विगा॥ जं युल्म॥ वस्ना॥ या जि का : अूदना
पकि॥ कि न्ना॥ वला म गायति॥ मण्डलस्स मं॥ लो लुण : महाकवं जू घका ॥ ण्ली : व न क्लि कि
दनस्य भीन॥ द्री का॥ शूत्ता स्पर्श शा॥ ड्रू स्पर्श सा॥ ड्रुर्ध मध धा ल्कि मूत्ता प्रति मङ्गा विधिय गो॥
अक्रन वा क क्कम्मा वतुव स्य प्रथम प्रकवर्हा॥ ॥ श्रण खकमना रु सावक्मा हूँम
स्य कृप॥ द्रूपसं हन कि प्राकृ पं श्रे न्या संकता कि वा यूपि का मा चि या वी ना ह्य म सृ विना डेव २१
मवा य दि वा निह : स्रिय मा हि मप वृत्व कि॥ बूलि हा सा विहू या डा किनी जू वि शा धि का
नि र्य सहृ स्थूल कू टि व कृ उक्र थै स्कृ ग नी हू॥ जू स्य थ्य नि ह श्री सा हैव वा हि ला ता वि निर्दि
ता॥ व बाह गं ग्ना व : मा क्रों व ह या नस्र र्था स्कृ स्थु सय ति प मा ह स्य स्थ ता॥ प्र दूष्य ह स ति
स्य छू ता ता ह या न निव ल्टू वं॥ सं वा स्थि र्के ति सा स्य ना॥ य ह द्वि स क व ता हा स्फु न व व (टो नवा
पटा के ना थ वा का हृ न न या स्य श्रुन री व ति॥ अ निव हि न सा हू या ह स ति रु स्या ति न

हस्पूर्वप्रसूक्ष्मांगि नायककृतोहूतांजाकिनी मानहूनाय४॥ प्रयाङ्कुकु विरिनाके॰
ग्भ सूर्यक्रपदि मधुला॥ वक्रभ्गत्रुनिश्रुकुवादी दीहुनामसा॥ उक्षवक्राशुवि४ही
मात्रकालसूर्यवादिनी॥ सङ्घर्मसंवक्रानि स्थसूयदीवहृगिनीसमता॥ वस्रमूजतुदाग
वाकर्मज्ञाथवापूत४॥ अर्वयक मधुवैनज्ञानिमूजाविधीयगा॥ द भ मी पर्वनीग स्या
४ प सं वलिगंग ह॥ लस्वाछि व विश्वालाकपकपि मेलतावना॥ आद्यावस्तु गाधना यो
वीचंपकसन्निभा॥ दीर्घदीर्घकवावेवविचित्रवसनप्रिया॥ त्रिलवावललाट वेडूर्मसी॰
मानमाछिना॥ हृसत्वसमवेवमार्गीमाकेस्यागिस्थति॥ संअमयागकानाव कथ सूवम
नसवा॥ ठ्रींहृमीप्रमदां दक्षाम लमूजांप्रदापयहू॥ आक्रं विगवामपादानाचपूर्जीवण
दर्भयहू॥ पविवर्कैनैवावामनप्रतिमूजाविधीयगा॥ वडुर्द भ्यहृमी पूजागस्या४ मूलांलि॰
दिवकं गहुलाकंप्ववीश्वगहवति लक्ष्मी॥ वकगोवीतुमाताची हविनापिंगललोचना॥ वै

कथपा

सि खुं सिरी बी पूब्बरा श्मव
पकव वा बापि ह थ्य न॥ पि नव्यम साढु या नी नी हि न कक्रु प्रिया नि द्रुया ना
सहह्मा शग धं सूप ना व स॥ लि खि नं व ग ह व क्रं न थवा न कूला न्रु रा॥ कूक्रु गथ सा क्रुया ना
नी सि न व कुन स सू न ना॥ कू या व स नं न या सा मू क्रि मि रवा स दा र थ न॥ निम स्हा न न ना व
आवकू हा बि नी॥ व क्र व लि खि नं ग ह सूर्थ र्थ सदा॥ व क्र वा वा ही कू ला हू ना एम वी कन क
सू निरा कूप्राक्री वं व ला म ना॥ प्यस्याल ला ठ व कुं क व बा पि हि ह थ्य न वा का नू ना सा नि २२
गा खि ना स सू वा दि नी॥ मन हि का भा हू वा धम गी वक्र न लि पि वि क ग ह सू वे प त स य॥ खन कुं श्री हा
कू ला हू का क हा या ग प्व बी व या॥ मां सु प्रि या व या ना नी कू सू ऊ न स म प रा॥ ए ला का नं न
ला ठ व कू र क र्स न ग व या॥ श्म ग म न म पकि या नि म नि र्ह या लि ण ही व या॥ प्य स्या ल ला द सू
का लं सं कू लं व क पा ल कं॥ लि खि नं न ऊ ह प क्का श्री हू रू क स कुं ला हू या॥ की मू न व र्ष्ठ प्प या नयुक
ना नी द ना नै र्वि ज मे ४ हि ना॥ कू न नं कू व क मी व वा म ऊ कु एक ठ व स॥ प व शु लि खि नं ग

[illegible] श्री [illegible] ॥
प्रदक्षिणं [illegible] पठेत् ॥ ॥ अथ मन्त्र सुप्रव काली अजो [illegible] याहू
गल भिरवा नारीबस्तस्या ६ प्रदर्शयन्तु ॥ ले ला दर्शय यातु रात्रुं नस्या ६ प्रदर्शयन्तु दर्शतं द
र्शय यातु नाहिंनस्या ६ प्रदर्शयन्तु ॥ [illegible] यातु विवुकं नस्या ६ प्रदर्शयन्तु श्रीवां [illegible]
र्शय यातु उदलं नस्या ६ प्रदर्शयन्तु ॥ उदरं दर्शय यातु नाहिंनस्या ६ प्रदर्शयन्तु ॥ मूरवं दर्शयन्तु श्री
यातु स्वगात्र यातु उदरं नस्या ६ प्रदर्शयन्तु ॥ उदरं दर्शय यातु नाहिंनस्या ६ प्रदर्शयन्तु ॥ सर्वं दर्शयन्तु
यातु विवुकं नस्या ६ प्रदर्शयन्तु ॥ गुदं प्रदर्शय यातु हिंसकं नस्या ६ प्रदर्शयन्तु ॥ जानु प्रदर्शय यातु ग
मानं नस्या ६ प्रदर्शयन्तु ॥ हस्तं प्रदर्शय यातु बाहुं नस्या ६ प्रदर्शयन्तु ॥ अङ्गुलिं दर्शय यातु नखं न
स्या ६ प्रदर्शयन्तु ॥ लिङ्गं दर्शय यातु आकाशं नस्या ६ प्रदर्शयन्तु ॥ आकाशं दर्शय यातु सूर्यं नस्या ६
प्रदर्शयन्तु ॥ नदीं दर्शय यातु बामडं नस्या ६ प्रदर्शयन्तु ॥ एकाङ्गुलिं दर्शय यातु [illegible] नस्मिन् [illegible]

विराश्वनतथ क्रमस्तपदवनं दशभुज वैवमकवंवें आगिच्छिता॥ दीर्घावा नथ श्वार्धं व
कं वस्त्र प्रियातिसुंगं॥ हस्तनगोपन वैवगुकम्बासु प्रकूप्यत॥ वरविल्ला विश्वपत्रकल्
नथाग हनस्तनघदा॥ ॐ दुर्गीप्रमर्दा दंष्ट्रा शक्तिमुद्रां प्रदापयतु॥ घण्टामुद्रां प्रकाशवाद्धि
गीयावैवयलनथ॥ परिवर्ह्लनं ववामनप्रतिमूर्द्राविधीयतेनथ॥ जस्वावैवस्थूलजंघा
पीतवस्त्रप्रियातिसुंगन्धवस्त्रावलंविनी॥ ॐ हंसी प्रमदा दंष्ट्रा वज्रमुद्रां प्रदापयतु
शंखमुद्रा प्रदाशवाद्धिनीयावैवयलनथ॥ परिवर्ह्लनं कथे वय वतुर्दशी पर्वदीनष्या ३३
वक्रेवलिरिवनंगहा॥ रामनाम सर्वगाउष्णकक्षु पिंगललोचना॥ कवाला विकृतास्यावक्त्र
लास्यास्थूलवक्त्रा वक्रेवलं शक्तिवकादलाक्षी रक्तनासिका॥ निसुंगन्ध वर्कूललास पव
र्द्धमहादेवी॥ ॐ हंसी प्रमदा दंष्ट्रा नागास्त्र जाप्रदापयतु॥ शक्तिमुद्रां प्रदानवाद्धिनियावै नग्गुम
प्रयत्न नथ॥ परिवर्ह्लनं पूर्वव नु॥ एकादशी पर्वदीनष्या दंष्ट्रा लिंगमर्चय सदा॥ ॥

इति श्रीहरि[illegible] माद्धि[illegible] [illegible] सु[illegible] गंध [illegible] विष्णु [illegible]:
प्रकरणे मेकादश पटलः ॥ ॥ अथ पानकं मुद्रावक्रमात्तीअंजनं जायते त्क्रतं यास्य
पताशिरवा नाभी वस्नःस्वाहा ॥ प्रदर्शयेत् ॥ हलादर्शय यातु गाढं नमःस्वाहा ॥ प्रदर्शयेत् दर्पणं प्र
दर्शय यातु नाभि नमःस्वाहा ॥ प्रदर्शयेत् ॥ अंगुष्ठं स्थूलं यातु विपुलं नमःस्वाहा ॥ प्रदर्शयेत् श्रीवत्सं स्थूलं
नं यातु उदरं नमःस्वाहा ॥ प्रदर्शयेत् ॥ उदरं दर्शय यातु नाभिं नमःस्वाहा ॥ प्रदर्शयेत् ॥ स्वरं दर्शयेत् श्री
वत्सं स्थूलं यातु उदरं नमःस्वाहा ॥ प्रदर्शयेत् ॥ उदरं दर्शय यातु नाभिं नमःस्वाहा ॥ प्रदर्शयेत् ॥ स्वरं दर्शयेत्
यातु विपुलं नमःस्वाहा ॥ प्रदर्शयेत् ॥ गुदं प्रदर्शय यातु लिंगं नमःस्वाहा ॥ प्रदर्शयेत् ॥ जानु प्रदर्शय यातु ग
मनं नमःस्वाहा ॥ प्रदर्शयेत् ॥ हस्तं प्रदर्शय यातु बाहुं नमःस्वाहा ॥ प्रदर्शयेत् ॥ अंगुलिं दर्शय यातु नखं न
मःस्वाहा ॥ प्रदर्शयेत् ॥ हृत्रिं प्रदर्शय यातु आकाशं नमःस्वाहा ॥ प्रदर्शयेत् ॥ आकाशं दर्शय यातु सूर्यं नमःस्वाहा ॥
प्रदर्शयेत् ॥ नंदी प्रदर्शय यातु वसुधां नमःस्वाहा ॥ प्रदर्शयेत् ॥ एकांगुलिं दर्शय यातु त्वां नमः मिलकं

तथा गा

चित्राम्बर तथा कं शार्दूलपट्टवरं दंष्ट्रग्र चैव सम्पर्कवंवं प्रतिष्ठितानादी पीवा तथा चार्धंत्र

कौवस्त्रप्रिया नित्यं ॥ हस्ते गायन चैव सूकस्यान्व प्रकूप्यते ॥ वल विन्ला वि अघट कल

ध्रुव स्त तथ दा ॥ ॐ ह्रीं प्रसन्नां दंष्ट्रा शक्ति सू जां प्रदापयतु ॥ पत्मा सूजां प्रकल वा द्वि

तीया चैवय लत ४ ॥ पवित्र वर्त्तनं चवा सनप्रतिसूजा विधीयते ४ ॥ जस्वा चैव स्कूलजं म्बा

पीत वस्त्रप्रिया नित्यं गाम्भ वस्त्राव लंबिनी ॥ ॐ ह्रीं प्रसन्ना दंष्ट्रा वजस्त्र सूजां प्रदापयतु

जं खव सूजा प्रदा न व्याघ्रिणी या चैव सूप्र लत ४ ॥ पवित्र वर्त्तनं तथैव च वतुर्दशी पर्वणी तिथ्या ३२

वर्ज्जे वलि रवि तं ग हा ॥ ग्राम श्मशान सर्वं गाउन्न सू क ह पिंग लला वना ॥ कवाला ॥ विकृता स्पाव ह्ल

ला स्याल्ह लच क्रा वर्ज्जं वलं गष्टिव का द ला गौ रूपम ना सिका ॥ नित्यं गान्ध हं कूल ला सपवं

सूर्ज्ज स हादवी ॥ ॐ ह्रीं श्री प्रसन्नां दंष्ट्रा नागास्त्र प्रदापयतु ॥ शक्ति सूजं भ दान व्याघ्रिनि या उ गउ छ

भय लत ४ ॥ पवित्र वर्त्तनं पूर्व्व वतु ॥ एकादशी पर्व्वणी तिथ्या दंष्ट्रा लिंग सर्व्व वर्षं सदा ॥ ॥

पक्वं त्रिशकुनी॥ कोमलं रूंवतथैव वा॥ कलिंगं वनथप्राक्कं लपार्कं वनथैव च॥ कांचि दिमाल
यं वैसर्वं दाहं कं स्मृपि॥ प्रेताखिवानि: आकस्यं हृदवनागंथैव वा॥ सोना हुस्ल वर्ह द्वीप एवच॥
स्तापकावम ला च कतथा॥ नगरं सिंधू स्मभमनं थैवडप स्वभा स्नं स्नवृक्षला॥ कासूर्यं क
र्मार पानकंतथा॥ हृविकं लवनसागार सर्वं गाविंध्या कोनाव पोनिका॥ पीरुवस्मपवीरुव
नग: हल्ल पंस्मस्मनं प्रशृंगानवादस्पिटानं॥ डयानैवाविकानि: वंडप स्मम स्मनं निगद्य
॥ अथस्कन्ताधिवासनविधिं वक्ष्ये विवरं वूनवाहस्तु॥ का कर्हसामव र्द्धिं का॥ वरितु
कलंक क्व अदहान कदम्बा ट वीकाद वल्ल हुहु विकलं हृ विरूहुं॥ डक्रिया न स्नुम कस्नु
उल्लं धनवानक दूस स्नु॥ पी० प्रमुदिता हस्तौ डपपी० विमलं तथा॥ क्रं ध्रस्ताकवीहस्तु य
क्रविस्मश्रू पक्कतकं॥ स्व दाहाविस्मूत्वे वैडपकूस्या हल्ल हस्र्क्या॥ हंतास्मतिविस्मला सांक्रव
लूसापम लायों॥ स्माभनं साधस्मति: वेव॥ धर्म्मभयापस्मभानकं॥ दभापावमिता रुस्मो: प्र

ह्व ति यंयुलि दर्शपेक्रु यातुस्तु गानयमि सू कें ह्वति॥ दक्षिणसूकुपा ह्लिमयं दर्श
यति॥ वामस्कू क्रयाहि नये वाह्वथी मावा थर्यादर्शनं॥ ॥ वंत्रीतिस्रखन थगात
तथागत का थवा छिकू नह्स्या लिन हस्तो थकल मा ङे ङाकिनी हंकेननाम दायतथ्हखमलखा॥
श्रूथनं स्व प्रवक्ष्यामी सर्व स क्रीन म लवनां॥ वयूथीं ह्कंय लूत्व द्विपाता अमघतलयवी ह्ल
गवक्लेन मपक ह्कु नाश्व॥ ला मा नाह्यावी ०थ्वैथा पी ० वकेत मूपकलुंतथा॥ कन्दाह श्री
पकूदाहं मलाक पमह्ला पकां॥ तथ शमगानेपीव थ्वीपपील त ववा॥ वना वाद गल ३६
मथ ४ दंगहं मी पवयानाथ ब्रहिव स्वै नेकथ्यत॥ इह गावन कत पी अदयथ छादगाल्ह्म
पचा॥ कथ अह्ल महा ह्लागा महोदाव दासंह्वा॥ ह्लगा मानाह वी०जालंधवं प्राकंड ड्डियात्वन
थेवन्वा॥ पी० पूर्वगी नं वेवर्जू वंदं वनथेव व॥ ड पपी ० कोताव ती प्राक्ता नाम श्वयं नथे ताथुक
वव॥ ह्वीका हैत थावा नं मा हं वंकुतथेवव॥ कामरू पंतथाङ्ग वं प्राकौ डंड्कूतभवव॥ ड

ऊर्द्ध्वं स्वयं हवन्॥ अष्टौ तु नर्त्तक्यो धातु स्मन्त सं पतन्त हवन्॥ प्रह्लादपायालकं यो गांष
ड्रिय वृक्ष विन्यानी किः॥ रूप शास्त्रादि निलूस्य अन्वार्थ्यग्रागान्त गम थावे द्रुमार्थ नलेरवंथ
पार्वं पर्य्यं मनं क्रमात्॥ पूर्व्वलक्ष्द्दां सद्भिषा शूलं ग धानि लक्ष्द्द॥ प्रक्राल्पम ल्ले द्विलुस
वाधिक मंत्र पनः॥ चन्द्रमण्डु लमध्ये श्लोकः लीन स्थ विविनिकपनः॥ सितोक्ष्ट द इव क्षी स्व रक्षा तुन्ना
यत्न समष्ठिनं॥ द्विउ जं सत्वपर्य्यं कं पद्मासन्न समासीनं॥ सर्व्वाहव मर्हविनः पवेरबृष्ठ
स्फुमद्विनं॥ महामुद्रा मालिद्ध यं हृदि स्थ नं तु पीत नं॥ रूपसंपूर्ण हि कालि स्फु लान्नसर्व्वं सत्त
व पक्षा॥ कदली पूर्ष्यारिष्ठ ना नारि डक्षिकं हृदया वरिष्ठकं॥ पूर्व्व लक्ष्द्द राव र्क्षी द्विउ तत्पय पूर्व्व
प स्लनथादलस्थ सनूऽस लालिनि ककश नाद्दि सकर्हि का॥ न्यस्य दलेन विन्यासं मध्ये स्तेनज गमसी
नेद्विउ जमक वक्रा सितं॥ परिद्व्यं मध्ये स्त्रात्स निर्म्मितं॥ जंम ध्यतु वि ल्लान्त ह्लादन न स्वेव याज्य
स्त्री स्मेत्रीय्यक स्य पूर्व्व भवसकाद लवी ऊके शाकवृत्त मा याव दक्षि तं वलेन ख्यानि वी ऊन स्यादृ स्त्र॥

२१

कायादिय थ्यआदिष्ठ वाक्षा थ्या सं विविकय नूा दिव सं थे वे प्रक्षा मिथा।गित्नी नास्म

लापकं।प्रनपकत्व तुर्दस्या मसू स्यां बवि लव नथ्॥ थ्याडं गास्नाहनं थेवसू फडं विशव

नथ्॥ नृपा लू साय पलेन माय नं क्रियवि इथ्॥ नूपा ही नामसिद्धा किनस्मानू कूप यां नथाग

स्नाव थ्कू।प्रश्नक्रा लिन थ्यसर्वी पथ्यस खे स्क्रथ्याय ह सि तिसं वि नूयगमथ्यक्र मालघ् २७

लिख मवापू याकू॥ ॥ॐ मिथ्रलापकल्पा नथे थे नस्य प्रथमप्रकाय पा॥ ॥

आठु मिक्र ह्ला सद्दनुख्व पथ्यस्रल क्रूस्या॥मि ठुं नह्ला नवनं तु सं बाथ्वि क्रम को दर्भ

सगाचा नाह॥ वख्थ्पी ० स्नमा ठि स्यसंबा थिक्रा म वकं ध्कू।स्नमका थ्वि लु मू साय थ्वि

नवबर्जें गंस्तु खमा स्नन गा सीनं मिनं लकूल प्रदगन थ्॥ स्थि यवल सर्वशा वा नां कापू

स्यं हितय न स्थ॥ अ सिव सिनं खना यां गं न दव गुरुक पे कडं॥ कला विं वि थ्व वर्षी नि ः नगुक्ष

आना लिन थ्रेवच॥ कायवा क्रि लु व ज्ञ स्प धर्म थ्या तु वि कूविंका॥ संक स्पपिठु थ्या गानव

क्षयु स्वपविमनसुत्वां॥ कस्यमक्षयवीजानांआलिकालीनुसमृद्धनां॥ सिकवर्द्धस॥ ऽभयानुधर्त्ता
वश्मि समृद्धिनां॥ कस्यमक्षयुनयावंविन्द्रयताप्रकीर्त्तिनां॥ वालायमनकशाग्रौ ४ यवमाकूपस
हिं ता॥ लक्ष्मलक्षशहस्त्रनं विहस्त्रानं स्वलगवत ४ यस्य विन्द्रपदस्त्र तमहस्त्रागाथनलक्षनां॥ हृदि
त्रपक वानस्य विस्त्र स्वावं तुसागत ४ त्रिप्रस्कविहस्त्रान हस्त्रानस्वत्रु मार्द्दभीननस्यवथा॥ नजमागतस्य वा
कानाभाम्भृलोपिवहतन ४ स्लनतानिवमास्त्रु स्वप्रमागा॥ स्त्रुत्र हर्त्तिना ४ ॥ उपायनतुयागिनी
नां॥ गुनथ॥ गुमूवनस्वन ४ युनूप ध्वणमार्ग्गतत प्रदर्शयद्धि वक्कलक्षा॥ संमाहितनावहावनति
स्तं पंनिरूपडवंमनन ४ पूर्व्वगर्मामन्त ४ शुद्धासमाऽवा ४ सनानाऽपूताद्वनतासुतवाकमा
नि वा॥ नस्मानानामयेर्मन्न ४ संलनवूत्विमा॥ नाप्यदीर्घ्वस्वत्र प्रधागीतदिश्वततनावनस्य
नां॥ स्वान वारस्त वीजस्यानदुनत्वनिरूपत ४ ॥ कार्य्याकावतवीजतनतुनस्वानिस्त्रकन ४ ॥ वृ
पादिवंतांगरूपज्ञातांवावीजपर्च्छकं॥ विहतसखसर्वकासियांसिसस्थिता॥ निरूपंमूलानि

तथाग

पश्चिमज्ञानस्य ऊर्मिकाल बीजं विन्यस्य ना॥ ङकुव ज्ञाव दजातु अमाय प्रत्तु वज स्या॥ स्वव
पूर्वा दिङस्य वतुर्विन्दू यथाक्रमं॥ न्यस्य दल वल्ला विसितष्टा ल्हा ह्रिमद्धितं॥ विदिशान्तुव
ल्लाविन्यस्य कपूर्वा॥ किंज्ञा मन्त्रा लक्ष्मण स्याविल्हा नाम कृत्य गतु पाठ्य यन्॥ केतुकं विन्दू मू
ल्मन्त्र हृगावन्तुक थयस्त्वमा॥ अलंकृत स्यतु श्मन्यस्यक थं यागादि मकृवं॥ हगावा नाह॥ श्रूमृवज
यथाकल्पं लक्ष्मकृवा ता तथा॥ अमृतावतु ल्हाना शां॥ अमृतावं हादि मीवव ल्हा॥ मध्य विल्हानल्हान
अरूप ल्हानरूपकथा नतुल कृं दं लक्ष्म कल्हान काम प्रलिवंज नं॥ हगावा हावविनिर्मुक्तं दर्हा पव्हेः ॥ २४
स्वरूपक ४॥ रूपं स्पं तथा मध्यं संग कृत्व यागिन ४॥ स्वस्था लकृत मा ल्हयस मताल्हान्तव
तस्या॥ तस्य स्वाधिमार्गस्य शीघ्र भवं तु पश्यति॥ तु रूप द्वगमार्ग स्य ल्हाने॥ विल्हानरूपता लु
कृतं॥ मन्त्र मूढं सं महाज्ञानं वीवदर्शक ४॥ अमृत कृत वक्कि सर्वेषां सितव सिविवहषिको॥ प वेर्स्कु टि ॥ करण्ड
कस्तु पातास तव बीजं दं थकना॥ सितवर्हप्रहादि वा॥ अमृत तथा वा अवन तस्य हदी जप श्रन्नूम

हिपा तिनी॥ सवर्ण वित्र [illegible] हा नाहि यस्मा [illegible] मं विस्वं [illegible] गावन कन [illegible] विस्तु का ४ [illegible] गावानाह

वक्रू वास्य ४ कस्मा [illegible] ग्रा [illegible] क [illegible] ति॥ खकू पाग [illegible] न पनवं कार्ये नग [illegible] ना॥ धनासिक याव

ति ति [illegible] यात्का दनं वि [illegible] का य न [illegible] वस्तु मन ४ [illegible] वो दि मापूत सं विन वा॥ [illegible] ना॥ तिवि

धी कृत [illegible] जिन भा॥ रूपं वे नाव नो [illegible] गृ [illegible] धदना॥ प सनर्ल [illegible] सं [illegible] का॥ गा व क नाज

[illegible]॥ विह्वान ध [illegible] वस्तु सर्व रूप वस्तु [illegible] कभा॥ [illegible] तुभा ह व ज्ञा॥ [illegible] स व [illegible] भानि॥ [illegible] व

ज [illegible] नागाव जा [illegible] नां [illegible] भेसा त्स र्प व जस्तु स र्वप गन सत्व [illegible] कस्तु [illegible] क ४ पनमग व क

४॥ याकनी पृथिवी धातु वभा तु र्सान दी स्ट ना॥ [illegible] कर्ष [illegible] धातु [illegible] ना पू व हं [illegible] वी न था॥ [illegible] का

शं धातु रू [illegible] तु पप स वा [illegible] न ना कू ला॥ [illegible] व द हि नां द ह [illegible] धा दि द व ना स क ध [illegible] व द

स्व सर्व कर्म [illegible] हिम [illegible] शेव॥ ३ लक्ष्मि संगमा॥ [illegible] स्व निर्वाण माझ्पामा॥ ॥ [illegible] तिसर्व

[illegible]

नथन

वीजस्यज्ञानविज्ञानवीजकं ४ विन्दुनादधमायामूर्ध्वसंस्थानहानाक्रान्तिनाथाननाशायनसंस्
[illegible]क्रमवनाकवर्ति तांकवंनित्यपदंस्थानं गाथान धर्मधातुकेट॥ नित्यसहस्रनिरञ्जनु
ज्ञानविज्ञानलीयकाश ज्ञानस्वावनविज्ञानस्यधिक्रमदपय॥ प्रदिपाकारसर्वञ्चप्रेथमं
विरूप्रदय॥ रवयानकाकारनयम्नाभिगीयंविद्रलक्ष॥ सिकनल्वक्राकारंदशधि
कुपायगथा॥ क्लें ओं [illegible] यातांयाति नाल्लक्षकथा॥ कामासेदवहागानांचतुर्थस्थिति
दर्शितांनरूपस्वर्णपिदयानांपंचमं [illegible] सा॥ षष्ठेयीरूपलासमतसफलंधर्मधातुकंग्र ३१
[illegible]नतस्वक्वानांरूद्रलहल यागितां [illegible] कमनाहल्वावज्रसत्वमहारूप। सर्वगावे
ववसहनाविशुद्धिस्कधनासूना पश्चाधकेकरदनदवकातांत्रकथन॥ एक[illegible]यमनदवानां
स्वलावतविशुद्धिसहज्ञान क्लें [illegible]कृताविगयाष्ठनं॥ स्वसंवयाप्तिकात्रिजिनानागुह्विनीनयगुबा गयुष्
विमूयमूर्त्ता॥ विषमानांगुजलावलादस्वसंवधंपरंस्वरूवं॥ मूपविशब्दादिपयनप्रतिमासंगः

कावि चित्रवर्णाहि यन्तू स्वात्तु ॥ समन्त स्वप्रातुल सिद्धि वर्णा नैव चिव ज्जिमहरताबारू ज्ञा मदा प्रमाम्य

सर्व्वथनाथं स्वयं वा र्धं व जिनं ॥ श्रुत्वैवं युष्मक वर्ण्यातु कृत कृत्स्नाम हात निधआजतन्त्र ऋन्दी लपव

संकार्व शं कार्वहिर्सूरव धा वि यव न ठलसूकाला कभ वी व हसं तत धाप्य अहतार्थ सं वला ज्ञा इर्क

नमागुय य धा हम्प्रा हृद्धि प्रहक्ता ला हृ ठ विक्षा नि ताग्य य ध ह्वन्नमा धाप मं स र्वं स्कन्धधा ला दि लक

लं ॥ वै धातुक नि दं सर्व्व हा ला ॐ स्कन्ध समा हक धातु धा व व लाविनिर्म्मुक्ता ज्ञी ॥ विनैश्व र्य संज्ञा सध क

धातुस लोक धर्माधं स र्वस्य क्रा नि हृवन धा ॥ जू जि विकल्प ठ सदा ह ला नि र्व द ठ स्कन्ध नि धय ॥

सु हार्थ नि र्व यात्र का न्त स स प नि कल्पक धा धा धा वा गाप्या विकृतु द्वि त्वि ज्ञ य वर्णा सा न हृ ॥ प्र ह्ला

पायस मृ का सास धर्मसंगाप वा स्कन्ध व ठ ॥ जन्मनी हे व सिद्धान ठ लवा स कृ त अमध स र्व कल्प वि

निर्म्मुक्त ठ स वा स्यप्र वि लोचन प मा धाप मा दि या गात धा कृ वं स र्व भ व हे ॥ धर्म धातु समस्त का

नकान वि त्या वि प थि त ठ ॥ प्रतु कीन यथा काम नि र्वि श फल नतमा संज्ञा मार्थ मिदं सर्वं ते धातु कम

नथमा

श्रुपकश्यमसम्यक्त्वकृपां कल्पनिहन्त्री ॥ सर्व्वधर्म्मा ६ सम्पूर्णनाकल्पवर्णा निरूपणा
के विहितायवृद्धिपूजाधं सम्वा श्रोयव्यव्यवहिता ॥ मलपनंगावजं धप्रहणाव मितायं
या ॥ जन्मा द्वेव महायानाक्रूना पूर्वि समाकूला ॥ मात्रि ग्रीसर्व्वसखानां मार्गे वक्रमकावि ली
क्रिप्रसिद्धिकन्नादि व्याप्त्यासर्व्वगुणलया ॥ विकृत्वहृ मियाहृ नाक्वी स्पिगार्थप्रसाधिका ॥
विनातया वक्रा धवप्रभक्र या सुमकसम्यकृत्तु भिंगं हरु न यान जायन सिद्धिवनासूक्ष्म व
स्वयं तु वर्ण्या मगुलाक्रिमां वृत्ता धाक्रू नावि णक्रं त्रिपूना निविद्धं त्र कारादि काये विलंयादपं ३८
कं गां क्रिमां वविहां जूथलाण नीडं नपवासवापका पदं वितथाद्य जवधून वर्णीमादिकाय भव
श्रीविक्रमसखित जगाद्दिमना ॥ एवं दिव्यमविं रूपं पदं सत्यकं गावयथागीसुमावत कृतूतं सम
स्ककल्पना वहित भप्रथमा यं हहि तायागी निर्व्यं दहलूपत्त ॥ जगहावनाली नापसत् नगुष्क
र्ष्याबालुली लाव हत्न ॥ नाना वितथ लोक स्यमसं शेतूपी स्वयं हवन ॥ मिद्धि ४ प्रसिद्धा विलायप

सूक्तं दिव्यं वेशाखत्न मनि पूतिं को ट ग ने ध ॥ फिविम सूमा हूंर्ं यायमान त्न व कू दिन ॥ निश्चव जावूसू
क्रिका यू कों वेशाव त्न सुक्नि शुं हाकवं या गिने त्नाहि ध पी त्वाव कुस लि लं त्न हव गि मां सुमप का काबि
वृहा क वं ॥ तु कं त्न गुजत्न मत्न क्रिक लूपमा त्नस्त्व वृष्म भ मत्नू हाक हक्का ह्न हक्का स्व वृत ध त्रा धक
त्रुस प धं गा स्या सू गा त्वाघ ध ॥ का यो स्रु स्यां ते का यां ध गा स्या त्मा विक त्वं हक्का ह क्क त्वक्षपपि निसं वप
मा पयं मंत्री त्नाकूर्य त्स का ल्प वा क्रि हि धा स मा दा ह व गि नाय थ त्न स्माघ थे व ॥ विक्र ॥ विक्रप ध त्न दिला
पा न त्नुग थ कर्ठ वं या गि ला सृग तं कू ति तं ॥ म ति वि ना सं सव र्ण मव र्श तु वृ के गा तं दी त्नं ॥ पथ
क्रि त्न व त्स र्ह त्व्रुका का न स्व वृ प ॥ ना क पू ह क पा य म त्नुत्वं नेव कू त्न त्न संग्रहा ॥ कृष्यां त्न त्न क्र गा
प दवा ॥ सि का द या व या ॥ व क वान्त नवा द ॥ पव दा वां धूव प त्वस्त दा ॥ ह धृ मे तो ना का वृ हा स्व त्रा
ति ना घा स्या ॥ जिनपू जि क मा वा यी हा त्न स मपं तु स त्वा खां ॥ मा ना स्ति छि द म स त म त्रि स्वं पूर्व यछि
मा त्न ॥ द ध दि स्वा व ह्ति ता नां य स्मा वं पूब धा भि स त्वा नां ॥ य स्तु स्यं ग ह कू मा वा र्य स्तक वा म कू

तथा

लाबता॥ निर्मितं वज्रसत्त्वं न साधकानां हितात्म वा॥ क्रूरं तं हानं संप्राप्य व ह्व व त थागतानां स्म गग
हाव ताय्क्रा॥ निषिक्ता दिगू कान भा॥ स्तुतिं साव स्वरा वायंपा॥ भिविक्रू स्व रूपनष्ट॥ स्तुत्व व ला वात् व
ञ्जीनस्मा दाहे वद्धवता॥ मत्तु लं ना प वा संव म्रजामां वेस्य कर्म हां श्रीमता वज्र ना॥ थनय वान्प॥
पित्ति द र्शिता॥ धज्रा॥ विमू कि वला के॥ थ वि लेश्व किन ख वे दिहि॥ अज्ञ स्त ना र्थी प था॥ तत्र ना तन मा
दाय सं स्वज्ञा॥ जयंध र्म्मा मं संप्राप्य लाज त्रि॥ ठ ॥ एक लाप ४॥ निर्विकल्पा य पश्च धीमान् स्त्रू क
मंका॥ त्रि वा स्य दा॥ लदा॥ मि छिन संद हा॥ विकृज व वा य भा॥ लव कया॥ ति पि कल्पा॥ लज्ञ ति स्मा
वसागाव ज्ञ मतिव मूक्रू कल्प ना विहीना या॥ ति पद॥ निर्मल मां कां॥ न सा॥ विकल्प कं हेतु वृ षन
भकृता॥ ४॥ प्त स्या॥ ३॥ नि ष्पन्न हानी या सम स्तु यन वे हू वा॥ ति॥ ना ध्यम था॥ कि का र्थ्यान क्रु हू ना॥ ति स्क वं
ला वषू॥ उ स्तू वा॥ ४॥ स्वल स र्वे भ्रून स्ता दा का॥ व स्वागत स्वान रव वा स्तु नाजा यन्सु क पी ला मानेसु त्त
हा क्र नो निषु संस्तम र्व वि ण्ठं नक वि॥ ह्व फं म हा मां सं॥ स्म मस्तु कृ ति नमां सं॥ प्रा नक वान लक कं सं

२९

नयुक्त

ग्र बिवर्त्ते श्चवक्रि दि। आहृगं। स्मेक्षे बज्रं ष्वपं रत्ना मञ्जुश्री पं प्रक स्मयकृ पश्चाया

नषून ष्यस्ति तां संग मपूव। कत्र स्कुरा वपश्चारी हृ मूर्त्तिसिद्धि मवाजृ नं॥ श्रीस्वब वा

गक्ष धवा पि वि हृ वंकृस सुमाहित गं। कथा प्राप्ते नं यस्तु कैङ्कु ह्मा वा लिं हृदकृ। हावादि दि

र्त्ता रहू लं गुरु शादि वा वि नं न थाप्रा ष्यगा वा सुमावा सत्तरवा र्थः दाप यत्तू रवं॥ क बि हृं

स्कृनं प्राकृ नं व पार्थ श्चि व वि स्मो मनष्ठा। रं क्ता रहू स्वं पथ प्रा पं रस्कृ य हृस्म कृया गानष्ठ। पव

वाक्षु वृ णी री गाक्ष यषू कृजं घृ। आदि श्रि क्षिम घास्पमान मह ह धि नंन षू वा। कत्र स्कु रा व

ष्यगी सर्व्व स्कृत्रा सृ श्चि स्मा स व र्जितः। उवंकृ खा पू नभा ति दि श्वि ज य सुत्ता लं हृनू॥ सर्व्वा व

य हावि निर्मू क्र ४ हृ श्री बिभ प वि पूव क श। दगा हि स्वावस्थि ना तां कृ स्मा व ब हा कृ ना ष्ठो॥ सकल

ग्राष्क ग्रहृ करा व ना॥ वक्रि नावक्रि न ष्मू न्यन सर्व्वलाव नाद्धि श्वि ज पिस्ता हि धी यका॥ ब ब ए

वं स्थि वी कृ स्पनत्व या गिः जुनाहृ न ष्ठ वि या मानी हं ग्रह स ति नू पां का मिनी कृ नू नं। भूम्र ः

आत्म्रा॥जेला श्राष्विस् त्वासतु र्षां स्या वार्य्यपूज नावू वा थालं तं स्वसं तनव वूजा ॐ त्पित सिद्धिं प्रथम

ति॥ कूर्म्या नतु वूलिं दं वजडाग्र् खजोव वं नै वय दत्कृनतग्राकं नववकूर्म्या वं वनाष्टे सू॥ हाकृत्म

गथमा नृपिचिकव वाजहागां निभ्मल धूनथा त्वांसर्व दृ भमिव दकूगे मातु कशू ता धम जाव्म॥ ॥

श्रुति श्री सर्व लथवाल काय वाह्नि ज्ञवजाव दसानि व हसग्र त्र [illegible] वाजव मानि लिं गानं

नानल [illegible] कजाप्रदल्ला॥ ॥ अूथभव ४ संभव क्का नि वर्ण्या पावगाल दौ॥ [illegible] दवमा यनवक्र ४०

थाती नित सुंगय धडाकिल्मादिव लिंय धप्रार्फ खाल पा नं नथ॥ थाती ल्कूंभग स्तकोपीत्तव

सुंवमन क्कावै विंलूत ४ ल्हन रवर्प व सगुफ ति गाका स पर्य्यट नू॥ वतु थ्य थ्यू व नवू जकहूक

सम भग नवाव दृ हलप्त नोनाम क्रिलाव नाक थ्यत गुरल॥ माहूग्र दू गथम वा जौ अूथवा चि ज त्नेप्रात

आकिं थि हश्वसंप्राफ व र्ध्यां कर्हुयदी थ्यला॥ आत्म सि धिंयादिः ॐ नवा स सं पूतयाव वग्र॥ सी गगुण

पर्य्यटलहा धीमांस लातूय हृ हुतु ना॥ पित्तव ग्रह विहल तवल्ह काक्रदतंनथा॥ गाम कूपा

वज्रविध्माननवा हस्ता यानूवकन्द यं शिरवलं थेव पाटि याकन्दकेर्त्ती पूर्वन्तप्ता। वा हस्तपत्तु कयवज्री
वायान्तस्थिता लिका। पविध्मानव्या धुववर्म्म हस्ता वाद मान्ते नं॥ हि नूकमाता स्य पुंस्थविहृयनूहस्तमा
हिनस्था। वाद्यवज्रविशालाक्षी स्याहिषिका कृपावती॥ वज्रकन्यासि मांगम वर्ण्यांविन्तुवृस्थान वज्र
कृत्वा लावा हेवृकृ दवना याथ॥ कृलपि ज्रिपनि॥ अथ वान्यकृलाहृवां वाधि विकृ वी जान्ति कपनासहृ
कांगृष्पविनी यनं नहिं वज्राखिनं पनं मयानन्द समृसत्रे नहं नमाकृहतु ना॥ ननाव ज्ञपदेनी
ध्यं कृवन्तयागिना ४ हृदाक्ष्मिका लायं वज्ररूपरूप अमिताह कृउला स्मकं॥ नहनग ४ कण्ठमाला
मायपूस्थवाबन ४ स्मृनष्व भरवला यां हिकिन उपाय ४ प्रह्लादेवन्नद्दे नूपिनी॥ हक्किनव्यं वरेषयं पा
नवं वावि निनूयां॥ जयामनूर्त्ते वाध्मानवकाहवलियं ४ स्वना॥ नस्य वीर्य कृनाकण मकुटिनत्रहं
हवां॥ पंक्षे वृद्धकपाला निकर्हिं व्याधागावर्षया॥ पवैसंयुलवउ कृत्वा मकृटं श्रियंतं सदा॥ कव
ज्जती॥ हि वा या प्रह्लापा महूलावनयहस्मंक गायवित्रंतु पागीहर्हिं वर्यया॥ जापंतमनूका शर्वे

गथाा

वनामाव ह्ला वम ही विद्या धव स्यसूद तां ।पकरू श्री मथना नाति नीपाका ह्ल वा ह्लिनी॥अ्न्हरू:
श्रीयाती जूसाम ह्लाणि एकांवि यां स्वस्वविरू मरियू विना मा कृष्णमापध्य ला मंक्र नप्रथाया
यस्सर्वोपकव गावि मचं यस्मादवतार द हाप्नना स्यगमृ॥ या विजया निर्मूक्ता निर्वंद्वा ति
नुवतानर्या॥ अथी नेहानंदला पश्च त्र्यी समावला स्यामप्रा॥ा वियाव ननम्रा दानं त्तदीप
ा॥ह्ल स्कं हाष्टं नथअपादां पथअप्रापं हक्रयंनृ॥ प्रहम प्र नकर्रु बमिष्ट निष्टु विकल्पनष्ठ। तिक्रा
ह्स्रा विनिर्मूक्ता ह्लश्रा कार्म्य कछेववा सूर्वहाव स्व लावनयच्च थागी मह्ल कृप श्च हासयाग व
याती ता मकु ष्म नविव क्तिन ष्ठ त त पत त्त्वन निर्म्ल के स्वय्या कूनूत स्ययाया वाप्र॥ा शक्रतु स्याया
ह्लेप्त्र पूवनाव वति तिष्ठि नं हप यम त्र ना कुवी नस्विं हनूपला पर्यट नृ॥ कनूष्मवीमन निषुं सर्व॥
सत्ता र्थ हितु ना॥ यागपातव नौ॥ष्ठ यामी ना स्पपा नेन मकृ नं श्रीमच्छ व गाऊ व र्याप्रत कथ्य मपूत

मनुष्य
ष्ठ तान्य नअन हिष्ट्रा नं सर्वस तार्थ हेतु ना॥ सा धक नविधा नयां कर्हेमार्दि वा कृष्ठु हां।पिनहि

खवमधाकैतिकायमस्त्रिभकवासकायधाहवस्तुंदाकायदासहस्लसरगें सरिकगेपसमः
धाकीयूकैडवंसहुारहस्नातकायधावस्कुडंधाधिविकुसहवां॥ठंकूसवंकथितेंदवीनाथितार
खवृपनथकलामकैरवस्थवधाधिविकुखुबूपनथथसवक्रिविकिधार्कीवकूदियकूसमः
लिनांस्मूवठूयान्सलम्मानप्रसिदःलायूसंफवथजनाथसमरगावयूर्हकानथसर्वगाथम
कथजूल्लिसंचिसूसमवापंबीजपंवकीरवरहूटालसूसर्वठवलावीठमूकसांफदात्रिकायु
दलायूवीजपंवफभाठूरतांह्कानखवसंयूकैविहूनंपवितर्कीरितिनाहकावलोवसर्वठम
र्वठसर्वबूबसमागामथसमूवानारद्वूपाद्विसमयायापभवयां॥दलीहूंत्रिलाकवूसाः
दिमधाककसहिनामथमंथवासंपाग॥थथनथंवसंफवांफोनामुोमाविमधाठुवा
मदक्किलयालथा॥वामयुकंधीगानीयाधक्किनेवकमवया॥ठसयमीलतेवैवधमी
धतुसंग्रहमवाना॥मंठकायवनवाकैनमविहूखरावनथसर्वगुकवगोनहुंनम

नथमा

सृ लिनि स्तत्र सं जापहावं हृव नन घद ऊ कापानी। ह्रि हावन श॥ हा हं भा हं हृयं वेव ज्ञोम्कार्य्यंव

वर्जय तृ॥ हृदृहृनूका ला हृव धागा। विहृयनं॥ प के च र्हिय्यू पंव व र्हे समापूकैभक वज्री ठुक

ल्य यतृ॥ ज्ञ नाकै वक वर्हे न पस्ताह दा नजायन लिडामा हृन नहृ र्छ्र च्यो॥ क्रियत न सांग

यश॥ ॥तूनि सर्विन थानान काय वाक्ति हृगुवा समाने नंतवाऊ सपत हृव वर्षा नाम वतुर्द

शं नवहृल ४॥ ॥ऊ नं कौठ हृ लंद वस्वाधिष्ठा न क्रमः॥ कथं हृव नू॥ ॥ बहुस्यादि फिप्र यांऊ

नं गवृ कै कम नाल त्वा वज्र सृ लमहा कूप॥ कथयामि समासृ न सर्वं। फंतु स्यनिर्द्दे वे॥ जकाय

ए तु या प्रो फूहृ न मव्यक लक्ष्मी॥ भाषानृशाम नं वेव धतु नांवन हृथ। सदागति धातु ठाहृ लू

त्रि कृट ४॥ हृना वा लहृ ज नाव डह स्पभतु सा कृप लां कं॥ व कायं कौ नै धातु थ्य हृकावं स्य र्गयांस्क

था स्य काय ना॥ ह्रम्ब॥ सि गं कृप काय नविकृप व वा॥ व काय नव समभव॰ थकाय नम दस्तृथा

य काय मक्रि भवां कै स्य काय मां सम स्या॥ स्य काय नविठू प्राकै व काय नव हस्कथा न नावं

श्री २

४२

नगुरु

अनुत्तमं कायिकं मानसं लंघनं निर्मितं ॥ वनस्तं पूमानं पूर्णविशेषयोगी सर्वथा ॥
सदा सर्वत्र स्थितं कालं गालवामनविशेषं ॥ उवभकपादवक्त्र व्याघ्रादीनां ॥ वायवादि
प्रहर्षनसदा गतिः ॥ वायुश्चतुर्विधः ॥ विलक्षणं स्थितिं विविधा ॥ लीनश्चैव प्रवर्तनविधि
॥ लीनस्य सदा वर्तनं गतिः ॥ सर्वस्य सर्वथा ॥ एवं यान व्याप्तिस्थवनं नः ॥ अपूर्वं अपूमनी
श्री अनुयोगी सर्वथा ॥ अनयश्चैव वायव्यमाकृत्य वायुः धनगथवकविलक्षणं संवात दर्व
पादश्च कथायानां वायविकं मरम्यमं हावांतत्तीयं मानसं हावंबन्धसर्वप्रवर्तनः
प्रवर्गमत्रिगीमा स्थापितं चैवानुसंहवनं ॥ प्रभन्नमूलसं हावनम धत्तुर्द्वप्रकीर्तितं ॥
अनुमहाय दविज्ञानमूर्ज मायदधनत्व ॥ चैवाव नादयावू हातर्द्व हाय दहल्लिका
सूक्ष्मयवल्लिगिरिकं सा मूर्द्ध मजुषीहकूनां ॥ आवाहनविसर्जनजपदव नसः पूर्वा
गतिः ॥ त्रैयक्षिक सर्वबूहातां किंशा यागमागत ॥ प्रवृत्तौ वयुतदायप्रवर्तनै

कथाग

उत्पत्ति भवव॥ विज्ञप मन सुमा माग महा वा हुमरी कृचम॥ विन्मू तास्ते मायकं व पंच मंशुक
भवव॥ पश्चैम्भाजम यं विश्वंनना वजी। खि हाव्यना॥ त्रुहि मक्कं व शुक्रयापितृं नक्ष याकी
यकं व मा हु जमि तिकथ्यमा॥ त्रनपाजा मि उका लिपि शुसा ग्रहा लिवा॥ त्रकापि ऊद्विक्ष
हन द्वि पाहनम नकथा॥ त्रकानकस्वरू पहानना वजी ङ् हा व्यना॥ ना त्रिस वान याकी न
सुपाकी गम्स हाथपिम स्व या थान मांसंगाम का लक्ष्म पव नाहम्बवे हवनु॥ ऊ बसायमध ॰
ष्वबत्रू॥ अक्षाप ना विह्ला नमू र्छ हायना धन व थ॥ प्रविभां तं विकय यागी सर्व नात्री समाग ४३
मो॥ डुर्ज्वधा यपि नं हि निरूप वजी सुमा हि नर॥ डुर्जपण्य त्रियंत्र्व नव हाय पविह नं हव्या
वन त्रियतं कि मा॥ क्षो नं॥ कथं कम त्रका प दावन त्र ४ संसदा खि निध॥ हमा वा नाहा॥ त्रीन व
मन्त्रा मित्र यन्त्र ४ त्रि थ हदन वानस्किनार॥ काथ वा क्लिकूलवपू पवा अत्रमा हुमस्म क्षमा १ गणुरु
त्रकाम्हवन हां हु अंपवेश्विविवेकी ॥ नवश्रा नी हां नव धानतू॥ प्रकीर्तितं ॰

रवि ।जोम नृपिनाथ।।कामनूपस्कथक्रूक्रौस्कना वाल्कु प्रकृर्हितथ।।वताक्रूत सम्नृदिक्षुना
हिह्निू भकूमिर्भलथ।।काभलानाषिकाग्रंतुउपग्रःतमनृदाहनैं।।कर्लिंगा रखंमूरव प्रा
कंलांपाकंकछमू वाग।।कून्दो हृडूंति विख्वा गो हयर्पकाविनृ वागं।।मजाहिं समा वन
श्वेवउपकूनद्दा हउवाग।।ॐ सुवंसर्वंदभम्कुवा क्रुफसंव्यम्लिना।।हवनी गंसमा ख्वा
नामुलविषय नूपिनाथ।।प्रताचिवासिनी लिङ्गंयुदवगहदवना।।जनभीलापकप्राकं
उनृमीयाम्तुउक्तना।।ॐ घाछयतुविरवांगहवर्ष्ठीपमलापकश्चेवमयुद्वांनागार्थ
स्कन्थ।।हिंथूत्वपादपृस्वेभमगानेसमृदाहनं अंगुष्ठंतुमनृथ प्राकं कूलजाकानूनृवा
ना।।उपभमभारभनम्कुजाकिवी हिंनृदाहनं।। ।।शूभा ४ ह्यू हगा जगसवाक्राखंन
ह्लिना।।कायवाङ्कि कूवकउवर्त्तुविंशति हदनथ।।स्वानानिसर्वनाजीनांसमारव्यागारि
सर्वनथ।।उष्ठुष्टानपृताकिभानाजीनृप्य गंसह्लिना।। ।।ॐ सिद्धी सर्वगभानाकः

ॐ २

स्वय दृष्ट स्वस्वनू पास्तु सिंह्वा हिं ब हुजा क्रि ना ॥४॥ ढूं स्याह रुगा वान्नू व ज्ञो वज्र सुखाम हम्मूरख ४॥
गथमा अ थ ना वा न्नु ॥ ह वी वा लं क्रि ह्या क क्का ला क ना ब यि ला म हा म ख मि दं वा क सू दो क य ना ॥ व स
न्नुं कथं ना मति ला कं को ह भ रु व न ॥ छूर्दं स्यादि कथ मा ह ल य स्छु नं न नां कथ रु व न प
स्वी वादि य ध कूं व व क्र न्या सु ह ध प वा ॥ कथ नाडी स म्मूय न्ना ह द न वां कथ य ह भ ॥ ह ५७
न वा न स्व ॥ ज नू ५ वी प्र व क्का मिगु क्षा गु क्ष न वं पर्वं ॥ नाडी स्व न्नू प पी ० दि द न न ह मि पा
व मि ता नां का य वा क्लि रु व क्र गा न स्त्रा नां न व प्र र्दं द न्ना ॥ ख तु र्विं भ सू दा ह नं ॥ मि नाम
व य ट श स्तु मि वो पां जा लं ध व न थ ॥ ओ ड्डि स्ना य नं न थ ॥ वे व द क्रि ग ८ कर्दं ह उ या नं ॥
जू र्वू द ८ प स्व व झा व व ला व ८ पी ० ई ह कं ॥ ६ जा व वी न थ ह्या वा स क र्हं स्छू रू पि
का या स ण्नू न ष्ठ ॥ स्मा रवा गां क्रूं म स्म स्त्र थ व कू पी ॥ द्वी कोंडा कूथ वा न्या वा ह्म म लं कु
मा ल व ॥ ढूं ख्य व मूप पी ० स्तु वि रु व क्र व्यव क्लि ना ३ ॥ ख्या य वी मां ह मा ख्या नी स्छा गयुरु

स्ता द्वन्द्वं कायाश्रोत्रादि विंशत्यायतनः ॥ पृथिव्यादि समुत्पन्न वज्रधातु प्रभेदकः ॥ वज्र
स्व आम्नाय स्थिताय वज्रं पञ्च समुद्भवः ॥ वज्रानन्द स्वरूप वज्रयोगाय नायकः ॥ पव
मानन्द स्वरूपश्च क्रियाकारक लावनः ॥ श्रीवज्रसत्त्व रूपश्च क्रीडती हृदयस्थश्च सर्वादलः
नाथ वज्र कायपि वज्र दिक्षु व्यवस्थिता ॥ वज्रश्री तुष्टनाथ वज्रगैल वक्षिलावनः ॥ वि
दिक्षु व्यवस्थिता नाना आकाश क्रम स्थलगी नाम्रुपि ॥ पद्मनाभ मनवदाश ॥ तुषस्थाश्च स्वरूपमाश्रि
ता ॥ वज्र पूजाग्नि निरख्या नाश कर्तु पाप विलावनः ॥ ॐ त्रिदश स्थ हन्तभा पदेः नाथा व्यवस्थि
ता ॥ कायवाक्चित्त त्रिदल वज्रविभक्तनाहना ॥ पीठादि हृदमाश्रित्य स्वस्थ नस्कान्त व्यव
स्थिता ॥ शिवसम्पत्तु समूहानां ॥ अभिवसि सिद्धा स्थिता ॥ वज्रसत्त्व स्वभाव रूपा स्थितानां सध्व
तुनापिका ॥ पञ्चश्री सत्त्व सख्याधाम नय पदकं वह्नि स्थिता ॥ कालधर्म सम्भूरूपाक नभा
माव हास्यता ॥ उद्धियानं महापीठं दिव्या व्यवस्थिता ॥ त्रिक्रिया कर्णिका माश्रित्य स्थिता ॥ साम

नथाग

कायवाक्चित्तगुह्यमा ॐ नमो वाग्वज्राय स्वाहा ॥ प्रथमपक्षेन दं नामन्त्र वेस्य ॥ ४ पटल ४
श्रुधान्यन स्यन धमा न कायस्या थास्तु नगन तालि वक्र कथयि व्या मि न्म ध्य
मात्रप समस्तु पत्रं सकार्थि को ॥ स्पस मध्य गाना नाली गैल वक्रिल वृष्टि पी ॥ काय ल्पी पूध्य
संकाल सूाल नमो नाल ध्य सूरवी ॥ सय म ध्य सिद्धि वी व ४ सर्व रुपरु वमा त्र कं ॥ हूं
कादूलो नाहर्ने वीज सर्व वस्तु सार सानिरं ॥ वसन ०० ॥ हि वि रवाला द हि नान्हि दिन न्यन ४ ॥ व
गुवान लनुपा तु नेवा स्य ति त फा स्तना ॥ क मर्म सा र्वू न नि र्तू गा का लंकि नाहि स गुरवा ॥
वसल ब्रापा संतु स्तू स्रु मा प लो व्य वहिला ॥ त्र य श्री हरूका वी वा वस्तु का ति ल का म न ४
मान्नि ती नृप माधाय सर्त्वि सव गच्छ ॥ कायवाक्चित्तगुह्य ट न लिवि ध्य चा न तिर्ग भि ॥ गाथा
गति कवा यिवसर्व दृह व्य वहिला ४ ॥ ना नावं का न नृप्य ल ज्ञ स्व स्तु विनि की र्ति न ४ ॥ कि
दपपिवहूं का या दी र्व मा ना छय हि तथ ॥ क दे वा काव नृप ल लिमा त्र ४ पूल उ स्या ना ॥ ल्ल

४७

नयाक

सुर्वदा॥ सीमाक सध्याम्ना पि हिमा लयमहृ स्थव ना॥ प्रनाधि वासिनी साक्षिना ॥ ह्रैं

म्ला लासु सूपि टी॥ स्नूयंवह नि या नि ह्रूंग हृ दवगा स्त॥ क्षि ना॥ सुमा ना॥ वेप नी॥ वि खाको

डाकिनी पत्र मण्डवी॥ ह्रौ मक्षु वह नि या नाडी लाहिलाहतु दायिनी॥ प्रह्लद वा हि नीहृ

वर्क्षे ह्रौप सम्मारवा॥ नास्माक्रु लाम हृयी फांगांनि॥ मा गम प्रु की र्हिला॥ दनाय प्रम तीम द

स्त्री स्कु ला वद हिनी॥ सिं श्रोमम् सिंह्ना व सराका वा क्षु वा हि नीसमला॥ दवना व ह नि म नू ॥

ला रुपाव की लिवि नि हि ला हूं॥ कूलादम्सु मनक्कथ वाल सिं हृ लिनासिनी॥ द्व हू ना स

मसू क्षा द्विनी य प्र कवलं॥ ॥ ॐ नं कोतु हृलं दव अधा मामतु ला दिक सं कथी

हव हू॥ हाम कर्म कृज्ञा नामि क प य खमस ला हृ वा॥ हमा कनाम देव नं हुं हू का ये सु

नडी रूपे हू स संप हृ नं॥ नवीन म तु ला नं मं व तु र्वा नं य आदिनी॥ अम्बा हि ह्रां गाह नं

स्तु हृ स्के स्कि विं प नंम्म हृ नं॥ समखा लम हा वे नव तु य स्त्रं प्र की र्हि नं॥ काम वा हि रू नू ॥

लिधुवि ली॥ अर्वु दतु नथ वासा जाकि ली पि लि ताव हा॥ न हावू क्षा नया नाज्री ठमठाव
र्म्या वा व स्थि मा॥ वास ती ति समा ख्वा ना स्थि ना सा दत्वू प ८॥ पाम शथवा ठुया नाज्री
नषभा सिद्धाक्रु सन॥ नू स्थि सा ला व्य वस्तु हि स्थि मा॥ वासनी ति समा ख्वा ना स्थि नामा दत्वूप
नथ॥ वासण्व या ठुया नाज्री प्र सि ज्ञा ज्ञान नक्ष थ॥ अ स्थि मा ला व्य व स्तु हि स्थि ना क
नवू प न ७॥ द वी का दठु या ना ठी गछी का ण्व की सना॥ वूफे व हति सा नि यं॥ सर्व
हा धि या सिनी॥ माल व ठु न थास्र का ह दय स्तु जिन ष्टवी॥ व कुर्व हतिया नाज्री
का स्म वू प व्य व स्थि ना॥ ल वा व नी ति वि ख्या ना वू प र्स्वर्तं हा चि ना॥ ऊधी पि ला व
हा नाज्री म हा वि स्तु वे स ना॥ जि स कु नौ स मर्द ना सा न शो वे स स्व द सा॥ स्क
माला फू ला दि वा स हु यी व हति का भ ली॥ शीन का कलिंग ठ पा र्श्वं ठ समा ख्वा
ना॥ ऊ द स्तु दु ष्वा वे ल म्या कं वू प्र की र्तिना॥ प्रम वा नै वे कां वि स्तु वि ष्ठां प हति

नमस्तुल्यं म॥ जाहिं शान्स हान्ता वीव क्रहिमस्तु लें महन्त॥ वाहिविक्रम हावल्लं मस्तुलक:
र्के वमस्तुल्वं॥ स वाक्कारस्य कवनूपश व्याप्यवि श्वं व्यवहि नं॥ वाक्कतुनूपशाक्यादि स्वर्ग त्रि·
यप्रवर्ल्लन॥ प्रत्यक्ष वेव शुक्रादि सिद्धजयं व्यवहि नं॥ सवाक्कार स्वरूप वेलेव वाधिविस्ल
नवाङ्गि तः॥ स्तुल सूक्ष्मव रूप्यम जाय धू ख्व रूपितं॥ वृक्षान्तां वाधिस ल्या नां॥ समयलो
दिशं नतु॥ जन्म गी हुव वस्व लं प्राप्यन मस्तु लो यतः॥ अव की नाथः कूना नो प्र ल्प कान्तं
नथ्रेव वा॥ ब्रह्मादि नाथैः दया नां॥ निव्यक्ति सं स्तु लादत॥ जस्य क्षै स्तु शुक्राथै वाक्क रूपा
दिहि स्कथा॥ हृदि विहितः जिय न हान॥ प्रह्लास्लोतु प्रसहस्र ला॥ पिडाय नन्द पदूनां स्वल्पश्च दीनां
विजय तः॥ देवता रूपी नां भगां जाकिनी नां नथ्रे वव॥ योग पूजा समाख्या तास्के नं नपूकि
नायक॥॥ शिवः कपालम नकु हनि लोकि वमू व्यतं॥ भूर्व स्कुव सन्तायव्याना ह क्षफेल लना
लकं॥ पञ्चीव ससमू दिषं कूतुश्रे वाहिमस्तुल॥ कर्मी मानूत निर्द्दनांत्र क्षा॥ त्रि क्रिकय

ध्य मात्रिबकुभकमू थात ॥ गौरी मस्तक पिंडलक्त हेवं नाथिं पथ जमं ॥ नूपवेजप
हेव मूल न्नेम ण्लुं हिनन ॥ ह्लिन४ पाद न लिवाप हेवं हा धवूना कजि४ ॥ ह्लिजाह्लि कप्ति

दयारा हं शुद्धि का लेम न ल नस्तथ ॥ बतुना काय वू पाद्दि बवूनस्तू दबह्लिन४ ॥ हृदयप
लवी धेव यतुस्त्र सूमनन४ ॥ कंकावय ण्लुवूपा हिंह्मवू ॥ गौवि वाहू नथ ॥ न ह्लिवाहा
गांसंस्तुउ नत्री गनूदल पकें ॥ स्वव लाडेंल हूस्तन नाजी गथा ध्व मानसं ॥ पम
न थागनं पञ्जु वन्द्र म ण्लु ल मूथानं ॥ म ह्लिक ण्लुजि थाम ध्य हं ह्लि नंपद्दयाह्लं नस्य ४०
न थ्यनु हूंफा ते विन्दु वूपा क्कनाहूनं ॥ नम्म लं मर्व ला का वां ह्लि वाम्मनां च ला लं नां ॥ स
ह्लिनं वी जनूपथ्यक वूप न४ ॥ सर्वपा दद्दि नां वूपं नस्ता दुद्दवन्नमा थि न४ स्रवप म्तन
नूपल थ्यवाह्लि नमहनिं नं ॥ फलेव हिंयतनां या वह्नि नंनं ब काति ल ॥ वां पूर्ल्हे म ण्लुलं तनुष
नेवां हवल्लवस न पं ॥ नदव म ण्लु ल मिन्हकं वस्तुनां मा व मरु मं ॥ नश्रि काकि नि सवी

समस्तुलं मगं ॥ क्षात्रिंशत्स हाना ॥ जीवकृहिमस्तुलं महस्रा ॥ धाहिविक्रम हावलं मस्तुलक:
ॠ वमस्तुलं ॥ स वाक्षालंकावनूपस व्याप्य विश्वं यावहि.नं ॥ वाक्षु तु नूप भव्यादि सूर्य त्रि.
पन्न वर्द्धना ॥ श्रुतंक वंव शुक्रादि सिद्धद्रव्यं व्यवाहिनं ॥ सवाक्षा सूनं पंलोवधाधि विक्र
नवाजितं ४॥ ह्लूल सूक्ष्म खनूप्य तजाव धूखवृपिता ॥ वृकानां धाधिस्ला नासमयला
हिंनतु ॥ ऊनमीहेव वृद्धलं प्राप्य त मस्तु लाघत ४॥ अवकानां धे कृक्षानां प्र प्रकानां
तथैव वा ॥ त्रक्षादि नां धेः दवानां तिष्यक्रिमं स्तु लादत ४॥ अस्य कं पे स्तु शुक्रा ये वाक्ष नूपा
दिहिंसूथा ॥ ह्वि हि ४ जियतहा मस्तु ह्लास्ते तु महत्कला ॥ पिजापतन धाभूतानां खेधादीनां
विजायत ४॥ देवतानूपी नां ममां ॥ जाकिनीनां तथैव वा ॥ धागपूजा समाख्याताल्के ततपूर्जि
तायत ४॥ शिव ४ कपाल मतक्षु हनिर्लिड नमूधा ७॥ पूर्व स्फुवसना याहा महस्रफेललना
सकं ॥ पवीवससमूदिसं कृतुशेर वाहिमस्तुलं ॥ कर्मभासूना निर्ह्लता त्रक्षा ॥ त्रिस्क्रि काय

ण नाद्रिवक्रमकमनू ण्यान ॥ तीवीमस्ककपिंगलक्रु हेवंताधियपथअज्ञमं ॥ नूपकेज्ञम
नपाया णुवमूलनन्न मणुलं हितन ॥ ह्लिन४ पादनह्लवाय हेवंहा पन्नूनाफगि४ ॥ ह्लिनन्हिकपि
हहणु हुत्रिका ॥ मनल नस्कथा ॥ वतुनाकाव नू पाधिवनूनस्कूदवाह्लिन४ ॥ हृदपंप
ण्योवीयेव यपुन्सत्रं सूफांनन४ ॥ कंकावपणुवूपाहिसमनू ॥ ताविनादून था ॥ नह्लिवाहा
गसंस्कृणु णजीम नूहल पकें ॥ स्वव थाउँन सूसलनं हाजीमण्ञाधिमानसं ॥ पम ४०
मथागनं पकु वन्ध मणुलमनू ण्यान ॥ मह्लिस्कणुषि आमथासंह्लिनंयहहाहलं नस्थ
मथणु हूंफावंविन्धनूपाम्कनाहनं ॥ ननांलंसर्वलीकावांह्लि वालनांवलालनां ॥ स
ह्लिनंवीनयपथकनूपन४ ॥ सर्वपादहिनांनूपंनस्माहस्नमाधिन४ ॥ अवपदन
नूपल ण्यवह्लिनमहनिंसं ॥ मनेवहिपानाथावह्लिसंनकाविन ॥ सपूहिमणुलं ननुष
नपांहवक्षवसंभापं ॥ नदवमणुलमिन्धकं वस्कुनांसानस्हनं ॥ नफ्ञा स्काकिनिनवी

र साध्य [illegible] ॥ धर्म [illegible] तु वि[illegible] कथा नाहि गीमत ४॥ पृथ्वी स्वर स साध्य का य नव वे [illegible]
यि म ॥ सं [illegible] स धर्म [illegible] ॥ ॐ काया [illegible] दीप क [illegible] ४॥ [illegible]
[illegible] कर्म [illegible] ॐ काया [illegible] ३॥ [illegible] सूर्य [illegible] यो ये [illegible]
[illegible] की ॥ नाहि [illegible]
[illegible] रूप की
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

गा[illegible]स्तु सहुं हुं हूं कीगपमाव हनहवतु ।खा व नाप्रभि हास स्तुमङ्खुलाधय ।
[illegible] हुं रुज्य कं लु निता नां म ङु लादि कां ।ज्ञा या ख्ने । खिल्ल नाज स्तु म लु ला ध्वा ।
[illegible] व म क्या भव मा दिय थ दि ते ।[illegible] सि तं श षा मङ्गी धर्म्म तं हो
[illegible]
[illegible] ४८
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

वाक्सौख्यो महामुद्रावज्रप्यनन्तस्वपाश्रय ॥ अनुत्पत्त्यात्तु समाप्त्या काष्ठं वंदे निर्देशिनं ॥
त्रिकायं च हमेष तु वज्ररूप निकथ्यते ॥ त्रिकायस्य परिज्ञाना स्वक्रंमरूपस्वं मतं ॥ धर्म
संभोगनिर्माण महात्तु एवं तथैव वज्रधरा निर्हि रूपाय संक्षेपतः पूजयेत् ॥ कायव्यवहिता ॥
हृदि स्वभावधर्मं तु सत्वानां यत्र ज्ञानं चित्तरूपी यतो ॥ अत निर्माणकाय ॥ स्यात् निर्माण नाम्नैव ज्ञेयतः
धर्मविरुद्धत्वं रूपं तु धर्मवज्रं तु गते च ना ॥ संभोगं तु ज्ञानं प्राकृत संयुक्ते वज्ररूपि दां ॥ सर्व ध
र्म स्वरूपं त्वा सर्व सहितं स्वरूपतः ॥ कायस्थं संभोग वज्रं च महासुखं शिवं तथा ॥ एवं का
यं च निस्पन्दं विपाक धर्मवज्रतः ॥ पूर्वोक्तं च संभोगविमलं सुखवज्रकं ॥ फलं वज्र वि
धं प्रोक्तं निष्पाद्यं हृदि तथा ॥ कर्म तु भूतभावनी प्रज्ञा कर्म निरूपनादिता ॥ सत्व वीतनिर्माण व
ज्र तु निर्माण स्कन्ध वज्र पतः ॥ स्वभाव सौवाय धर्म वज्र धर्मावाक्ष्यं तत् ॥ संविदौ तं संभोग व
ज्र कायं संवदनं पत ॥ महासही सुखवज्रं महासुखं हिन्नयतः ॥ निकाय काय मिस्

गध्याग

८ काण्यापिहितिपदा हृष्वता॥हृगाम ष्याग श्वसो सर्षप ष्ठं गि विल्ह न॥ सूर्य्य रूप ४स्मा

रव्या गा। तैर्मीति कायरूप त४॥ प्यहृत स्याधिविहारवं पीडितु हृगम ना॥ विलं॥ संसाव स्मा

र्ग। वि। क्ष्विन्तं प्रपक्षु पत स मिये॥ निर्वर्द्ध पव मंगु हंश्री वज्रसत्वस्य रूपकं॥ श्री हृदूकः

श्रुमि रव्यानं गत्रस्तुन रूपकं॥ हास्यदर्शन पा ष्यादि गत्रुत्रय स्थव हिंत ४॥ नागविव वि

वागांव ववीपि ला पूनर्वह्नि ४॥ सुर्व नाडी स्मापा राजा कितीजा ला सम्ब न ४।

ॐ क्षि श्री सर्व गध्यागम काय वाक्चिव गगुह्य सह गत्रुगुह्य स्मा ऊँ ब ४ सुहृ नीपप्रक ४९

वलं पा ऊ ४ पटल॥ ॥ अथ वज्रगार्ह प्रमूरवा सहा धाधि सुखा नैवा हृय या गि

नीप्रहृत प ४ व मा हृ ४॥ वज्रसत्वाव नासा गर्दव गा नाय श्वद मं॥ माडी वज्र विशा पं

हिं वृ ग नाम हृ विज्ञप्त त४॥ हृगवता कथितं पूर्व सम्बरं कथय स्वहं॥ वृग वा नाह॥ यामी गगुह्य

ना हृस्म ध्यसु सकावं संव वा हि कं॥ यथा वा ख्य रुथा ध्याता स सम्बरी गत्रप्रकाशित॥

स्तावसंवतीवा॥ अवंप्रथमध्यानाश्च नध्यानाश्च सप्तम पदमा समापद्यते॥ समापत्ती व्युत्थाय॥ पदमाविसमाप॰
मापत्तिमृद्धिं गाश्चतुर्थध्यानम् हद्वना॥ अथ प्रथमध्यानाः सर्वध्यान गताव वसाह ४ डरूपा पकेयतु
हगावनु याति नीगनानु॥ अथ भगवान् सर्वाभ्यन्तविजृम्भितं नाम समाधीं॥ समापन्नस्य व सर्वथा
तीन्य ३ ह्ना पात्रवमाह ६ सला व मात्रवकिरु अगाढ तुकम लाकृता॥ तस्या पकर्णस्म पत्री अवम
न ह्न गावनफलमूताश्च॥ ॥ प्रम ००गावल हहह णः ००उन निष्क ठ्ठु लाअ॥ मा हविव॰
क्ष००ं नक्षुम मन सप ठ ह ००सा॥ पनैवविपर्व हु नम्रियन्त सर्वज्ञ नव श्चा तने वविपन ब्र॰
ह्लविप्रन स्फ टप भ्रिवा॥ पथ वाक च होन स्मा पंर्स्क प्र दो यता॥ वातन हन्य नवाक विंपवि ह्ला
पकल्पना॥ ह्वशुद्ध हव नेवावि कल्पप्रति कल्पन धह वशु हंहव कांक्षिता यय थावि सुंप्रति
गायन कृ ष्यना॥ नथाता ववि कल्पा॥ हि आ का पे भूमा धनन वे हु॥ यथ पावक दयश्च श्च ह्वि य नवाक्नि
नाच्क ४॥ नथनापम त्रिव य श्चश्च ह्वि प नयाग वक्नि ना॥ पनथ नहि वश्चा ज न्कगा गेक्र कर्म न्य
पु

कथागा

कृ मृदुलविग्रहं उवाच ॥ वीतरागं हृत्य ध्यानो जनाया ज्ञ्यवी वर्वा ॥ उपाध्याय यी नमथ अज्ञ न
नी वन्दनाज्ञ हैमस्कंधे ॥ शिक्षापदं जगत्कृत्स्नं मकुर्जापंस हिकथा ॥ जाता हि कृत्स्नं
निर्विलनं नमः ॥ शिवस्तु शुभमति नः ॥ आदि ६ सामग्री हि ४ सर्वं वेदा त्रव तत्तं भय ५ हम
याद गमासृ प्रसन्नाद्धं ॥ हृमीश्वराध्याया विद्यागाहता वरा गुरु नाम्ना अचस्थितः ॥
त्रिलोकतन नमो घांस्यात्स्रवं हि लोह व न्नमथ ॥ साम्यक्रमनम वक्षा द्वता यागा ८ सर्वं ७०
कस्मानृ ध्रीन रावध्स्यादृता व नूपा हितेव तत् गुरुज्ञ स्नान कावरूपी वा रूपी पद मसोख्या ते
तस्मात् सहज जगत्सर्वं सहजं स्वरूपमव्यक्तं ॥ स्वरूपमव निर्वाणाविद्याकार ब्रह्म कास्था ८
व तानूपया गक्र ज्ञानमात्र मवस्थितं ॥ गुरुजमूरवय रहस्य सतुना किन्तु प्राकृतवासिनो ॥ ९ ॥ स्व
वं कथितं देवी सर्व योगा निरूपितं ॥ अथ सर्वं देवता नैवाल्यप्रमरता यातिमी प्र मूखील गुरुस्क
अथ लोव नामामस कीवपा गुह वासिनीच ला ना वल्कूटिः वर्वृदाव पर्दे शवजीवा ॥ अहा

महत्कुलस्य पूत्पन्नाष्टनककुलानि स्युः प्रकृष्टानि कथितानि॥ तानि च लक्षकुलानि महान्ति
कानिकुलसप्तसंख्यानि वं कि॥ तत्कुलसप्तसत्त्वकुलानि पवमानन्दकुलाह्वयानि ॐ या ह
क्लिंसं की हि म न मन मातृपितृरूपकं॥ समालनाहा त्र कहि वालपथ्यवक्ष्यवक्षानापिव
संकत्रनापि वपीत्रा॥ उत्तहि २ दलावल दवा मम गहहाननेतुं हतु कतु कामा॥ समाहिव
लोकथा॥ तस्य खनालिव्यक्तु वाचो सर्वलिसिसहिकं न ४॥ नकुलपुत्राय समहं नां ॐ स्पर्थ ८
५ ८ दवि प्रवक्ष्यामि सं पु ६॥ हवतात्कृतां॥ वह स्प पृथिवी भगो प नमस्तु कलन नम्प
खिन लिख्यकुवाचो मसर्वलालिसं हिकं न ४ स्य दा हिकं न मिदं श्रीकृम्हर्षि द्वालस मन ४॥
अथ वायव्यां तत्प्यकु समता यानथे वव प्रस्वक्षाव वाभिव कस्यान स्थान कोनथ
सर्वो हिकं न मिदं श्रीकां ह वि शुक्ल स्व ना व कं॥ वि शाव न थ वाचेव सथ नानलसंकेवव
अथ वायव्यां नितना पस्तु मा क्ता मा प ६ स दा स्किं न ४ प वैश्म नम यत्लि ८ वि: ह्रप

स्याद्पु यन तुनेवमू व्यस्य हव वष्वनाग्या॥ या ता दाव ख्यत स्या का गाता नेवं विमृ ख्य न्या॥ विपचित:
हाय ना स्कवां नह्ला ता वृज्ञा ते वि क्रौ॥ कृ न्स्यष्ठ हवस्य वे प केह्ने त स्व वृपत ४॥ एकत्व व म:
तथथा हा नन्द्र ६ प वे ह्ता या पि हदने ४॥ याल क क्का ल यातान स्व गर्भ स्का ० न्य स्यमा ह धर्म्म स्वांमा
हा थे था व ना म त थ॥ वाष्वि ष्वि हृ ड वे य स्मा ड्ता धक्त फ मत॥ आपन क्ता स्व वृप स्या ड्ष॥
स्कका यि नाय्व क ४॥ दयाचर्व ता सं पा ग॥ न स्कूडे जा य त स्य दा॥ ना ग म नि गवड्रा ८ स्या ज्ञा या
स्कूज सिसं हव दू॥ क क्का ल क्व पष्वि हुं न त्स मीव त वृपर्कं॥ ठ्ठी यर्थी अमा प्वा सिद्धि ४ स्याद ७१
मा थ्या वा य्य हं सम्ह व ४॥ स त्व न लें त व ष्वि ल न लं तु ल कि त ल ह्ल॥ स्या का गा पि गु न व
ड्र १ स्या यिं गु नमा काण स्क ४॥ एक वं व म हुष्वि हुं प वे वृप न ल क्रि त॥ प वे स्व ह्ल ल षु
स्प ना त आ नि क सहस्र ग ४ त स्या हु द क त व स्ी त हा स त्व प य स भा स्वत ८॥ प वे ना या या क्ति तथुक
र्घ द न व ग मा दि पश्व त स्या॥ दगा गा भ न यी वा ल्नु का स मा स्कु स्ता ज क क्रू ता ष्ठू त छ्य गा स पा ४॥

मनोवज्रं ॥ सुविशुद्धमहाज्ञानं सर्वबुद्धैर्विशुद्धरूपकं ॥ वज्रसत्त्व ॐ नि ख्यातं य वज्रसत्त्व सू
दाद्भुतं ॥ ह्व सत्त्वरूपमनन्तं धर्मकायश्च प्रकीर्तितः ॥ अस्पर्शस्त्वं सहजाप्रज्ञा च्छिन्ना न
ज्ञेन रूपिणी ॥ कर्ममात्रनतिरङ्कना जल्पनी हनाहिमनशुल्ला ॥ नि ना लमस्थाविशुद्धा लाव
सत्त्वनी लकास्थला ॥ वालाप्र गन सहप्रागो विद्यु च्छन्न समप्रभा ॥ दवना कानया
मानलाम कृपात्र समन्तागवञ्जन ॥ नासानं ध्वनानि क्रमा वृज्ञाना ॥ नाश्रिस त्वा नानाः
स्थाने ध्वनवामनः ॥ प्रविशान्नो गिखा वज्रसमा दक्षा विनि क्रमन ॥ पृथ्वी कने वरध
नाभिखाया प्रविशान्तपूर्नः ॥ दधाना सर्ववृक्षा नामासनं नस यक्तनः ॥ डुर्लभकाल
गमलेववधलदगादिक्रुवे ॥ नाहिमगुलमागच्छाच्छिन्ना हवानि पूर्ववत ॥ ॥
इति श्री सर्वतथागतकायवाक्चित्तरहस्यगुह्यसमाजतन्त्रे वाक्वासक्रानि लक्षं नाम पा
इलमः पटलः ॥ ॥ह्या वनू अङ्गुलि स्था मि वाक्म मूजाउ लक्म संध्या याव

नथमग

२२

गठ्ठ

क्रिम यम ह्या वल वृ हिनि छिमं ॥ यागिनी नो मह्रा समयं अवका ये त्रैत्रिदिं मं ॥ हस्ति न प्रक्र
हम स्रोतु श्रा लिमं नद्व विमादि वि रूपथ ॥ नक्षे शक्ति वेउर्ली व मृक्ष स्रा सेन न धृ द्वि नी व ऋाप्र
श्रू हेवा क्ष नाप्र सम कवेम स्था ॥ सधा ह्रा वम हा ह्राव समय सप्व न विल्क वं मदनं म यव
ह्रमा य मदय क्क मीलु न न थ ॥ गानिरव का सव क्राय ह्रा हृव याति वंशु कं ॥ आगा कि ४ प्र
रूप न प्राक्रु ४ क्रु पी ठठ मनू कं व थ ॥ अहु वं हृद्धू ख्वा न हृव्य का लि ण हृ वा नं ॥ अस्पा र्थ
ठिप्रि मं प्राक्रुं क्याल पय ह्रा व न ४ ॥ हकी कुंपि क व हृयं वाञ नं मा ह्रं की तं ॥ चिं नं वठु स
म धाकं मित्रं कहु वि का स्म न रव यरू हिल्लुा के हृ यं श्रु क्रुं मर्दृन कं म ना ॥ म ह्रा मास यम
हिक्र प्राकं दी छिय या गं ऋृल्हू नं ॥ वजी वा व अकं ख्वा नं मयक को ह्रं कमनं ॥ म्रू रव प्राक्ठि
पाछु ह्रा डाकि न्म स्रा ठु वि क का ॥ अञ्ज ह्रा मं श्रि सहु पा दी पि न स्पठु वि क्रिका ॥ गुयी
शु दत्तु व स्प यी न स्प वृ वि ध्य स्प ठु वि ड्रि का ॥ स्प य कर्ह ना ठि न हृ स्र ना के वा ड्रा व मा वि

कथमा

क्षिका॥लपुत्ससा॥पुत्रकंध्या क्रमेनं वाह्निहिस्य कृगे॥ स्फगात्रिर्ष्टः र्मयत्रु॥पावी विद्धलित

स्वा॥जाहूं तिपूत्रुपवे स्त्रीहूं तिवृधित ह्रीं॥ हूं तिसामपानत्रु यम्हतिपयंतथा॥पीहू

तिमा सं वे हूं तिहस्त्रनं पाक हूं तिमहाप स्त्रंपी हूं ति स्मसानकंगथा॥हूं तिमकं विह

ष्ठी हूं तिपातिनी॥ जा हूं तिपातिनी॥ गहूं तिवामाग थयि हूं ति वृपि नीखेंव कूहूं ति

डाकिनी नथा॥हाहूं तिस्तुशाहावज्र हूं तिगपायूत्राहूं॥ हहूं तिजूहिवादसं॥ सहूं तिस्वा ७३

गातक्रिया॥एवं मर्यै काकं वैस्कुसकोवीनसहिस्तुसाहूया॥ सरूनमजाहूया॥ वज्रगाहूउ

यावा॥ काष्ठस्कास्मात्र ज्ञानानि कथयत्व महागुरु॥ हगनानाहू॥ कथयामि समासेन तत्वे

नियकंहत्॥ स्माकेगी अहिवादनं प्रतिष्ठा नंगी प्रस्याहिवादनं गमर्गज्ञामि स्मृकंलमस्वा

ना कुस्मी स्मृकं॥ वडुकाघ्र ह्रीं घहूं स्मृकं हव ति हस्यवीतमीस्मृकं हवति॥ कोनवं मन मगुरु

नंप्राकं कार्हिय हूं स्मृकं हवति॥ अलिकनतंक्षित हूं स्मृकं हवति॥ वज्राहूकं कमा॥

सिद्धकं रवलि। श्रुव हा॰ कर्ह्नि॰ मप्य वमम्ह गंनवा॰ सम्मागाम ०॰ स्थूकं रहवं दि नालिक गौजा
किली मत्र कलिम थुलं जमकम्म मन तं। कान्नि ला न्याव स्वास नलि श्रास्न लपलि मि॰ रुष्टि
यप्रावी बालि विंयः खूलानि धुज ः जर्कव धुनु लगह्वा। सृलिकं पत्तुः रागिनी जाके नीम दकस
ट॰ गहा थलि कविनस्ड्रा। टकंस्य गृती जिक्वा वृग्रक्कि नमि धू कं रवलि। रप्सग। प्रबाहि
नीश्रागामबलिः कृ८ः अमृकः किवलम पुष्य॰ लम्बाद वदन॰। लस्यमि स्कं रवलि निवा
श्रेहृष्णि। विहृप्नि वृष्णू वढिलि। मया थुम ग्रियापर्वता॰ स्वा रू॰ स्पिनान घः जग्नु साश्रृव
यवाः वदनामूजा वाजिका जिका जूदलाला॰ पक्कि दंशः वक्कि दंश कंजामाला वलावायू
ःसनापलिः पत्तुः मृत्रल सम। स्वयं वहु थ्यपज नहालुदं महाक्र नमहापत्तुः कठ०लि ः
कपाल नां०॰लितवः ग्रा०॰लि वली वर्ष॰ मह्नि वा। ह०॰लि हक्नं क्षविहा०॰लि पर्षा य
ः सृष्यका०॰लि नाजपूजप॰ धृ॰ कृतिहि०लि॰ मखवस्यर्गनं थुक०॰लि। दकस्यर्ग नहुफ

नथमा

मिनि ह्ना मिनिङ्क विमुव र्ष्यीयथ॥ जी का लजा थ॥ त्पस्म र्भननमेथु नेकूनु स्वनि उङूस्प
र्भनि उवं कूरू सप्रेमें वाफू ङ्का म्माह्ना नें॥ ॥स्मा कूवा ल ह्लाटो वपान नीक
थिनसुदा॥ वस्पावा भासनाद श्रि४ पूरू ह्री छो वा वा मन ४॥ आका ष्ठि र्द क्रि ाहा ा
नी वर्जु र्ह्य नियाउप ११ मध्यसास्कूरुना हृष्टि र्थ्वे वनासा कउकुवा॥ नि र्यन हष्टि र्थ्वसा
वले पूरू ती होवनासप्त्र नथापान ाय बकनेव कूस्कू कन वणीकनना॥ पूनकन ७४
रु॥ आक्रष्टि स्कम्हु नामानिकन या॥ पानना स्निपव्कूरू स्ूव ण्य॥ पृष्ठप्र कीर्तिना॥
आक्ष्टि वर्ज ष्टूक्रम्रू स्फ्रुं नासू ववाह्रू स्ना॥ ष्ठ भासा ह्रा त्यास्यावा नलिंश्च नि नाउ संन
य६ आकिवज्र नक रू या॥ आ विरूपा वूरू ब्रह्म्य ६ हपा ना वा र्व्य या४ प्रसा मप्रानिप्र
भा मो उीवज्रस्वा दिवा ान्न॥ द्वक्रि नतुङ्क्या विनय नाका ममासनारूा वन या क्लिप्न नयुक
न्ति छि ६ रूवनि॥ वामरूकूपानपनसे न्पपनज याहवनि॥ मानवलू हन्नय नेनेव या

गोन वामवक्त्र ४ स्पन्दन सहस्राया ॥ ओं श्र्यादित्र पराव नया ॥ तस्मि त्रिष्ठा हि सिद्धि हं वालि
दक्षिण वक्त्र ४ स्पन्दन संहस्रया ॥ श्रीवज्रसत्वादि पूजन तिष्ठा हि हं वलि ॥ विनान्यव हाय
न लोक प्रसिद्ध व्यवहारी विपिसि ब्यालि ॥ एवं यामी लौकिक लाकालु ना सुगीलि सिद्धि
सा पूजा बिन सिद्धि शुलि ॥ इ छिम आह्वानं श्रीप्रहा पाय सीलन य थास लक्ष्म्यामूर्ति मा
न मानु सी उक पाल क्षिं सर्वपान्नु व्याप्य विधि व कृ ॥ श्रा कर्ने लक्ष्म्या हाव यक्षिवाहेस्य
स्तुते स्क था दिव सिमाका सहस्र पं ग ० सव वक्त्रा निरूल्वा ॥ श्रीवज्रसत्वसंयाया संजस्था
वालु संपूटे ॥ वामगार्ह धव ४ श्रीमान दक्षिण दिक्षु ज्वालिन ये ४ स्फुटं ॥ सूर्ख्यं नथिस्कूप
य हूं ऊं व ४ स्व बम्रूज्य यक्तु ॥ सर्व्व पूजा सयासिक्षा धि द्मलि ॥ वि ज्ञ कपाल ॐ हं शीक्षपधान्ना
नुष्यमस्क का ॥ तत उहुस्य लक्ष्मी पूजन पूसकानां काका लक्ष्मण उव न का गावे नानासिद्धि क
ये पर ॥ अव गतु जौ स्व सा धवा विधि ४ ॥ ॐ स्कु या या ज्वा ज्ञिनूप धमा हूं च लि ॥ ॐ हं स्क या व लीव

कथ्या

ईश्वहित्व रूपधारी भवति ॥ ०॥ कृपाख्या नमार्जी लगर्भ अल रूपधारी भवति ॥ ०॥ स्कन्धया ।
स्त्रीपुरुष रूपधारी भवति ॥ वितिमूरव कुहल मध्यगाका नि विकानिले दीपिक छ
छलहताक्रि जगादलाभं धूपादाव नमस्ति ॥ कनकस्थ लक्षा तु लंगाथि विनव वाकूल
शुभ कलानि ॥ जाव भयति धूपालम सकं सव नाव वं लोकं । सिकतुवगाभा यम्स्लं वचित
मूस्थलहं वच्छ खिकस्यालविवणन हागापूजेयहि ॥ कज भोना गं भवति । दिनकन इ
गंध स्थ काम्स फदित्त वाल वीन थ खाति का ॥ हिवि नम्य गर्भ द्विष द हस्ता स्या हव कानि हापी ॥ जीवी
त्रुशा ॥ प्रभ्रान यन समूदा ग मल्लपहव नावा कम थाश ॥ राजेन्द्र कक्षमद नहल्ल नगास क्षयूकं ।
कूपयकि विष विविर्तं ॥ नतु लका यनगाका वगाहथा ॥ नद्विव सुजा नव लह कव वर्हि स्कुगाव
गार्हगा तुहिकाशं लस्कव यथा का मपि वद्भिसंव जपा ॥ हिविव ॥ हक द्विमूरवा हि वक्षोथ
लंस्या कककमाद पद्दलं बनिर्विहिम्कपालि सपर्णा ॥ द्विषं नागस्यानि ॥ एमग्यानव जि कवहिँ ॥ गावस्क

कृताद्विमूखादिपिश्मितकंकार्थश्च प्रासिफउयनवाक्षिरवनमपितिर्विम्बहवीती॥
नश्रादिविधिसमाहितवालकमूलस्यसफसफलातिकृपयकिरतसवाउर्थपा
पाधिवझ्यानि॥शुऊगाद्रुवकवठ नाउउर्हनिपयकुहागासयूकठापयप्रपूकमा
थंहाविदयकनाक्षिहाकस्या॥जूथवाद्विकद्विवसहीयूठपरूथहयस्यांगनाद्विधि
धुषयनिषपांनान्मथा॥तुवगारवयबंध्रनिहिंग्यालनिगयपक्षानर्दाउक्रयासहिं
उम्वानयानि निरक गंहगातकायात्रिपुविसफाहानु॥हविलीवनाहवर्वसगद्धनादीर्घ
कंधना॥स्कीत्रिविलुवत्तमपियागावत्रासफाग्ग्सलसूवाटपोत्रि॥नकहयामानकसू
मंरलाटकमह्वनसवहिथंतुवगाद्भूनर्धकंधगाठीनयूपंसलमास्यदर्पहांसुपस्यु
मा॥हयरामसहिघवगाहतानवखवगास्तुकवउपूटाश्रिनायर्धःधठदईवसांविक्ति
(श्रीहलषांपूर्ववनयभण्ल॥जकाटकवीरुनेलुकी यथा॥सूवहिरहूमरुनानु॥ पमथगिदर्पि

नम ध्वनू पाहि हृदय हर मानि ॥ अंजलिं नम्यानां मनवूज स्कवगारू लंजं काटक नै लकल्क
न पीश्य कि व पू रू षं हिक्वां प्रतिकेल मक नाथुजतिम त्रिज लोकाय्दूव ने लल पाटलाप्र गथाम
३ ॥ वव ल मल संप्रल पाद्कम किन गागन संह नजमादिक याहकव माजलोकव
मांक्स्रसमकव यूका कववन धसंप्रलपाल वानि हिमलीन लं दहन्तां ॥ उत्क्रिय्य व
दन मश्चन्दूदस्न कं प्रविश्यज लम ध्वस्ताक्ष ०ंं वह वनमछ्मन्ति छू दिश्कय
धीमान् ॥ स्यानाक वीजे ४ पूर्ण्ह कल्काक्म न्यपा द्रकायू गल वाहू मिव सहि लापवि
पर्यदक्ति गा विशुष्कं ॥ नवनीतरू क्ष ले मिक दूर्गं धमीतले लकल्कं न सकल प्रा ७८
नायंगाम् मति न शान कुल कं द्वीमानु ॥ वीजानि कन कविनपा तूपू गवू र्ण्ह कपूनावि
नि काकि लाहि श्व क्रं र्वेकि नत प्र नप्रसातय नंगु दाव कालाहां क्रिकमा जा वकपिश्व गुरुक
पाक का कानि नकुल शाला लिङ्कू स्मृति ठनमव र्वा हिचू म्मार दक हिलि मातु लंजं ॥ ४ ना हि

वसर्षं ला कानां एभमायू लांयु लं छि कदक्कि लपक्ष संयूक गयनेनपस्मस्व विय लाविस्स ऊटि ग
ने गत्रा नव स्मा वांफ नकस्त्न मा ठु लं गेक्ष पावा वन हिस्मास्त्र वूजानां सरूह मार्द कूवूस विस
दफ गाल्क कर्म भाहवति॥ कनकस्न लसादायम हा सम य मपूरा वू हि मित्रायि स्या खा नपा
नव याऊ यकू क्रु भिह स्लं क्राउ मठे सफा हास्त्रि यठ॥ कदूर्ने ह्र नास्पंगायि हा पिवूस र्दक्ता
घलि नगा वा संग स्कू न न ह स्कू ने वा॥ पूलु वन का ष्ट न दष्मा सस्स गह क्का यस्प भिन सिदीयन
गम स्त्रा कयलि॥ क क्का लकपक्ष गत्रा स्क सनि युस्कू याश्व कें भन की कृस्य धरून ककाछ्ना प्रि
प्रकाल्पमिर्द्ध मंदरधा कक्षा नगक्ष यया ६ पूरूष याथा स्त्री याम क्षासन यु फ प्रक्ति पक॥ न
करू भाखिंड्ढ थाहवति विह्लानह्लानं ऊथवाव भीकर्तु काम ठस्तिठसन माहदि सफु मव
याव्र्ह्रि कता हिलवूर्धूल व भंनय लिख्रकाम पि त्रि ग विज सांविला पूक्षना थी विरू क्षसव
नवूप स्त्रि वक लक ठु स्पपीलु पर्दं कत्या हस्कू नास्कंक वातिसी हागधम नहाति पहन कभी वू

दक्षी दाक्षुल ल लसह दवाच्व दक्षु लहा विकाल्समदन लललाव च्थक्रु क्षक्ता। पूर्कुंडली
ऊपर्ह्मू वनू दक्षी दाहुगु ल्पल्ह नसहलाविनं वूर्ल्हुं द्रक्ष लन्जगा दंगादं गा भावसंतंनय
नथाग (ति। स्पर्शनि न वा काक्काउवनी लक्ष्मी शूलकाव व कूर्हवह क्षलसह्लाविन सयक्षु लल
नाव च्थकृ (हो।। सिन दिनक व ग वूमजि ष्ठाग्व न वटक ख्वांवासकृ न ह वदक्षेपिंक्रुतु व न :
पिवक्षयति।। वामइली वू द्क्की क्षीवा विकाक्षमदन्नविह्वाविन मिजुंरवयी वयुटिका यंजाव ऊग
ल नसहसं ह्मपम।। कुल लेनाव गंक्रु (दोन।। वृष्ठमहिषस्यनासा वक्रु ठ कनकाष्ठन्न संस्थ
विक्षुाप्ति नाहस्ममकांपम: नाव लुयविति दक्षानि वीपिगं फननकयसन वूर्डमालमदन
सूरपतिक न्माव गंकृ (होन।। संस्पर्शना या लीकवह ह्मान्नं।। ।।खवगपानि वक्र सून
पति (भे पतिला नाव नाकालसंपूर्ग ललाठ नदवगकयानिक (होस।। सिन इ वीम इ वीस नायुकृ
हवा व नननिलकी ललाट मनगर्ड वसकवाति।। वहदर्शभना।। ।।खवगपानि वर्क्रस

वपतिलापंस्रव नगकटिकानूदलीहस्रलनराविनवूर्हिं नवपतिलु लना वर्णक
लन ॥ अतिनवविनाहिनाम्नननय पृष्ठं वन्धूकाविनहिवभिवपृष्ठं मनेनववापाद
यधतुलपविनिरस्मनादन सहनाशिना नारी· कृष्णनानूग स्कृति॥ विष्णुका कासन पाले:
समापं लक्ष्मनूदलीसहनन्द कीर्तंहस्रलवा विनवूर्हिं वर्णकवा निक्रलन ॥ ड अथिल
कन नहावसनाहीन्द्र पवेस्तु लेर्वगमखालि॥ सूकम ह्रु बालितकक वलेन ॥ जीसक
लाव प वन्ध्र नवेस वन नालासयालिवेस्तु लेथ॥ अपिसले हायावका वे लि लकन ग
गधली कृत ॥ अथ कि वीगं लिनगानिकाले कावीजसहश वनपंचनामू ववा हदकाविम
र्यपृथ्वा नगंडू ॥ पश्यन नूख्यातितुख्यातितु ख्यागवा ॥ लितकासूदयकव हाहानं ॥ अथवातु
लिकां कर्तुकामथा॥ कृष्णमा क्री लाम ला यावन कृष्णू किकृष्ण कावावना कृष्णवना हवान
कर्हिपविकनयन कृष्णकाकालफवकृषा ॥ कृष्णकाकिला कृ भवबा ॥ सगन भरुमयप्रस्थ

स्तग्त्र्य पट्टे वर्म्मस्थंववध्वाग्राभ्रपादां ह्नि न ल्लिकांयं पूर्यमानूपाल्हि सलाकयालेपः

जनेंकर्णिह्रा धयधि ल्लाहे ॥ हगान ध्वसाध्यय दिधि घ नमास्त्रि ॥ सिध्वाउन्न प्रयागाहूननं ॥

नथमा ॥ ॥अथ कर्म्मविधिं वक्ष्यतन सिद्धि लिसाधकाय ॥ ध्या न उपचता निसंवस

कर्म्मविधिलक्तन ॥ विधिसंपूर्ण लव नदीनसलस्त्रावहं ॥ गिविसागन गावह्र

ह्व लाम्हनन स्तकाग्र ल्लि नफलि लावर्ण स्पसा हिपव मर्द्दनात् ॥ नित्य ठंह्लू हि गिवि ७९

कलिकाजटिकासार्द्ध लासायनालसं यूका निह्ला १ थ्यताम्रशाखु निपूक्ष आसा

यला ह स्पव कू लाह ह वृह न्मूत्यलस्यक ह्र्यू कं ॥ तावन्नर्द्धप घावत्त्रववनीकं हव गू

कद लक नंव जीप समा लावि नं नासेधक कं नन्द्रवति शुल्वता मुहणी कर्पार्द्धि हागसं ॥

ध्मकृ ला यामावर्त्ते पिलाना धमापा नम र्हमा उंदयालन कनका र्द्धि कामी लयंधि नगुक्ष

लिपसह्लानं ॥ ॥अथ रसायनविधिं वक्ष्ये सर्व्वसासमूषमं ॥ सलुवत्रं समाप्ति

स्रा श्रा ग मङ्गा तुसा धयना ॥ वतु ४ समं वेव कन्तु वीरक वन्द नं थेवक पूं नां ॥ सा हि गं सि हू
कृत्यु व नूक क्रा लं वे नहि ना ॥ क्रन थेव व ॥ उनंम होष धी अर्‌ सतु पुहा पिनी ॥ वसक ग्री
ष्मं वेव नथ प्रातृ षम वव ॥ ज यकृ काल श्रम कं व हि मा गा मं नथ पनं ॥ वसन्त ष्ठि ४ पूर्व्वी
क्रू ग्री षम स्न ष्ठि नं वृ स्न ४ प्रावृष क्तु अपना ॥ क्रू प्रदा ण ग न दस्त थ ॥ हि मक र्ष्ण नाजं व प्रल्य
वं वहि मा गाम ॥ उष काल व न या ग ४ कथि नक्ष व व ना न ना ॥ पूर्व्वं नाज ष्क पृथ्या सह नक्र
सन्तु का दित ४ ॥ वसन्त वतु ४ समं वेव पूर्व्वाङ्ग सिहि दा मन ४ ॥ प्रावृषतु अपना ॥ क्र कस्ह
त्रिकं व मा लि ख ह्लि शू कृ वि जां कि नं का या म ख्य व का ना कि ता न हूं काव वयप पवि व हि का
ला ॥ पू ल क क वा य मा वृ का ना छ य म ख्य त्र ॥ नन्मादि मा ल खु लि विधा क्र र वाच नं प वि सतु
ला ॥ तस्य म ख्या गाता प लिं हि स्व कृ ॥ नर्क्रू श्व व ॥ हि न य न ४ ॥ मादक रा ज्ञ नं ज्ञा प्य स्य प न ४
वज्रा ती हल म लक म य पं वा व सा धाक ॥ पूका का यू र्दं प मङ्कं न्प स दि कि ॥ ह्लौ ग ४ ग हं ४

गअना

ह्वा८ गाद्व८॥ व्धिं कू दू ङ्‍ः८ नाः गाहूं॥ कूस्क स्कू लहू दिकू को ना लोडुर्थ्वं वस्तु सा सका॥ हि
ख्वक्वा॥ जिकठ्ठ वान्म निकाव कन्न सहृ॥ स्रूका प ण ना वद्दं लिरव्या व दिया को नाय प क
स्वबसंवृहिं अन्नयाले [illegible] हनि लन्न न द वा स्वनक व सूख लिख्ये अ गो काप यन॥ मचा८
कूम्ह थनि॥ [illegible] ॥स्वूद्वप वक्रमा॥ लिख्या का वास्वक ण हिं नं॥ म ध्यु हा ध्यविद हिनं
विभि ना॥ भ्म भ न क र्प ङ ग स्त्रा हनक र्प द वा ह यि ना लह वि ज्ञा न सन लिख दिति सा
लि पि स्वनय ग व पक्तिं कूत्वा न स्व हृ य प॥ ङू द व कुं प्रक्रि य्य स प क्क स ना व नं प द स्कू ८०
प्य पी क श्व ह्‌ व स्कू यि ला प्र अ हम स्त्रु र्व य अ प द ग ङू स्व पि क थि नं द वी स्क ल नंत्र
पा कूमं॥ [illegible] ॥ना का नम ध्य ङू द म व म त्र लिखन॥ ॐ व ला॥ लिव ना लि व ना लि व ना हस्न
रिव स्वर्थ्व इ स्कू प्र इ स्कू नां मूर्ख स्कस्क य हृ ज्ञा व सन ङ्गुक्ति का यां स लिख्या संपू स्व व श्रि नं गगुफ
कू ला ह स्मी निख स न॥ स्कू ह न स र्व इ स्कु नां नान्य॥ [illegible] ॥ अ थ हस्मी यकुं समा लिख्यहस॥

कावन्तुसं विसर्गान्तं नाम संलिख्य दक्काकीलासनाम्भूतं कुर्यात्ताद्दिवसानि सप्त यावत् मांक्षिप्य
मलिलं बध्नाति नामाकर्षयति॥ जीका अयासपति वश्चिनविधिना॥ ॥पञ्चमुमतुलमध्ये
मयूरं ध्वंवक्रमालिखेत्॥ विज्ञः ध्वजपत्रशूली शूलं वयागं वेववविश्ववज्रं खेञाकृशं वेनथा॥ तवे
लिखेत्समासत॥ तस्य मध्ये पूर्णेन्दुं हंस तुलां॥ ॐ नूमध्ये अमुकं अमुकी पुत्र तूहन॥ वज्रव न
टेके क्षं दमन्तं मालिखेत॥ ज्वरथ सलिलधयवं वाजितिमहत्त्व क्रितसर्वहं हं हं हूं हः हो॥
कालजाङ्गालिखवज्जरात्रा याद्वीर्घत्री वंचायमध्ये दसः वयः स्वयः रुयः मूयः वायः नायः दव
हूलयः मः ॐ स्वाहा लिखेत॥ ॐ श्री धनालयध्वजाकर्पटकावृधिन तस्य स्य नामा हि लिखे
जीवन्के काकाललवध्या वायवा दिभिसावयेत्त्यां धमृत्युाटयति॥ ॥सर्पमध्ये तुलम
ध्यं पूर्णाय वक्रमालिखेत हुं नधी ज्ञगाई नौ वज्राकविविक्रम्यलापवासाध्यं विद्वहे
यतः॥ ॥कूंकूंम सप्ता वनयाहज्ञं सं लिखेय धावर्धियितापार्वीतक्रान्हवति सर्वदा

नम्या ॥ ॥चतुर्विंशतिरक्तपद्मं त्रिलक्षं तु साधयेत ४ ॥ ॐ ओं ह्रीं श्रं सं न न ह्रिं ख न घ ट म
काय विधिवत् ॥ पूजयेन्नक्तं भोजनं दासह वन् कचाति सम्यक् इति न ॥ मूलश्लोकमिति हवे ऋक्रं व न प
ञ्चकुलां क्षिकं ॥ वाञ्छ त्रिशरवाहनं काय वाजादि समाहनं थ ॥ निसदन्तं सर्व न भुं क्षं कर्म विज्ञ
एहाव नय कवा शि सर्व कार्यादि विधिवत् पूजनं मन्त्रितः ॥ तदिदं सङ्क्रमाह ॥ ॐ हूं स्फे लि स
स्फुः हूं फट् ॥ ॐ ज्वल २ हूं रुः रु २ ॐ ज्वाय २ स्फुं २ फट् ॥ ॐ ज्वालनय फालोवन् ॥ विया नाग
हूं फट् स्वाहा ॥ ॥यथ वर्णे लूम बीजं मात्रे वर्णं दर्शनं लिक्षथा ॥ क्रूक वाक्य निं कृ ख्या रव ष्ठं
वाहस्फ का व्याप्र पश्ची वसामाया ॥ ष्वे के कालक न सं हिन्त ॥ प्रथमं हृदयपथे व द्वितीय तु शि
र ॥ स्तृतं ॥ तृतीयं शिखायां दद्यात् चतुर्थं कवचं हव न ॥ पञ्च मन्त्रं हव नेत्रं षष्ठं वास्त्रं मन्त्र
ञ्च ॥ वज्रवाराही समापन्नं चतुर्वाहु विनाजि न ॥ पीत प्रज्वलं कृत दिव्यं वज्रार्ध फलन मः
पिञ्जं ॥ ज्वालिमालाव लंवीय रवं कांग न संपृक्तं ॥ आत्मा नं हृत्कं कलाहस्तं कर्मण ष्ठम
८१

नयाग

नगुरू

यहा ॥ हृनम्हर्त्ते हृदि श्व काष्ठाकाकंतु दिशानाम्हन ॥ क्रौ धजा ताकू लं श्व लाविकमालकटेरि
घनौ ॥ विद्रुगाभेन स्वार्यस क्रीलय नर्क्कीयाति दिशोस्य वीन्द्रवास्तु नमानु आना ॥ जवंसत्व क्त
कवबा ॥ स्मृहय सिद्ध दजोवयो ॥ नमो मन्तु लमाहि खेलू ॥ वक्रुवनु नस्तु वनु धीन नस्मनश्च प्र
तिष्ठाप्य ष्टघ्नकवा ॥ चितो ॥ विकथ हितुलमतो लिखिनतां किनी वक्रं ॥ कहिलिकायां नपसदी
नमपनमस्तां केनी न था ॥ त्रिशूल वकांक नघाव पीनव ही समनकनथा ॥ वक्रमस्रु भस्मस ट
नी मपनके विधिक्रमं ॥ मद्दैतीपूजा कृत्वा शूहन क्व उंछ्ं दं वक्रभावयनू ॥ अमीसूकालम
स्तुसस्त्र सवाकादीन्नमिबा वपनू ॥ ददीजुहं वाद्यन संभय ॥ विपूजपाविहं नपमयद्रं ॥
अथ वाकास्नुपात्र निरवसन ॥ पूष्पनकुत्र मानसो वमन्तु सा श्व ॥ विदाहिन धावनाहिं सूदके
पाणिलं यत्नसी हत ॥ हस्तनं सूक्ष्मिनाकाभंपिवनमगाह क्रिकां ॥ कू धाधीकलगुनतुधांवृधा
पविश्र मस्म्भांनेवनरूलमास्नुया ॥ अवविधिनावहिनंम मा धागी समाहितः ॥ ॥

ॐ॥ इति श्रीमद्देवगणनाम ब्राह्मिकवजयहस्युत्तसमाप्त॥ तत्र वाग सर्वज्ञानोदयानामा
गथगा कृदृशाधैयष्ठल्ल॥ ॥ह्यगवह्ल्रुञठुमिका मिजयहामादिकीदृणं॥हृअग्नि पृष्ठि वषथ
हिवाव वलिपूजादिकैकथी॥शहलूवजयथलखं हामकर्मादि लक्रथं॥ह्यादीमन्त्रीजयहृक्तं
पश्चलकेर्मसमानहहूजालीनद्वेवप्रत्यालीनं हसक्रुप्रमाठेसूठयनु॥ह्लवियिलाक्रुठोदक्षं
हस्कहूमाविलूयक्षागार्हशिकवनरनें नललपयनु॥पार्श्वध्यविठ नङ्गिहिर्हे मिवठुलंगुलापाली
हवाहिति॥पोहिकेकृतुंधिहस्कंविमालाक्षागार्ह शिनवरलनन हैपयनु॥पार्श्वद्धयाठ।फधाहि ८२
हलमिवठुरंगुलपाहीहवाहिति॥प्रमाणविक्रिर्हहसकमकननलागार्हवठुकस्त्रमस्तंगुलापा
लिकं॥पीतपुष्पप्रकरं पीतगाश्चानुलेपन॥जूहिवारकृष्णुप्रस्त्रंविणमूंगुलविलकीर्हदशंगु
लमध्यगर्हंगुलपालकंभगनांगभवलालपयधिति वथ्याकर्धीलयाठसामान्यवाकृतुलंक गगुघ्र
वमाह॥सुर्हवञाकृतिपीहिकंकृतुप्रमाणकृ॥ठार्हमार्हमातालूवपंपालिंकलावकगाध

नलपयस्याहुक्रवर्ष्टिवन [illegible] नपोछिकेनथ मासह्मकृष्ण्वष्ठिं वब(यम्रकं नतो
कवन यथमयगथनथयकृलुप्यथमाव।तोनथअहुष्ठ दिव्याह्यागकथयामिति पूर्वस्यादिशि
हवक्वालिकृलुंवगथकुलुंकुयन्निल।।सूहिवासूक पाश्चिमायाकर्षनक्तुडकुवपोछिकंनआव
गथकथितपूर्व कनमाव वृपगेधाकृश्रुलिकथयाविति।अथनानाव्रीहिविधिवक्ष।अमहि
नगुवधअन्याविलिहंथ्वतंकुयवक्लंवाह्नक्षीलयनमधूलासहपयेकामनयेहवंपं
वक्रीवहकृञ्ञसंपह्लवामह्नी।नाथकृपहलगाजवाधूक्रीवयनाकानयात्रहानव्या।।डहू
म्वनपलाशुभलादिकनत्रिभ्रक्ष्मस्यभार्कमनतिक्वाव।पूर्वाहिमस्वछिलाअ्छाकुवण
नहकृपाहु।नयहनुलत्याविभांकिहवकि।अथपूर्षिंकर्ठकामलिसकृष्णमासुवः
कगमलाव्ववाहिवा।हवथवंसमिक्षकांकिऊमलिद्रुमाहा हस्नमात्रायताक्रीवयनाक
गन्धकूर्ष्ठीमसलिलाहितास्रीमधूवयवमाव।स्वधिमधूवनाल्विताभनपथ्याविलस्व

नयना

लः प प्रणा गाः कं भवं व द्वी हि थ ।। न ल द्वू ह्नन्व व काष्ठ न्यागिं प्रज्ञाल्प कर्मानु साथ ल दृव का
मालम्या ॐ कु वाहि मूरव व हिल्वा तह ग्रं वित्रि क्काल नूतमा हिनै न क्ष्य ह्न्यात् ।। पूर्द्वि स
फा दव्व नप तिर्हवक्षि ।। थव पीकर्तु काम क्लिलव क कृष्ण स्य वा प्री पंगु ना
गर्क गाव व म्य का नाव कृल वा न माम ह्ना र्वं व म धू हु नशा जिनो दव ता ह्वू वटं वे प पि
प्य ल्हू ह न्तू नाहि हि थ ।। पादेपल वान्य गुला नि सह्न की ।। गुग्नु लुहु क्मा ४ क्री वंत्र वे ह्न गा ८२
आ वील नत ४ ।। स्त्री पू न्व प ग तहव शा ।। क्ल निर्भ्र य ।। व क न्व प्य साल भव्य प श्चि मा हि म
खाय्य स्पना न्ना ह्न हो ।। सफा ह्ना न वति न याव क्री व मं वा हि ।। सू थ अ हि वा
वं कर्तु काम ४ कि लक्व स्य मं सा दिह ल्हे ठा कृ ह लकाल का हीं कू नै ल ना ह्ना ख व धिन
मित्र कै ४ सह ।। का लव कस्य कृष्णस्य क ६ फ क दु क ति का ह्री निद मा गु ला नि ।। न वा मपुद्ध
ह्न व याव नाहरह ल ह्नु ल्वाव ल ह्नु कं ग ना व स मग ता ।। स र्व नै ल नाला ।। अ ग्विं ना ।। स्नी स

सा हित्वा ल दक्षिणमहिमूत्रे सम्पुटं लवणं तं हुं हूं फट् ॥ यस्य नाम्ना दिनत्रयं तस्य म्रियते ॥ त्वा
हू काकं हित्वा त्रिकाल नित्रिकूटं कृत्वा ॥ तं होम व पूर्वा के ई धो ख ॥ ओं हां हूं फट् ॥ तत्र
या यानकृताकं हृदन्नी यत्न ना सेन यथा ॥ ॥ अथवा इश्वा त पितु काम ८ सर्षप मू
सैमालं तु प्रथ थ लिखि त्रि तां ॥ पूर्णिमी हृ ते लन नाम सा ला व काव य ॥ कां व न स्य
भृङ्ग वा य स्य वा हिन सह ज नं ॥ यस्य ना म्ना हुं हूं फट् ॥ तत्क्र म इ वा त्य ति ॥ अथवा
काकमास न डक्षु ल तु नह म य संयुक्तं नग न मूकः ॥ पि चोत्तु ला यस्य नाम्ना वि का ओं ह
हूं फट् ॥ तत् क्रम इ वा त यति ॥ ॥ अथ स्नात पितु कर्म का मष्ट न स्य मा सादि ड्वा का दि
कोष्ठ सर्व त्री हिते मृ धिन म थू ना ला त्र काक पक्ष न था जितं ॥ तद् काकस्य का सादि ड ष्ठि ष्ट
दन्त का ष्ठ सह धत्तु व श्रु कूर्द यस्य ना म्ना हुं हूं फट् ॥ सर्व हिता व वति सर्व्व कार्य्य ॥ ॥
अथवा ह वि जा ह निमा ला मन्त्र ॥ पि लाव न नन स ह डक्षु ना रिमू र वहित्वा यस्य नाम्ना हुं हू

थम

यात्मसमस्त क्रिमी हरेवति ॥ श्वानकुक्कुटमांसं मार्जारकूर्म्मलबधिरमा अपित्रूमर्दका
शूनामिं प्रलालयपस्यनाशाङ्कूयात् ॥ संग्रमण्डलू वहरेवति ॥ ॥ नहासमथ्यनस्
वयालो असतमक्षस्लवयावत्रि संधयरूङ्कूयात् षष्मा सान्तगुलाधिपति हरेवति ॥ गस्तूकमा
रूपिणगं शरूयात् ॥ सालत्रयाइर्म वनिताव स्यातरू वाह ॥ गोमांसं नूधिव ना गा असहस्र
शरूयात् सर्वं ग्रह वनिया व क्षीवनसंगय ॥ नरव मांसं हनयालो अवामहस्तन
शरूयात् ॥ वृक्षापिव जमायाति ॥ किंपुनः कृद्रमानुषाः ॥ नाव्यात्रिष्टीवनदर्भकास्व
रुहाघर्भनंनथ ॥ सद्याकुहामनव जमातयति गर्दकुसमंतुक्तनुरूहं मन्त्रमनूष्यके
गमंघृतं सद्याकर्ष त्रपवंहवक्षामन ॥ ॥ काकपक्षैः कटगैसनालोज अवकुवा मे
पसतालाश्त्र हरूयानसधा श्वानमांसं ॥ अभितृकिकृषाणुं मूत्रमावषदाचदिवाशिकाः
गहलमालपत्रैः सहहामयपतृ ॥ मूलववधंकगाम्रसीनसंगायः श्वानमांसं वज्रादंकन

८४

नयुक्त

सहयस्यनाम्ना हत्वा जात सफा हस्त वर्ण माप्नोति॥ ॥अणुमांसं वै नावने न सह त्वा जो हत्

यात॥ सफा हस्तन पति वर्ण माप्नोति॥ ॥हस्तिमांसं गुक्रेण सह हत्वा जात वर्णं नपति

पूर्वं॥ ॥सतुपमांसं सहपासे हत्वा तव्य स हत्वा नार्यां वर्लभ्य पंक्षी पञ्चा लवति नाव

कंवलं काकमांसं मत्स्यनाम्ना सह हत्वा हत्वा जा॥ दिनत्रयेन व जस्य स्थापि पलायन्ते॥ किं पुनः

कूजमानुषाः॥ ॥काकस्य मांसं सपार्श्व स्वनाम्ना धकुत्व काक्ष्य क्षौद्र हत्वा जातु नमू खाद्यति

॥मत्स्यमांसस्य स्वनाम्ना हत्वा हत्वा हस्तं तु लवति॥ तथापि हत्वा हलस्थं लवति॥ ॥उ

जातिकर्माणि कृत्वा पूर्वः सु यतो कर्तव्यानि अन्यथा उपलास्यं तां पापानि न कथा विधि दापात

वारदस्ति न सिद्धिर्न वक्षोत्वं लुहत्वं न वः॥ तस्मान्मन्त्रीन कस्यापि वदन्ति कर्मप्रस्ताव

मितिनिवर्कर्त्तव्यं यदि कर्तुमिच्छति तदैव काकिसैव कर्त्तव्यः तन्नामक्रियतः सर्वकर्माणि सिद्ध्यन्ति

॥ ॥इति श्री सर्वतन्त्र धातानकायकाक्षिलस्य नहसाति नहस्यगुह्य समाजे तन्त्र नाजेहा

नाविधिर्नामा नवितमी:पटलः४॥ ॥अतःपरं कौशल्ये हलं देवमन्त्रोत्पावनविधिं४कथ॥
यइदं तेषां नज्ञानानि कथयन् महासत्वा वज्रपाणिर्वाह ॥ शृणु देवी महाप्राज्ञे मन्त्राणां कथ
गथा यामि॥ त्रिकोणमण्डलं च मध्ये पुष्पं मन्तुमानं किं॥ पद्ममध्ये दलं कृत्वा कर्णिका रूपं ग
वर्ण॥ कमलं समन्ततो दीप४सर्वकामार्थसाधकं४॥ एकोनाहि प्रदेशेन मन्त्रा धर्मो धातु४प
व४॥ प्रथमस्य द्वितीयं शून्यं भूयो नाकानक मध्यमस्य द्वितीयं पदे पदेन॥ इन्दु बिन्दु आहितं॥
वाधि वीजं नामाग स्कंपदेन दत्तं सम्पू विनं॥ अत्र द्वयं समध्ये द्विक्षरूप हृयं कथयामि ते ८०
सफल स्य द्वितीयं वज्रडाकिनी सूत्रक॥ द्वि गुणितं॥ उक्तालां वरुणी यं गच्छ कस्य स्य द्वि
तीय नाम तत्पदेन हुंकार पाजितं॥ अकल्पना द्वितीय मन्तु पदेन मन्ना मन्त्रं तृतीयस्य तुरु
तीयं॥ एकादशि त्रिंशति मनाम नं॥ सफलस्य मध्यतीयं पदेन मन्त्र प्रथमं तृतीयस्य स्वर यो मनुपू
जितं॥ अष्टमस्य द्वितीयं वाद्य मन्त्र नाम नं॥ द्वात्रिंशति हुं गच्छ पोषि तस्य प्रयाजितं प

श्रमस्य प कूली यंठसे व वहुव म य दया ॥ ह्रो ॥ सूक्ष्म हकारा हृती यं तु गुह्म पद्म सूर्षी पद्म म:
लोआहन कूलीयप्रथमं बीजं पथेः मस्य दे सवे मं बोनी पद्म मे हि कं वृज्ञा नां भक्ति ज
वनी सर्व कर्म प्रमाथनी मन्त्र मूल छाप नी प्राक वरूस्य मय बाट नी स्नाहवा ॥ ॥ ॐ
वज्रवेतावनी यत्न फट् ॥ ॥ द्वितीया चतुर्थ वा विरह विलें ॥ तथा य हृदय स्वाह ॐ खा ॥ ड
लं प्रथम बीजं ववबीतु सर्व ह्रविलें ॥ द्वितीय प्रसू प्रथम सफ मस्या द्वितीयं बोबी या जिलें
तथा ॥ सूक्ष्म मस्य य प्रथमं वज्र प वर्म हि तो ॥ विं भ प्रक्रू व यह हृ पथे मन्तु ॥ आहनं लोभी
भाक मम तो ॥ द्वितीयस्य तु प्रथमं सफ वि भाति ॥ संपत्रं बोबी नक्षो वक स्य यह ॥ द्विती या व
तुर्थ व वज्र डाकिनी वज्रासनं हृतीया ख प्रथमं द्विगुली नो ॥ द्विती मस्य य चतुर्थ वो वज्र
डाकिनी या जिलें ॥ एकादशाक्षरं गक्ष रूपी यस्य वर हि तिं ॥ पथे मस्य तु पथे मं लोभी ।
कृष्टेव भाजयतू ॥ द्वितीया चतुर्थ वक्त्र तस्य पचं ॥ भाउ मा मंग गा गक्ष रूप तथा सर्वाधि गा जिम

रव स्थितं तिनं द्वितीयस्य चतुर्थपंक्तेः स्वबलादर्पितं॥ चतुर्थस्य पत्र प्रथमं गोरोची सहस्र माप
त्र स्यात्पंक्तेः सं॥ गोरोचीनी रक्तं चषाउर्थ तु॥ चक्रा चक्रप्रथा॥ गोपूनि स्थं कर्मप्रसाधनी॥ महाव
त.प्र॥ ऊरूपा लौ नांव लकवीनतं लोहा॥ ॥ॐ तल ह्रूं ह्रूं स्वाहा॥ ॥ द्वितीयस्य पत्र प्रथमं
चतुर्थस्य प्रथमं गोरोची अहितं॥ तृफमस्य चतुर्थं तु उपवीरोचीना जितं॥ द्वितीय
तु प्रथमं एकादशमं तं तीतांहीं खा बोबी शिवाम्रि अहितं॥ पंक्तेः तस्य पंक्तेः मं तृतीय पत्र प्र
जितं॥ द्वितीयस्य प्रथम चतुर्थस्य पत्र प्रथमं गोरोची पत्र महितं॥ द्वितीयस्य प्रथम चतुर्थमा यि
खिवरी शिवविम्रि अहितं॥ द्वितीयप्रथमस्य एकादश बोबीमस्तपत्रं धर्म पृच्छिं वलं निःस्नम ८८
हा कोशवनी सपना॥ कनातिजपमाजं शंवान्न सबवत पथं॥ ॥ॐ वज्र धर्म ह्रीं स्वाहा॥
धोडशमं तं तीयस्य चक्रपत्रमध्यं अहतं॥ अष्टाक्षरा द्वितीय श्रीव बोबी जप्सेव पाजितं॥ पंक्तेः
संवतंतीयस्य फना॥ कितीविद्यकस्मंका॥ षोडशमं तं तीयस्य पंक्तेः मायत्रा स्तनं वज्रं कस्य त्रि तत्त्व

यागिता सफविगलकृतं गुह्यवोगीसमविर्ता॥ पेथं समस्य प्रथमं डाकिनी मध्यहृदालोप्य
याजितं॥ सफमस्य द्वितीयं वोधीहृदि प्रभाविर्ता॥ दिव्यं बुद्धवज्र महासिद्धं सर्वभूतसमन्त
न गार्क मागि यासर्वं सर्वनिधिनितंव शमास्तयका॥ क्रमादिश्याह लगावान् महावज्रधर॥ ॐकार
दीपका॥ सर्वस्वाहा नमंत्रं स्मृत्वयका॥ सिद्धि यं सर्वकामिकं तथ्यागतवायथा॥ ॐ कव २ कु
रु२ वन्ध२ त्रासय२ क्षोभय२ हूं२ फ्रों२ फ्रें२ फट्२ दह२ पच२ हकु२ वसयुधि वाकमाला
वलक्षिनेत्र२ सफपाताल गाजगुलांसर्प वा॥ कक्लैय२ आकृष्य२ श्रीं२ ह्रौं२ फ्रों२ ह्रीं
२ जं२ किलि२ मिलि२ विलि२ चिलि२ हूं२ फट्२ स्वाहा॥ विघ्नवारणमसकृ क्ष सर्वकर्मप्र
साधक:॥ आदेवे गावनंद वाडमा तंडुवकुथकं॥ पूजकासि:। लोभर नंगुन्याक्राकंस्वाहा न
निमाजयक॥ जस्ननमजुणलकुजाप्य णक्कमध्यकृयाकूसर्वं॥ आधावर्ण पिपदत्वा कदल
स्ववर्थिं काकल॥ स्वाहा नम्याजिनं कलावृक्षा नामपिवर्णा कूवृ गावदना नाद्दिम कुलाद्दि

णधाग

ली यस्य त्रिनी यंग्रक्ष्म्य भूर्वंनाक्राम्कं स्वाहाकं पाऊयग्रू॥ प्रह्लमूखाढ्यकिं प्रा
दोवेशावनं दत्वाट्ठीयस्य ठ्ठीयंवयूकंनाविरद्दिनं॥ सभूत्यस्वाहान्कय्यकं वि
ध्वं प्रियन्ति॥ प्रथमंनु क्रीहावदत्वासत्फनत्त्यंवतुर्थकं॥ शून्यव इत्ताकित्तीसंयूक्तं
स्वाहान्कमहि वानूकं॥ वर्क्वेज स्वं पूनर्दत्वाहूंकायंवक्रसन्निहं॥ स्वाहान्कमाकर्षक्रौ
गत्ल वं वमस्टीनांक्रि लांडसां॥ स्राजेमाहकूलंदत्वापू४कायं संप्रयाऊयन् स्वाहाकान्
पूनर्दत्वामायग्नहून्स्रमानूमान्॥ जूल्लानां ह्रयामं ध्य जूल्लक्का विलाषिकां॥ माहक्लादिं ६०
दत्वा वनिस्फलस्वाहानंपाऊिनं॥ कर्मजीर्वं नगागब्ध वैभावनं स्वाहाकंपाऊिनं॥ ठाव
मालेखू सर्वंनयंनपूंसकं वतुर्थवीजक्षं ठंगवल्लवं नुत्येवव॥ वपानामादिगवद स्वाहा
स्वाहाकंसकुनक्ष्य हहू॥ पूष्यायूपावगान्धवदीपावेवनत्येववा॥ वंभावेववीनावस्ककं गगुष्ठ
याम्नलंशानथा॥ एवंविक्षिवि क्षनेवेकल्पमङ्गलयमलदुत्त॥ ॥अथनाविकोदयं

वंछइ सर्व कर्म्म विकृर्वितं ॥ वतु मूरवं रवद्दू सलों विविद्दिलप्रय विछि तो । तकस्स तत्रय लाच्छितं बधि
षिता तद्दव नत । कलिरिवेसन्तु वर्तु लाका लं समस्त कतथा तघपथा ॥ ॥ ॐ प्रसन्नता न अमृ
तमसिअमृत लाव नी सर्व्वार्थसाधनी सर्व्व सत्व वशंकरि श्री पूर्णसा वा ता जा स्वा ॥ स्वकृ
गाहा हा ॥ ॥ जसम सध्यत वय तं पूष्पाय सकृवां वितां । तस्य वव तकेप स्ना मस्य प्रथम
मर्द्ध न्यू विन्दु षितं ॥ तगी मालाका लतथ व सपदि तिस्वाहा कं ॥ पूष्प नर्दी काव । विदर्हितं ॥
मर्मि वकुठयं विधिव सुफा हं त तवन्द्रं व भमानयति । पूलव पिद गा । तव कृप तमध्य
दसारूत मन्त्र । विद्दथ । पूष्प वसा धा विदर्हितव तंनयति याव कृी वतसं तप ४ ॥ ॥
सर्व्वा तं व कृमा लिखिये वतकृ वं सकु सि पा सध्यश्री ४ वधंकृपू श्री स्वाहाहाका तुथा उय रू
ग्म याव तयायक कवक वन्द नस्व वर्के ४ सहर जेसलिख्य पकं मा धवयति ॥ दवा दित
व भमानयति ॥ किं पूत ४ कृ जमातू वातृ । हि पूष्पा वंव त्ह वस्त्र तंपप्मा कावं समस्त क तथा नय सदृ

थि।

वर्ल्तमञुत्तमध्युत्तिखड्गिशंकवर्ज्रावंवकुर्म्मखंनेह्यवन॥कंणाध्यनामर्दहित॥का

नथमा वाव्कयथाविधिवलंलिख्वारवाठिकाकृहंवदि॥ ॥उभुष्ठवंवरुर्वव्हकुंपप्राकावस

मकन४॥त्पस्द्कुवबिनाहुनाठकावाद्विविदर्हिंकापसवबठकगकावाकृवित्

खिनंमध्यगाउमाथा॥विदर्हिंनफलाहृविजावहृनभीमायदकें ःदंलिखिवाजुष

मृत्वकुपप्रा॥सस्कृतिगरुववतिनान्वथा॥ ॥नदषवक्रुंकितुह्लंरुडूकायविद ८८

हिंनाविषरधिवंनाडिकासहकपासलिखत्॥मानुषाह्लिनाभभभनह्लिमायथधि

ति॥ ॥स्तुवाकितुउंकावविदर्हिंनफलाकुकूमनरुउंसंलिखापिनपूष्यना

र्वेर्मकु॥ग्रथवापंवापवावे६सहसफाहानपूह्लिर्वति॥नदवाकृपंखाहा॥कावविद

र्हिनफलावकुारवति॥ ॥स्तुवदमाकुंमञुविद६आकावविदर्हिंनफला॥सित ससुक

वरुत्ननतामाहिलिखासनावमिठहगांधिभोमस्यर्वाविहवन४॥पूज्रांफलाठिसंथप

मछ्‌ गमजुथाविधिवनुाहपफाह्ना क्वलिकहवनि॥ ॥आश्रूमूकस्य ३ कावस धलिखे
कुम्य दंडुर्द्ध याश्वं याछ॥स्थ ४ हुंविदिरूप वं वाक्क मापरवा उजस्य णो गावनमपहर्ग लिख
म धूगामम्ध ख्यप यनु॥स्फाहृनाव भ्यवगमान पनि॥वतुईलक्षीं ४ कावानिनंम ख्यजी ४
ईवदलुंवाक्क गनाहूंकानवतुम्हूयं लिखेना॥वकवन्ह ननस्मा हिलिख्यसपकणवाव
कुपिनंसमसमानि नव नयनि॥कू कृमरण गावनयाथ्रुथवाऊ लककवसनलिखेह ॥ह
ङेप्रकवकुं श्रनयना॥सुपनवकुंघ मेधुमश्च प्रक्षियपमीहरस॰ञःक्षेहवनि पथ
कनकुथ॥ॐसुर्ह्वमाहनिकामतुरमर्ह्व इस्नानाःहयरहगावनिसर्ह्व हस्नाना॥कथर हूंर
स्हू ख्वाहा॥वन्डुंनग्रंथिकलापथगाकु नि लवेर्नसूवान॥उ सलंस्वफाहिमक्षितंकलाय
स्पुदप्ति सर्ह्व गाहवनि॥उसलांकिनवक्रस्य॥सुहृदलुंहवसमडीग्रीकावाचिनंपन
॥पुस्कमजीदवदलुश्रीसम गावनमारूऊ लिखेश्रय यस्रोहाथहवनिसर्ह्वदा॥ ॥पन्न

महूरलंकलामीहकृतामक्तं समसूधपकृवाक्षकगाशखवाकृतं पविमशुलंरसकासूवका
पृविवाविकामेभूपवं॥विधिनाकुर्कृभन्नलिखबाहोवधाधायपन॥वकाहवपिसर्व
ग्रथाग वाकस्या॥ ॥सूत्रववजंकिंठकलिंकायांवाक्षगावा॥कयथा॥उंहंहूंवूधा२खादर
सादव२क्लिन२पत२मथ२वन्ध२अमुकंअमूकन॥सहविधषयहंहंहंस्वाहा
विद्विवलोहपत्रविसाउं०ं०ंअूहिवारअव्यनसंलिखेमहिरवमाहिषाश्वदवमक्ष ५९
हूथ्प नकेमोहिहवअपाकि॥हवस्य ह्गर्भयासहकिंपूनक्रूअमानूषान्॥ ॥
प्राभिमधुलदयमालितुअर्थइकाहनूपालविधिना॥हंंगा४ हंहंन हर्लंहंहंहंल
हपूनविपिसूक्षहागाहलाा४हंहंलाा४ हंअनगा क्रूसिनमारव्यमधहंगा:हं विपन
लिबनाडिकायामभमनांगायानिखपअवसवजाटकेः॥भनभानकपटउपहंकंक नयुक
पिंटवासूहिलिव्यमहावला॥मक्तेवसंवक्षजलिलानिनूपक्षपायिलानिपूसकम

मति॥ ॥ॐ कामखा हूं अमहुलस्छ्रू अङ्कस्थूर्ना॥ त्रिवश्च वाग॥ मध्यप श्रेष्ठ वेष्ठु पकृ
कामलूं नहूं षिकं॥ कर्हिःकान्८ स्थिकेनाश्च हूंकार वकुर्विंवाजिम्ध॥ भवाव संपूर्णकं८
स्तुम्स्क्रुि वज्रधवा कालकना वाममन्त्र यजस्वाहा॥ विकवंश्लिकेथ॥ वैजहउसननकादसननसंप
यक्ति॥ सर्वां त्ररुनदेव त्रिकायज्ञाना॥ ॥माहेन्द्र मण्डुलत्रिशूकास्तु वज्रांकिनंवसम
ध्यवकुवस्त्रमण्डुहूं क्षयथा॥ ॐपातपानरीस्वाहा॥ पूर्व॥ ॐ उस्कु अम्हस्वाहा॥ दक्षिण॥
ॐ स्माहूस्वा हनीस्वाहा॥ पश्चिम॥ ॐ कमकस्मिनी स्वाहा॥ उत्तर॥ पुनरपि वकु वस्त्रमण्डु
लंतनां ध्यसाहेन्द्र मण्डु लेन ध्यञ्जमकसपकिस्क्ष्य॥ ॥कुण्डं भव मन्त्र लक्षं ह्वि
जावमन्तस्त्रुलिखिवा मण्डलेकाम्वे प्राक्षिप्यनस्पम खं मदनकष्ठ नैन विष्णु ॐ मम
हुक स्पवकपाल संभ्यमनृवेस्थपय ह॥ जनकं भाद्रवासम्स्त्रमति पवरीन्य॥ ॥वर्द्ध
लाकानंहूंवज्रक्रंपकेजूकदिक स्थिकेन॥ वजनस्पमधाण्डके हुंकान वकु स्थ्यमूर्द्धभिव

…थ्वम्

रुधवटकेमञ्ज म्यालिखेत॥ [illegible]थ्व॥ ॐ पदाक्रमसि पदक्रमसि उदयसि मेव

मसि ऊर्द्धमसि ऊर्द्धमसि वनमसि॥ वनमसि गुल्मसि वीवयमसि अकधानमसि

स्वाहा॥ ॐ काय सर्व्वत्र रक्ष रक्ष शिखा कायरक्षा [illegible] ॐ वज्रकाय विमध्य ॐ वज्राग्नि ॐ

वज्राग्नि सर्व्व वाम दक्षिण [illegible] सर्व्व काय लिखेत शिखा क्रमन ॐ मारीचि [illegible]

[illegible] ॐ वज्राग्नि ॐ वज्राग्नि सर्व्व [illegible] काय वाक्चित्त [illegible] १०

[illegible] त्रिलोक [illegible] काय वाक्य [illegible] ॐ मारीचि [illegible]

[illegible] देवकुल [illegible] लिखेत [illegible] सर्व्वत्र॥ [illegible]

[illegible] कवज [illegible] ललाट [illegible] विधु

कमान [illegible] विलुप्त [illegible] पूर्व्व [illegible] प्रस्थि॥ [illegible] गगुरु

[illegible] लिखेत॥ [illegible] सर्व्व लिखेत॥ [illegible] हस्मी

टं॥ प धम्मो मा ला का ल दालिखि द्धामा ध ४॥ पाव रुल्ल सए जी ला पा हूं का न म आ म रू वं न सम सु
गा वं सु वि कं व जम र्द्ध मू र व लि खे नृ॥ हूं का व हा द भ पा र्थ पा ४॥ अ ध खे लिं डबूं जं पाया ल्व व
न पुं स क वा हि ना॥ मू रूर व स्प व कुं ६ ल्लु व भ लं गि या ४॥ प कं तु प क य ध पू त बा पि ऊं घा या म ड
लिंगा तु प क य:॥ यं पं वं अ ल्ला गं त्र गा स नी ल पल्ल प श्री घू र पा द पा:॥ पूच्छ न कु ज वि व लव
त्त वा जि का पा नि न्व प त्र ड म कू क व सु म्म मा नं ता म थे:॥ म ठे हृ दं पूनृ धा लि खा प य द व द कु
सुसि त व न्द न न कु क व कूं ट क र्म ध्य वि द र्हे य नृ॥ सि ल व न्द मन न वे ल्लू हू दा व कं कू कूं म न व
ऊ व य ट वि घ्र सा भ न य नः॥ म हा व कू प्ह व ति स र्ह दा न स्स॥ ॥ अ च्छु गंस स म दू य स ना लं
स्सू हि व स्स्तो पि वा रूं र्थ सा ध क ४ स द हूं ना लि नी स्लु हू प्र दा म सि छ्रि का व क ४॥ हि मा गा म
व प्रलू पं क पूं वं व वि ण व त ४॥ उ व पा गा व व श्रे कू म: क वा ति स मा हि न॥ ज वा म स्स वि लि
मूं कु: स ह व वा त सुं भ म पा॥ स्स त का गा ध का खि व त ख व म ह स म च्छि ठ ४॥ घ न न प्र व क खो मा

उप लसर्व्वकर्म्मसु॥ चतुर्दशउव्व माणाय नव अहरूप लम ध्यावउ सर्व्वविराग न कर्म्म
कृत्यीय थपिसं॥ सफा हंउ यन मि च्छामि॥ वनारन का ४ क गा ४ पनंति पून वृहबंति॥ स
कृत्यीय स्थपिसं॥ सफा हंउ यन मिच्छामि॥ [illegible]
श्री धातुकांव न मयान॥ ॥ अथ हेन वी थिं वक्ष मलिनाय वा लाक्ष व नन वेल वउ
:समं॥ उन लम समाय कं अ सिन हरि आक लक व व ला नाय सम न्वि ना॥ गुइ विः साव ॥ [illegible]
मझंस॥ मकी वं व समंन न ४॥ अथ विराग कथयामि न वूर्ह नात्रिंश पेलंगच्छ नानाय
हिगु रासाव॥ नाव कथय यावन॥ ग गाव वउ सूयं व पल उ य व॥ प्रमाण य य य थानुक्रमे ११
घपे लाव्वतुगु धर्म्मी लगु इ वीन दर्ष्वस्याव॥ उन दर्भ हएवक लंपू षी के न मो :॥ सहे की क
लय व नन लम मदिय मनदाम ध्य मंगु द्रवी व हि ४ सि न॥ मिन संग र वनं प्रा कं पा क
उपपव हिन न॥ प्य॥ विपकेकं प लंपा न म न प लं पाकं अलंगच्छ लन गन॥ कुव मागी स नमुम
माहिन धाम हसां हर वड साययपप केरगनं गय॥ गन उयामि गा सुगा अहं वा का मह ग

५८ दिव्य नृपि हव सि॥ स्व वेन वैकं प्रि या हवति॥ सर्व्व मस्त्र वि मवद ४॥ दीप कुं दू ह्ना महा धूप ति
४ सर्व्व वि घ्रा निवलो ना॥ वत्तुस्म संस्र मात्र क कुल्वा कीप नहाव य स्व हू भट लोॅ पाति नातुदय
मूहू त्य वेलां विक्स्वु वै लव॥ दिव्य नं की लं सद्दे कविधिव न काथ य धा गी॥ वत्तु घ्र म त्रिप ल
नू पव दिन्ल्ह्मो वे॥ उनक्रम हस्ता तियासा मताव उल्प सिम वा॥ कुं वीउ ललला ली ला पूजीघा
या ध्या दिव्य सुरस ऊ व सक पूव स्य ज ज्ञा सद ४॥ अहि उँ क्षो ४ पव कू लं दीपं मा याग स कर्व्व त्न॥ मि
वा सेग वलि पलि कहन सर्व्व भाग पनस्पने हव स्पवन सं भम ४॥ ॥ जन्त्र या कर्व्व तन्तेलवि
क्षिं व क्षु का॥ दव वेलं कि उन का पहा कन त क ज मा व ह ह प्र ह सिन्धुपावे भा तु का॥ विधि नाम
क्षि प्र सा ध्यय क्षा यं॥ गद न गध्य माप्रि या कनगी व कुलवि या धरी नाग व क्र मर्द नि श॥ वरी
कलक मिवि प्र व वन ल्ला विप व व ह य ल्ल ही मूकक क वाव मंगैं है वी हमना॥ पूव वा व कु वियन
दानूसवरी॥ मांजि स्ना भा गाउ नाग वल्ला श्ववि सर्व्व भाग प न य कवी॥ वन्द न द्य स्ना स द क

पूतिमल्लकीनाव धूप प्रदमेनाशमूकं सर्वकाम प्रसाधकः ॥ कन्दूलूत विचर्चिकां मरु विषं
सर्वनाशं दद्रुवीजसकाल [illegible] व्याधिजानी रुव नजानि सिन्दूवा वावि लाय स्त्र का यस्य
॥ कनकपत्रानिर्यासं कम्पु नीवकु: सूसमसमकू ॥ बालकुष्ठनाशनं हि ॥ एवं नाशयति गंगा धमा
क्रिमि कुष्ठं विषमं [illegible] वा किंपुन वा गुडं [illegible] ॥ उद्वर्त्तन विधि ४ अथ त्रिकपंचा
पकतुष्ट समब्रू हिंगहौ [illegible] पलकस्य प्रसहपिवन् सर्षप [illegible] ॥ उद्वर्त्तन गति विवि ७२
धूमसूक्ष्मसा दिव्यास ॥ पात्रिपचित [illegible] क्रिमि [illegible] दिकादीन नाशयति नान्यथा ॥
अथवा चतुष्क समंग [illegible] कल्का ॥ त्रिफलया सहयुक्त मधूनालो [illegible] कर्ष भेकं
[illegible] दिव्यपूपितवपिप्पली [illegible] शौचिकी वनि ॥ अथ [illegible] क्रिमु
[illegible] हिंतो ॥ अथ त्रिकषायं [illegible] कापहृत ॥ त्रिफल पद [illegible] चूर्णम
[illegible] यामधवनतु ॥ [illegible] जलेक [illegible] त्रिवा [illegible] आप्लव [illegible] वातामस्य

पालघातिकायपरं॥ उक्तं पालिताकनखानूं॥ ॥अथ भ्रातीरुत्तसंगन्धकीशादकेना
स्तूदयनं ॥मिनार्ध्ववद्धित्राहानानकेभ्यलासंगु तनमहूपीनयक॥ वतकेवकावयट्रघूने
नसयथ यामधूनासहृह्कयक्ूम॥ कूनीयसर्वभागायहंपालिनंवविनेधनं॥ वस्मासमद्य
स्थागीसखगहव॥ भ्रधा॥ विनवमद्भिदहवमनागमन्निश्रुतिघर्॥ वर्षाभागवते
वैवर्षगंगाव्रयं॥ ॥अथवानागमूलपलासंतुकृतात्रिह्यागनट॥ना॥ जिकपेदभामकं
तुसमहागातुवूर्हिता॥ गावांकीवशसंभाअपूर्व्हयक्ष्मीमित्रिनं॥ हिनविनविदर्यागं
हकयाधिवकृन॥ वर्जयामनि॥ पायमनो॥ भूनासदिवा॥ निगं॥ नियमंपथिपूर्व्हतुकुरुषी
निमिकृकं॥ अर्धमनोधियकमगूभेलादिवामिनां॥ अथअनपडवीगास्वकले म
हृतंनतु॥ याग्तानांमनूहिजनतकदलहसमानां॥ फसमस्पतुहावयत्॥ स्तुवंध
मानवहितै॥ कालपूजयदिति॥ ततः सर्वगत्रवस्कन्मिकाहोकि॥ धनजमाक॥

नसत्त्व कीर्त्तव ध्रुप गुद समाप्त कं सर्व्व कास प्रसाध क ख फल स्तूल कं बिव विजंमक विवं

सर्व्व ना भे प्रद्द वीम मवा क्षले तुंगा [illegible] वजनी रुव नजांम्पि हिन्दू वा वविस [illegible] का व यु

गधाग ॥ फ नक पजा निर्याम्ह कम्ह वी वद्: ससम म त्रु ॥ काल कं व ना म्हु हि ॥ अवं नाम [illegible]

त्रि मि कु सं वि धर्मगाजाक्ष व किंपून वयुडे ध्र ह ॥ उक्त वर्ष्जन विधि ८ अपदे [illegible]

म वउ ४ समवु रुहेगृ ही ला पल कम्ह र्याल लपि व ह्रुष मकेश इकी ॥ अ वर्म्मणी ॥ [illegible]

धु ज्ञानमाता दिमास ॥ पत्रिपविल गेद्ध म क्रिप मि लिकादी ल ना म्ह यकि नाल ध [illegible] १२

अथ वा व जु ४ म मंग क्ष स क्षक्ष वू हुं कु लक्षा ॥ त्रिहु लमा सहघट म धू नाला अ [illegible] म कं

ह्र क्ष प कृष्ण ता दिव्य नृपित व मि शी ति श ग व षीं लि जी व कि ॥ अथ सा ड रा ह व श्लव क्रिजु

पृ क्रम धूवा हि ना ॥ अथ त्रिकषायं संग ख स क्षक्ष वू हि का य कृ ॥ वि आ ल पद माखे के क्रम ॥ गत्रुक

कृ क्षा कम्हु या म क्ष म नजु ॥ त नीज ल कं क्षा पि व धाग्री आमव रूप कृज ब्रा वा ना म स्नक

पालपविकावहं॥ उक्तं पहिलिनाकनस्यानू॥ ॥अथ धात्रीरूलसंगच्छक्तीमादकेना
ल्हदयनं ॥मिनासर्वबहिज्ञसानानकूमलाम्फि गुलेनमहपीसयक॥बनकंबकावयनू ह्यूमे
नसयवाम वूनासहकूयकुम॥कुतीयैसर्व नागमपहंपलिनंबविलाषनं॥बस्मासामक्षे
स्थागीसस्वगहवतिाभधाविनवमदिव्यदहवमनागमसिश्रुतिघनं॥वर्षीमागवलं
बवर्णगलठपं॥ ॥अथवानागमूलपलासंहुकुसादित्रिहागानट॥स्मा॥ दभमकं
गुसमलागंडु वृहिहना॥गावांक्रीवतासेलमप्रवृहय लकर्मि मित्रिकं॥द्विनद्विनखिदंधागं
हकूयधिवकूनट॥वर्जिमानतिपागमनां॥शूलासंहिवानिगं॥नियतंपनिपूर्वहुक्रुहूबी
निमकुकं॥अथवमसुनाक्षियकसयगूभेलाहिवासितां॥अथअत्यंडपागालावूडलम
ह्ननदु॥यांगीनांसंवृहिजिह्ननदुकदलहेस्यानां॥कस्यस्तुभंतुलवयनू॥सहुवंध
मीनवहिलिडी॥कालपूजयदिति॥तनःसर्वगत्रवस्कम्भिनाहिकि॥धनजअकक्र॥

दविधिना सा किं कृतं समाहितो भक्तो॥ ॥अथवा पदमपि वक्रं हवति॥ वक्तुनस्तेव
तुण्डं वचिव ड्गं किं तत्र थथा॥ द्वय वज्रमूर्तिलवहृदसुंव पद्मरवङ्ग नथा॥ कालाम्सितक
तथा॥ वादस्य उपलक्षकं नथा॥ तस्य मध्ये रवं गपञ्चो द्विकोयंव कप्यकलासं पदकुवं विन्दु था
तद्वजकं ऊं दं सक्र वयलिखेत्॥ ॥तथ्रथा॥ ॐ असच्च नायवज्राय नमः रविमध्यक लोव
वल सर्वार्थसाधनि स्वाहा॥ वमध्ये ऊं दंसक्रमालि विलेत्॥ अप्रसर्वदष्टनिवारण ऊं दं स
क्रमाहा॥ ॥ॐ सर्वं माहति नाय सर्वदष्टान् माद्य २ एगावति सर्वदष्टान् वन्ध २ १२
हूं २ फट् स्वाहा॥ तस्य मध्ये हव व्रजं चन्द्रमध्ये वतुर्थस्य प्रथमेन वतुं लाकानं के ण वा
कृतिं लिखेत्॥ तस्य मध्ये बूषकी तांविकिवस्तुन॥ षडक्षर मन्त्रो निदश जो कायविद र्हि
तं विधिना सर्वसिद्धं पवाज्यस्य वाक्षदयो नामधा॥ अस्य लक्षजापेदा पृथिवीकस्य यति त्रयुक्ष
समूद्रगताणहीन लभयति॥ विषमम् तंकवाति॥ अस्तं विषं कवाति॥ मार्क यादकम

रिमत्र ऊर्द्ध मध्यस्ता दिशः ॥ सविदिशः ॥ सक्षिप तावं देवासुर मनुं बाकु सगन्धर्व्व किन्नर मह
उरगा शिव वव वा रुद्र किं ॥ सर्व्व जा किनी भाग मप इयाति ॥ सर्व्व नागा विषम पह्नाति सक बाट
कं पवि ऊप ह्रैं नदी वृक्ष क्षिप ह्रां ॥ प्रति कूल वा ह्यति ॥ अनेन वसकमट लड्डा मिसक्ष्यति ॥ ऊर्द्ध
निति क्ष माय सहस्रं जप तस्मात् वृष्टिं निवारयमी ॥ पर सैन्या हिमुखं सह सं जप कह ला संभ्रम
प्रविशति ॥ [illegible] अमानस्य बाधा नास्य [illegible] ॥ नव [illegible] क्षिय [illegible] वलि [illegible]
न कार्य्य कयाति ॥ विलत मन्त्र बाजवादिना ॥ ॥ [illegible] सर्व्व [illegible] काय [illegible] क्री
[illegible] सर्व्व कर्म ॥ [illegible] पटल
४ ॥ [illegible] ध्यायै सी प्रति [illegible] संगुह्ये ॥ जप ध्यानं न ज्ञाना मि हा मकर्म विधि
४ कथं [illegible] सर्व्व धर्मैक संग्रह ४ ॥ कथ मन्त्र प्रसादेन महा [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] प्रव [illegible] मि ध्यान मन्त्र [illegible] सर्व्व कर्माणि साधय ह्रां ॥ [illegible]

नथाग

००रु मि सं ग्रम ध्रनकथयितु मा हो॥ वज्रसत्व क्ता ठाप सगार्वा ध्यं संक्षिप्तां ग्रेला का विड
प्रास्र त्वा सर्वं विध्वान त्वाद्य ग्रु॥ पदन्या संप्रथ प्राक द्वव ना लां न येव वा॥ ह्रम कर्मिय
अधि वूं कु ग्रु नु क्रन मवन्वा॥ मूजा या गा नक था॥ कु त्वाप श्रामन ग्रु लमा लिखन॥ क्राङवि
ङ्यार्तु वाति नरवं वहुजंना वयि त्वा॥ क्राट मनझोक्षि श्रर्थी गेल वद गा सर्वद्र सर्वं नथ
गाका नां प विवा वनांध्र क्ता हि नक्षि ख्वान पदेर्हं विकमा॥ वार्था सान क्षि मा मां वव क्राहि ध्म
ग ध्यति वाद प्रि त्वा॥ नक स्का नाह स्थानः रा ख्य त्व ह स्वन्हु कृ लि गा हूं का नं वन का न्न स्वी कृय ग४
गे थे वज्र ठान रूपं स्त्वं विया या गीतं रुवा व ना॥ सर्व नथ याग्रे व कु लो ही रु नच्च कन्ना विध्वान पूर्वक
कम लाव र्मूं कृ त्वा द्विहाकन ठवक्र मह्वाल यन वाभ नवक्र च कां नि नाद्यय नसह स्वना॥ वन
लामन स्क क्रां लि न हूं का नव रुना हं का न ध्राट हूं कृ गे॥ मान हूं वा बंद्व पूर्वं कं नाकि मान नगुप्त
कदय ना॥ सर्व ह सा दया तृवपु स्क का न्ता॥ हूं दं व व नं प वा हा वज्रा ट विग्रह ना व ने ठाश्र

मस्तनकुलकवनो यकविद्दवाह्रवयकुवाकस्त॥ प्रतपिमावायम्हावह्नतजाकिस्मस्नायका॥ महल्ल
कानववंपावसरगाकृतकिंलुवू अमकुस्मिल्ला अप्पपृथिवीप्रदक्षा॥ क्रम्नू कावार्यनक्रम्नूकमिषा
स्नूतवाधिपनिपूवनाथी॥ सर्वमलानूकलवह्मानलफहगा॥ अम्नूकमग्रुलवाजानआलिखितव
क्लूतिनद्ववन्नकधवाहृंग्, लाक्षिप्रमपाःपजमनयपलाःपजामति॥ नहयवजुपालिष्ठप्रकालि॰
नहूँकायकृपितवयतन॥ आदिकप्रदीफनमहावजाह्मानवजा॥ म्नूवर्नांगाकआविक्रियमूजि
तिप्रियूंबानितमहावजाकवगाविन्याहूनखवकन्खाटवियहत्रि आयांसुमकुहमुजमवजाप
दनमग्रुलहस्यास्मकनथा॥ पविक्रमंसर्वइक्षानकुउयकू॥ एवंदमिपविग्रहध्क्षाग्॥ नक
ध्पृथ्विः दवनामावाधंमकुभा॥ विष्ठानाषिवासनांविकृर्याद्वि॥ नमरुक्षापुरुमितिवजापा
मंवश्रिहा॥ पृथ्वीदवनांकनकवर्हकलगोहस्कामाकृष्यव ध्वासराआदिति पंसेसपहायेथा॥ सं
पूक्षाधिवासपसत्रिअनंकूषींगू॥ नष्यावाहमकुमाह॥ ॐ ह्रीं हिमहादवीपृथिवी लाकमवनः

गुह्यका

मःसर्वनदतसंपूर्णेदिवालंकानवलोषिते॥ हृदयेसपूर्वनिर्घोषवज्रसत्त्वपूजिता॥ एही वा ०॥
दसर्पहांसकसोहसाधयहुं॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हुं स्वाहा॥ अनेनमन्त्रेण॥ विवाहनादिकं कु. वा द
मिसंमार्ज्जनं कर्त्तुव्यमिति॥ वि मृत्र तथाद्रिप्राकृत्यदिति॥ लपयक्रोमहामालाधू ध्य न
पूजयेत्॥ संपूर्णं तत्र धामृजाहूतायाधूपादेनगवविधांप्रवजयदिति॥ किंरूगवलिपि
कसहूनविकितांदावीदिक्रिपघटितावियादवीप्रथजयदिति॥ हवावानाहा॥ वा अलापि
मानुषिः कन्नां प्रवजय ननदरावन सामानान्यन सांगमंत्र नमस्तं॥ ह्रीं ४ कालसर्वा प्रिति
हूलसर्व कण्ठमूर्द्धिव सह्रीं ४ कावनासमू ह्रूं कावं रगामध्यपञ्चीरगावनजं कावं ४ प्राणं के
मांरवंसस्वाहत्रावानाहा॥ मध्यसखूनरगावनकूलपूजा॥ नाहिरूव्यतो॥ तथसर्वं कावनय
सहू उवमक्रमं॥ वेन्नस्य लोवनादिरूपंराववपदिस्वाहू हावयत्रावनाहूति॥ गगवाक्रवी
सूद्रीवाश्यक्रिका॥ होवयाकावामिति॥ मितवर्हांसन्नीलंकानवलोषितां हावयतु॥ ऊस्यवल

८७

गुह्यक

लो॥ता यां यक्तव धर्म्म विज्ञातव्य ज्ञायो सूक्ष्मंकर्म कि: नांडस्यभत्रिपान्त लवासिनी॥यो नव धर्मप्रवं

कर्म्म सदा लं वापहा यें वत्येर्वं पूष्या॥ऊँ॥लिंप्रक्रियादि नि॥नक्षत्र पूर्ष्यं वा श्व कुंप्र क्रियप ८ व र

मिहा मं वा॥पंरूणामयाहू मनुलविक्षेव सामान्या नप न मा वा न्या बा धि वा॥पन शुलप्र निवसाह

मावि धिस्क रूप धर्म नं यज्ञ व ह स्य धर्म्म मनुलम पिस्क त्रय दनन्त क्षिवि ध वाम शुलं॥वाक्ष्कजा

मनुलन हस्यं धर्म्म मनुलं॥या वक्तु समयों॥ज वे या॥पी०स्कु न सक रूप्र दर्श कृ शुक्रू॥वी दिसा

ह॥हा कर्म्मप्रव स्क मि ना या कर्म प्रसाधनं॥अ मि मृत्वा हि य दवा ह्यामन लेव्य वसि ना ४॥ हि

मनप्री धन दवा ४ पी ना ४ सि क्षिप्रय कृति॥उ ना थि का मस मत्रा सर्वं ष यन पय न्मा॥ नस्या धा मं

पूर्णं सं तिथि काय्य व न वा॥ऊँ॥ आम सा न हि ना वक्रि ४ कर्म्म पूर्ण्या कुर्दू कल्नं॥मा न यां पम धान

जन्युलक रूप्र जा॥ धक ४॥ विष्णु वं व त्रव सं शुगू र्व व्र स्थि का नगा॥ व स्नावि नो मनु पालि वे क न वाजमि

मनुस्ना उ क्षि प्रजस्मजा॥ विज्ञ वलप स्न नि व ति नां पमथा॥कर्द वा कृ शु स्य हा न नवा वि धा नावि नं॥

तथग

स्थश्रयागामासिनंजनाहालकनहस्कको॥स्वघजस्रा विनंप्राति: पूर्व्हीनथश्लू ति दश्किना ः
स्कितरयस्मापलाक्रितमनसहिलहोजेरनं॥ ॥पूवतांधंहाजनंसर्वकर्म्मिकंजप्रु
प्रक्रेस्मननसकूला॥कृणश्रविष्ठूस्वकृहुस्यसूस॥कस्यंपनि लाविततीफमसिाविदिलू
स्वाकाहमदस्निदवनां॥सर्जेलानवा॥विश्चिवदक्षिःसांगुष्टूरपथवलना॥उक्षहिसहारल त
दवस्रापि॥हिउसृह्मांणरीह्निमाहवमिमहस्निहिगालवा॥ॐजूमयद्दीव्यादेप्यविष
महात्रिस्यहव्याकव्याकाहनाम्यस्वाहा॥प्राक्तंधामकजलापंश्लप्रहवलप॥जूहस्यांदि
मिजायांतं लंवाप्रंत्रिलजंबनुर्मूर्वबलुहु॥वकबेर्हजलकलापिने॥आहस्यमलु ः
लमहूतुकर्मांत॥मिविरलपिनां॥प्रथमकंघलुववदांद्विनीयवाक्रमाहिलका॥वांसकम ः
शुलंबेवाद्विनीयदलुमववा॥वकवर्हांनिगुवहाअविलिहयविवाविमी॥कुन्दकांतूपं
प्मालाकृगुलमक्षनिवगयलाव्यामलकिजस्रलिलवावांस्त्रहामकां॥तनआवमनं

१६

तग्रक

कु ला ज्ञा ला का लन प थि भा मय ना क्रूनल कुस या ना न दव ना न र्पय हू क्ष ४ ॥ स्क पी क्र साप
यि ला वि ह्नाय हि थि का मिनां ॥ क्रुत्र भ ज व ड्र कम ला प भो कु णं वि ला मिनं ॥ अ क सि रवा ड
कु मा ध म म क्षमा था द कि भा वर्रू ब वि ज भ क ॥ का ला ह्म न व हीं क्रुव मं नि ला क्र्य ह ध था ॥
कु वा प्र नि रं शु र्कं स म्नि प्र मि ड ॥ प स म प्रं कु भू ह वे इ र्पं नि हं गा हू गां धि ब स ना न मं
हृ म वो य्या ह लि र्ह म थि फं स स्पा र्ह नि र्म लं ॥ भ कि क पी ह्रू क पी नं सा नि हा न का न ना ग ह
ल ह्मा नी ल कु ह्न हि वा हू क्षा प्र ह न गि पा ह्म म ध्व स वि ह्र हिंग कर्म का लं ल म्र कि ष्ठ लि
म ह्र वि ह्वि धं मा ना वि न ब्य हू ॥ ज ह्रा ना क्र स क ह्रू प ला भ प र्ह्र म ल म र्यं नि ह्रु खे व त ध
ग भ ति र्वि म त्रि हं ॥ भ वा ह्म म गा न्ध्रा सू ह्र व वि ह्रा क ह्रा ॥ ह्र नि का ला नि मि हं ला क्रम द स
र्वि सि कि र्ह व हू कि ऊं ह्र प हा व न न ल व भा ॐ का मं ह्वा हा नं भ लि का ह्रि क्र्या हिं नं न वि ह्रि
ना छा ना या ह्म भ कि पू ह्रा दिव म्य का ॥ भ कि सा क न ना ह्रि न पू ह्रा हिव र्ह न व म्य उ व

स्मा ता मयच्छु वस विद्रस ४। ह्रैं कान रूट्‌ कावका लाक लिन विग्रह ४॥ त्रिलोक रक्ष णं।
विक्रमहि वान वि। घि ४। [illegible] न ४॥ वादस्ता पर्दं सं दस्थे मत्राङ्क व थाछि नो। मस्य लिय्का ६ बा
गथग ना को मे स्कु प्रपूजय्यजा। [illegible] र्ब्ब शम विक्षाले वू विधि हा मक्रसाध क ८ ज्या देपूर्व्व द्रुगिं द
ह्वाप स्वालकर्म्म विवर्द्धे ज ४। ॥ वादय पश्चा मन्त्र भत्र व हाम विधि क्रम॥ ग्ल निकपो क्रि
फ वश्चश्‌ रुहद्र बाहामन ४॥ विश्मृ ज नृथि यम क्रा द्धि महमा। मस्या हामन सर्ब्बमखे प्र। ११
यिमा हो क्रि॥ अथ हरा वालू महावे वावल व ह क थगाले हा। इवक्र प्रसाध नो। वज्र नाम
समापश्च दं सर्ब्ब वक्र प्रसाधन श्च्या गक र्मप्रुव वा क्ष्मा क्षम। लि र्कं हाव मामाह मस्य क
स्पा वि ह्व वस्य वक्रम क्ष। निव भाना॥ क्षस्पुनामा मा प्रू स्यन व ङ्क। लिम छु हं कर्ड्ड व इय
त्राणम क्रि पू क्षि व म्भ। हि नाव कर्म्म पाठ ने ८ कर्म्मादि। थिप। ति लवन वजि नाह्लं विराव ने गयक
आकृर्म्मादि थिप ति लवन वक्रि नाह्लं। वि राव ने ८। हाव महरामल्क्षु संपूर्हे वज्र मनु

हां॥ गोका बहुलानाने घ्यनां॥ गावा दूवी महर्षि॥ १८॥ गोनासन तस्कु कुसूक्ष्मास्यां छिलावनां वा
ठोल्ह जात्सित मलाकरा हां॥ नवयौवन सम्पन्ना विविक्ति बक्षस्थला॥ हाव नूपुर क
ण्ठिका वृता॥ केयूर कङ्कण युक्ता॥ नानाहरन हार विभुगाउज्वला॥ भिन्न भिन्न विभूषिता॥
जवाकुसुम संकाशपञ्चप्रभा लीरुद्यकुल हिङ्गा त्रिर्दशार्धनिनां स्वत्रस्थाकृनांजलिपू
टापद्वं वकपुष्पकां॥ समूकलां॥ स्थूल वक्षोभा सनाकल्पा॥ सर्वं स्वलक्षणनी प्रियाराव मध्या
गीवीलघुबुद्धबुमामूयाकृ॥ प्रथमस्थाने दिशीपटस्यलां॥ हस्तीपद्मं वक्कुर्दवहां॥ ये थे
मङ्गलकौमल छंदकुं सफमक हिंथाम्ब्रह्मसंसहमं वामकपालं दिशीमलकौंली दृष्टी
थ धनु श्चकुर्थ वलां कंपर्केष्म यानां सव्र्व तिमधुकं सफ मल अपूमक लंगा थार्थं
प्रथमपङ्क्तिशामूयालीलां दिशीयपीतं समृजलां॥ वाम प्रथमे थे। सिनं दितीमहाबितवे इ
साक्षिलं॥ कमौस्यं विकलालां धमवक्रिं महाधानं विकटाक्ष रीव लां॥ एवं ध्याव यद्देवी स्

कथा॥

र्वु हिं हि प्रदा पि कनं॥ प्रथम उर्ज्ञ स्पर्गार्दहा कावकामनू ली स्वकुरच वहा॥ श्रूवसर्पर्व विष्टि
गंत था॥ हव कि: तिनम्हा वेकन हा मकुमा॥ राव महराम ख्रुतु यकार्ण बा वासू म हुते श्रु
श्राका विविकर्थ त्॥ तस्यापवि उंन्द्रम खी पी कानपवि ताग म रोरव पमा ला बोवि विन्दु:
त द्दिक्तां काव व्यम्हर्ष म ठु लं धमला तठ॥ सूर्ष्ट स दु ला इ भिमि नि अर्श्व विविध पूर्वांक
ला हू र पवि हैं कावं व मणि स प्प के भ्मला कर प्रा वृगब रूरेब बां नवमू त्वं महिष वृषं भाक ११८
ना पारंव तु संठो मा हूं ऊं न म कफूव र्हो॥ म हृ पक ऊ सं का पा ला लं कूग म खल म ह्व ह पानकं उ
र्ब्ब लिंग ए पु ला ॥ लुप्त॥ वृह हर दन म हा डर्ष क पाक लहाम् काका बाक पा ला मा लाह व टा हमिक
मा हा प्र लय कांव मिवा॥ ऊर्ध्व कन व बूम्लिव वसा॥ हूक मा सम र्थम ऊं रैक: यक्ष॥ समह्र कपत्र
वृहा दोन उंला का॥ खाह यकं विविंग यह॥ अ डाद हासं ल लकिं कंरु यस्या पिहर्य कव॥ पश्चमं कथाक
माहिषमूर्वं दक्षि णा मूर्ज्यं ठोहिमरवानि नी नव कू यी त कूछं विकूनाहा॥ कामसि कधू प्रपम्हु

लिखेत्॥ शनैश्चरस्फुट कंगा लग्न॥ मि वास्या जहपवि मंक्र रूपं स्वपीजमीषज॥ कुर्द्धं वाला लग्न श पंच

वीक्ष॥ जवबं॥ कुमाव मिश्रं पंच हटी कन्सलसमा॥ हिंसामक्त्रि स्तावथ दिनि॥ जनादके न प्रथमतुंगे क

र्कि को॥ द्वितीय हिं द्वि पालं॥ तृतीयमथ लं: चतुर्थ कन्निका: पंचमथा न पष्ठ तृफस्न कंतुल अष्टमतो॥

नवमे धनुर्मकरे॥ एकादशे मकरे च धांके द्वादशे च कुंभ तथा दशमे मकरे मृफे ला॥ पके दश नितमकुं

वाम प्रथम तुंग कुजपालं॥ द्वितीय शिवा॥ तृतीय मकर लं कं: चतुर्थ वाह्य॥ पंचम मीन पा धं अष्टम धनु सप्तम

मृतं॥ अष्टमे मपष्ठा॥ नवमे हस्ते: दशमे मगा न कर्पटो॥ एकादशे मन मूल हिं न पूर्वे:॥ द्वादशे मकर

ल्ले कुंभ॥ त्रयोदशे मनवमे॥ चतुर्दशे मकरे लि: पंचदशे म हि पटका॥ षोडशे म वन कर्पटके

॥ द्वाद्याः॥ उत्तम पंचम क्रि हाणादनवमा हि मवृषरत् व चतुष्क मुखा नमवद्गौ॥ ४॥ वाम पादरा

स्व लुक कालक सिंह स्तलाम स्त्री महाभाकुन सारस्ता॥ ४॥ ज्वरह नंवसा हे वने स्मन वालि खोयथा मस्य

स्थान लग्न स्वभव वक्र सा कुजपाल वनालां चितोम्र लाहिन पूर्वं वट वक्र सा धिष्ठ पूर्व संदक्षमान

पूतूषं ऊनक काक द्विस्थान पूल हालकाव समाकरी॥ जवंवि धिनाखवम थागि सर्वक
वकसी सिद्धिवं नासमम हाहैम वमि ध्याहहयाबा॥ ॥अथमा मानहान निष्पन्नामा

गणधा विवीहाहक्रम प्रहाव थक्त्रा॥ हपदुवामंका लामज्जल हाहूरा॥ जिमूर्वांव त्रिनशावझ पसूका
वपीनव र्मूं हांदक्रि॥ तु रूव न्नी लवामकल्लंदूसा॥ त्रिहा॥ नकवास्मि प्रहादि व्या दशदिव

कम्मघमा बिह स्कमू खि ध्रा॥ श्रीगौर्यवि बाह्मगा॥ लानाकम्ल ग्यास शीरवम लकूगा॥ मकूटपं १९
वपूनाकूट पूष्प विनाडिगां॥ द्विलेतुकवंवड़ेछि गीम्म सूविसूतुकै॥ सूगीम्प भवबाहिंनी
वामनव र्क्रं निकापार्का॥ द्वितीयआगकापल्लव तृतीयधक्षेवसह वघ र्धमध्येम घेनाभिम
साम दहतुपूरवयफा॥ नगास: भिपूमर्द्धवू विगंध वरा॥ निवन्ध सा॥ नवऊ प्रहाव दाकाला॥ गणक
अभिकविग्रह शकूलव मवरूजाकिन्य॥ वूम्पवं ग्यासमनकगी॥ ॥ॐवक्रताकि धीत्र नकम्
मकूलाकर्गीप हेंहढ़ा॥ म्क्षूननफमयाहोन नकाकर्ष दीमूकूमं॥ त्रवंगकाथि दवीभूसा

न नात संभय क्षा सूथ स कल न ख निष्पन्न स हिष रूप ह यान कं॥ कु सूव र्ण मुहा धावं वतु
वकुं रूयान का॥ सूक्ष्म गुरु वतु व ख्य व मा विवा लि नं॥ व ऊ सू खल वेव ख झं व कं त्म रू न ये
व वा॥ वा सख व दांगा कपा ख व व न्रूपा गत व व स्हा व य घ ऊ आ॥ आ ना ना प्र हन म ध व वा न प्र
न क्ष॥ सा ध्म्यम नन सा न स्मा कृष्ण॥ वे ध न त क्ष॥ नैसा ध्म विविं नय त्या सीवं क्षा तु दक्षिण दि
श क दूप्यन व कऊ आ॥ ध ना न्य न॥ व ऊ ह घा त का न ख ज्ञ न दाव म स्थ॥ वे अगा लित वियह
दान क्ष॥ ॐ व ऊ वा नख्त ह ऊ नि ख प्र॥ स्थान सूखे ननि॥ कुल॥ व ऊ वा कस कृ न ना॥ ॐ श्री
श्री क्ष विकृ नान न हूं हू ह स्वा हा॥ न हि यान न प म रूप स्पूः ट स हू॥ का क्ले ऊ कग ये स्तु प
वि वा वि नं स न्न न क्ष॥ नि विह ध्मा मा न गु राव य न्ना न आ दन॥ वा पूर्व मन गुल स ना रूं वे ऊ
हू हे विविक्न य न क्ष॥ न स्य पूर्व हमा वृ टं सा ध्मा स्प पहि कल प वा॥ व स्ता क द पित्ता के लि मनं द
क ध्मा दि णा॥ वा न न स्तु ल प सू नि प द पा गु स्य न सं वी॥ व न्ना म ग्र ह व न ल म पा वे वे ऊ म गुल स्व

गधरा

न्द्रनागोव वराव नाश्चा शानकर्म भतु विधानन भाउ ब्रा ष्ठ्येम कु क्रमपिकिं मूनर्गु विक्रमव । ब्रं
नव मन नबाला पिउ लुकप्रकाव कष्ट्रि नथ फन्नाम मत्र विद र्ग्रलि रवनाहु नि बाश्मनक्ष । वज्रक्रो
धद्ध्यं नेवयं धाव कें वि विकमयरा । अवविंनपथ्या । धानन्त वि ष्मष पजिय थ्रथपनय्या ॥ वीकाबा
क्रयसमापूकं हृया कावंक्र खव कुलास्तथ्या कर्ष व्रम रूम ४ ॥ हिनव र्कुं वतु मूर्खं वतु ४ पा
द वतु ४ कव ४ ॥ हृयपजी बामलनाजा । ति ध्यकें पयम्य गर्यवं । प्रथम ध्याम मिज कघि नवि न्मउ ८०
हस्कु सिनंद क्रिलेनयानन । उ ष्व मखव विकला । ति नप्रस्थ ॥ हृविक गथ्य । द्व किलेउप्रक
कं वि स्नुहिन थ्यि ॥ द्विनियविश्व वज हनीप वक्ष वतुर्थ वान ४ ॥ वाम विश्व पम्न । द्विति गकि
हनी पदर्पन ४ । वतुर्थ धनर ४ प्रस्था । लिट हर्य्र सला उवान्विला हविहवा । द्विपानि कमि श्र
वैलाव यं दिथिना मत्री लाध्ध स्पनाहीं यका वंहाव यनाप्प काव निष्घ त्तमया दवं विल्हा नग्रुङ्क
वयपश्म ला तिक्रूवी । भ हश्मक मघमू जिवनि । स्मगी व ल दि णवेगा लावतुनस्त्र मछु लवे

क्षे त्रा ग धृ न स्त फ वि द व ४। का र्यां म ति मा न ४ भ ना व न । ए भ प य्य नां ह त्री र्मि न स्म म रू ज रू ल्
ग स्स म न्क नौ न वि न । स्कृ न ब हूं १ हु का क य का यं वा य्स स्फ य न वी जि नं । ज्जू न र्नि पू स्त त्ति था
हा लं का ला ला ष्क्रि न सा द्द्रू थ । ज व प्र या गा न वि मे क या जि व न्ध प्र ल य । मि व ना या ४ । अ कूद
ला क म ल हा वि म न्म त्र ना गा । ज्र के ना र्नी भ ना । म्म क्ष नी लि म ठा ला क ला पि र्नां । व ज ज्ञौ द्म लि
पी उ य म्र । या क्ष्कि न ल ४ छ्र र्द्द्यं ने वा त्रि म या धु ॐ गा हैं का न व य न्न वि द र्फि नं म क्ष ना ग वी ॐ
प त्रि फ्र पी उ य नं ज प्य हूँ क्लि त्रि व र्ष व वी । म ह प्र ल प्म क र्हू न क व ह्रूं स प र्‌ । व क्र्ं । वि म र्थ्यं वा
मा क्ष्कि नं । हूँ क व ठौ लि नं ठि फ ह्रि र व ग्रु । म पा न्स्फ व्रौ वि प वि पू र्हू न ज्ञू क ष्क्रू ड क्रा स नि ख्वा
स्व्रे ४ पू र्व यं न । ज्र थ ख म्र जा ग ना न क्षि लि मा न प्र ष य न । वि पा ट नं । क्रि द मा क्रू ध्वा न । हूँ का व
न ह्रीं नं क या नि गा या व स्र न ला ला द्दे । श्री ए न य म छु ला स्कि मा ला ला न म्स क्ष नि र्गा ना व ल व ल्
वे ना व न स्य प द म व्रा हू ४ । प्व व भ्र पा मा न व ध न्न व ॐ ना मा ला वी ज्ञ यी क्रा । स्त्रे न सं र ध्ये ४ । पि नि व

तथा विधानसर्व्वानामयथाहुँ कावखालि पुविनस ॥ विध्वंसनक्रिह्लाकमापिपूर्व्वहनवक्रध्विव

तथा॥ नलसप्तिकाकृफिनवनूपं नवाङ्हि फीह्लल कील धनू अह्ल विभाजि वायानहिनप्रित मावि

विसक्रुकोहिनाह्ल वागणपलिस्तूरवपुत्विपहं पस गोह्ला का फिलापइस्तूपलन॥ उँ स्तस्त्र निसूर्ध

वजसूपर्दनवकूर्ह्लपवूर्व्हिपननयघा विहूस्तूद ॥ त्रव ध्वान कर्म्मा हिठकृ रालि वाय मतनयवि

घ्रालू॥ सूफूलंवहिंउगाऊँनागासह्ल्व्रेनलंकूम दहवागष्ट कंसहस्वदलगागनस्के नह्लाग्र ८१

स्वनेमघावर्ण्णरंति वीर्य्यपनलिवहियादूजा॥ पिस्यकवरूह्लसीमादयथूपघाटलर्ध्यै॥ उँ वज

धेवाय हानि वी पस्मवक्षितवांवूस्नि घेठ हूँ हूँ खधतुम धगगं॥ फ्रिमूरवंत्रि नमुत्र सर्व्वालंकान

हूलितं॥ वाग्रवर्म्मनिवसतनवकूवर्ह्लमहामतजं उठिहूस मनपुहं॥ खधक्षा वैवखेञ्जवध

नूर्ध्वानसस्थवव॥ महामासकपालवजनवूकंवकथा॥ पातावेवांकूगंववामडसलाविवाक्षिन नमुम

पुष्पाली ठमहापात्रं सूर्य्य हुंनाहुवालिकं॥ निकङ्गालाकूलयमहावस्त्र विनान वा॥ नमस्यान

सायाँ स्वह्लि सर्व्वषां मातनं सर्व्वस्ववितं ॥ ह्लानऊल समू जाहेप्र ह्लामक [illegible] ॥ ऊ हृव
पक मध्व षडपा ॥ पसंकूननतु ॥ विक सदं ध सविहातधूमस्न ह्ली वधिवर्ह्लि पूवासंवू
व उह्यासन्न दहृया मजान्व विविमू ह्ले मं ॥ पूर्व्वी मिताल्वपक्षेह्ल लकमूखरा ॥ ऊन्नि नूह्ल
पकनस्पाग्र्ग ह्लायूधूमसा ह्लस्थत ॥ ऊापदवहावह्नु पृथिवानूपं हस्थव ॥ ह्लानमाधिवि ह्लूतंम
र्द्ध वऊल पृथ्वीवाप्रजा अल ॥ पून ४ सकलऊपिसह्लानक्रूय कें ऊ ले थे ववाल थवास्वा ॥ ि
ह्यानां प्रवेवीसाङ्क्रूपित ४ ॥ ह्रुं कानगीकिकाकाव सर्व्वमागी त्रिताब म ह्लिसा ॥ व क्रू
क्रूह्लन यय ह्लूह्लोऊ नपल लऊ कवनूहा वसह वऊह्लिवि ह्लोसन ऊ विसर्व्ग्रस
वि ऊकक्रू धर्म्मविमाह्लि मू ए नमभ मू सा नू धर्म्म ऊं ह्लि मारवऊ ॥ ॥ ऊसन
गीयमाननकूल पूजास र्वह्लि वाह्लकं हविदिया ह्लहगाव नूसर्व्वात्थगालथ ॥ ॥ ॐ
मिवार्व्वनथा ममार्व्वह्लि ममर्ष्व गति वऊल ॥ ॥ गूमूवऊप्र हपाऊावलि कर्म्म

नथया

यथाविधि ॥ बहुना अभसुतुलं श्रीह स्कन्मा ३ प्रसाणनमः ॥ स्त्रिग्वालंकृत्रिका णंवकावय
तु ॥ स्नूर्व पूजादि सत्कानैर्मस्य मांसादि त्वनैवेद्य मदनेन ॥ पिमदन्नोहूकें ॥ वाभिह
र्दीपकत्र माहि दक्षि ॥ ह स्य पित्र रागेज तं ॥ स्त्रर्व्व धांम वड वां ॥ शाप्रंवामस्य नसं ॥ णा
श्य पूर मार्च हाजाग ॥ वज्रसत्व समाधिवा ॥ अथ वाहनूकाय नमः ॥ आवाहयत्सू
आमन्त्रणं ॥ विधि दृष्ट न कर्मणे ॥ यक पूष्प धूपादि श्वगा धं वापि निवेदयत्सू ९२
ॐ कावांकि नमः ॥ पस्ल हाउ सास्यहें ॥ जिह्मन सुविलम्बनमः ॥ आकृष्य गणा दास्क सू
तुह्मानां कृणप्र हृदनमः ॥ इहगवनूकें ह्मानां कृ गणप्राकान ॥ हृगावानाहि प्रयमप
गाप क्रिशाकें विनी पंता वा नये वव तुलीयं प्रफ माससा वचतुर्थ व्र क्ष ॥ सेजाका
॥ पंवासक लानानमत्रम ग्रं ॥ एतेपके कुलानि पयें ह्मानप्रहदकं थापं वैनम हाह्म नतुक
नकाथितवाहिता गय ॥ ह्मानां भप्रहं दल थाउम्य तत्सर्वकर्म स्मः ॥ यदीकें कास्वतक

वप्रविकुर्विता॥ ओँ का वसंहवाद्वी ४ मा वासं सायलावली॥ एवं हाविनमात्र धवुद्ध व प्राप्यते ध्रुवि
न किं पुनर्त्रया सिद्धय॥ अथवं सिकर्तुका यन अप्पा काहू स्यां मू ध्वकनलुगा यावलुच मुंप लि
भायसर्वा कार्य व स्नषिता॥ मर्त्तु रूप ति मूर्खधा या छिखा॥ आलानं वकृव र्ष्ठ ध्य ख्यालव साजवान्॥
छितुजानक मकूं शपा शगे ही नहस्ता नि ध्यम्य॥ लिनसा ध्यवका लाघूप दानं षूक्ष्ण वज्र
४ वपि ले॥ सार्द्धका मक काली हृमंवि कयका॥ अनल ध्य स्व पागेन सफा हाव क्रवर्ल्ल नमपिव
भमानयपके॥ यावज्जीवं वनणं सय॥ सुथ्य भा लिविप्र विविबावनार्थ माहा॥ ध्रीपनमा ध्यप्रूपमा
त्नानं तिम्नखं वन्द्र व वर्ष्ठ वकुर्द्धं जनक वज्ञां ह लप्रहां॥ य वीदि वक्रु स्वी पविक्लं विविक्लू
वक्त्रावजां कं लिकी लान्हहव आवजगावींव॥ दाक्रे॥ लनवजाक वेश स्यभ॥ तिर्दा॥ वामगावीष्या
कटिहूलाप ध्रुनं भावि लें विविक्लूणनध सर्वा तस्र्व वूजकूलमम धान सर्वाका नवि वाठिंन॥ दक्रि
हासूहय दाया का॥ श्रीतेषक पाठन लग हिगाताम लवजानिवार्य ता॥ ॐ महा शूरववज्र॥ तिज हूं॥

कृतासूवकनंवस्ते सेवेंहा बिलंयाराम नूक्रव यस्हविकाशी॥ ॥मावलेठंंद्रमाह
प्रमदावलीकतु का मन पूलथ वजूक्ष्मणं कूक्कृह्मा पारा हिङ्ग्वामदन हलंहकयि
गथ॥ खूफेनथकामभिकावतिलकंव अर्यवक्रपन्न॥ ॐ अमूकिमजीथवणी हवग्रहि
अमूवनायूलंगस्फ्रि॥ अथकालहस्तस्थयनलहृदयपद्मम्रुद्दलो॥ गुरुह्मवर्हवि
विकल्पनृ॥ कहृप॥ निरूलीयंसवनंपत्राक्षुकं: मीनवस्थविकल्पनृ॥ आमानमान्तवलषना ८२
गल्पसिलवर्हगकाम्भनश्रवकं विरूपनृ॥ कस्यनागमक्रियामम्भकं आर्थ्यकसिसाध्य
गवीवं निपन्नक विरूपक॥ अतनध्यानयोगनश्रेष्ठपविपूर्हविश निर्विषंकायाफि
॥ अथवन्द्रसूर्य्यविधर्हु कामन॥ शिपि स्तूकमयंवज्राक्रकृत्वावशोदकननिक्षिपत॥
मन्त्रजपन॥ ॥ ॐ वज्रार्क: मावव २ किसु २ हवजाःपहाहा॥ स्पफकादिजपन॥ पश्चादिं नयुक्त
कर्मासमावहनृ॥ तिसुकावज्रसूर्य्यरात्रीदिवाजपिंस्मृवि लक्षाहवनजापनसंन्यविसाध्य

यखटिकां साधयेत्॥ खटिकां पिष्ट्वा पञ्चामृतेन कुण्ठवच्छिन्न मात्रार्द्ध वटिकां कारयेत्॥ ओं

वज्रकर्णे मेरुवज्रे महाहा ह्रा ठठ ४ सिद्धानि॥ नामाधकमतु लक्ष्मी वां वश्यपेत्॥ वक्ष्मिला

हृदयपेत्॥ सर्वं भगवत्रय नीच छिन्ना हरेत्॥ द्रवा नास्त्वा ठितुकां मन्त्राणि लक्षं साधयेत्॥ वज्रो

वधवज्री पूर्णं साधितं कुम्भ वच्छिन्ना मित्रीणं॥ पूर्व अ स्त्रज्ञ मुद्रयेत् पश्य तेषां॥ पिष्ट्वा पचयेत्

सलक्षं नाम पादत्ता क्रम मन्त्रं जपेत्॥ ॥ओं वज्रकुम्भ पाटय स्वाहा॥ सिद्धार्थकादि

पेत्॥ पञ्चाशति लक्षं वध्य कम्पन मति सर्वं घटि॥ ॥अथ वर्षापन्यागं वक्ष्ये॥ ओं आद्र

ःकालं विधिवत् सूत्र प्रतिकृति कृत्वा पंचामृतेन स्नानं पयेत्॥ कृष्ण पुष्प धूप वर्षयेत्॥

नाग दमनक नस्त्र लेपयेत्॥ हृ क्लिं दत्त मिवा व्यापयेत्॥ सुपाव धूप स्कन्ध पयेत्॥ कृष्ण

गो क्लिय न पूजयेत्॥ कृष्ण कुसुमानि करलितं न लक्ष्य वक्ष्यपेत्॥ वामूर्वा॥ दिशि पूर्वक्षि विनिक

वातस्त्र स्नान स्थापयेत्॥ नस्पास्त मेतु लवर्द्धयेत्॥ नस्पम धारा जलेन स्नापयेत्॥ सूत्रं

तथाग

माक्रान्त हुं वज्र लिखेत्॥ स्तम्भयं सततु भ्यचन संघातं महद्वज्रं विभाति नत्रं लावयता॥ य
क्षा दाचय स्मात कृत्वा वन सामन्त्र पना॥ विजनदलो॥ ॐ घुरु २ चल २ घातय २ सूनन्द्धि
हक्रायन नागमधिपमय॥ हूं वज्रकस्य फ वामालगगन नागमन्त्र॥ वर्षय वर्षय गर्ज्जय २ फुः फुः
:फुः फुः फुः फुः फुः हूं हूं हूं फट् फट् फट् स्वाहा॥ यदि न वर्षयति तदायमन्त्रं विपचित गयन्तु
वर्षयति यदि न वर्षयति तत्र मूर्द्धा स्फुटति स्फु कस्यव मञ्जली॥ ॥मघानां सहचिन्तु ८३
कामं तत्र नदा मूर्द्धा स्फुटति॥ स्फुटकस्य व मञ्जली॥ ॥मघानां सहचिन्तु कामं नतन या
मन भानवकायेद्दूं हूं मन्त्र मालिखेत्॥ ॐ नहूं यि २ समस्मानवप्रियय स्वाहा॥ ॥इति
श्रीसर्वतथागतकायवाक्चित्तवज्र गुह्य तद्वहस्यात्ति॥ रहस्य गुह्यसमाज तन्त्र राजे सर्व
कर्म साधनं नाम एकविंशतितमः पटलः॥ ॥भगवानाह अथ मिक्षामि गुह्य ल गगुह्य
वज्रमन्त्र क्षिमां प्रवतु रुत्वतज्ञाना मि कथयस्व महाभूत॥ २ वज्रमयथागतं सर्व सा

ला ला ललाट सं॥ वज्रसत्त्वस्य पूर्वस्याप क्रमयं वा॥ द्वितीय कं॥ द्वितीय मस्तक चतुर्थ ज्ञानल
क्ष्मी॥ ... व गीवा जपलक्ष्मी संध्ये व लक्ष्मी॥ प्रज्ञा वादिम ना वा नां सर्व्व भ न्य कि देवता॥
आकाश मस्तक पर्य्यन्त वाचि मनु वाचालिनं॥ द गन्धादिक सर्व्व विज्ञाने लोकधा ज्ञान नैक केश भूक्ष
... सुदेशतु विन्यस्त॥ पूर्व्वतो नानादेवी या उरूवाउरु च वा॥ पश्चिम मासक नाम: प
क्रिया वृजल्लाव ना॥ सौव सर्व्व मधु नाका निर्व्वज्ञा ला व चतुर्थ कं॥ आकाश मध्य रूप कुरूप
सहा युत्तमस्ता॥ उरू ल्लक मनी रूप आ रूप्य रवद्ध। अङ्कु प्रज्ञ जक्रू: रव कू॥ ज्ञाना
म ज ल्लान कुन स्याम चक्र आगामा॥ प्रज्ञा पार मिता देवी रूप खरातु धात्विका॥ दुर्ल्लप
भवजा ना यथा पूर्व्व तु विन्यस्य न॥ ज्ञान दर्श हिम धान्ना सर्व्व संहा वस ष्टिका॥ वाल प
द क्षद गच्छु ज्ञाला लिका लिप या उ य न॥ आलिका लिख मा गान सर्व्व संसार कृतका॥ वज्र
प स्य मध्या य य कु उ पाय मध्य भव व॥ पाल व प्रेमाव य न्तु कमला व हूं उ पवनां॥

तथागा

दिवाकरवज्रसुसंविलासस्यता॥ वज्रधृग्वाक्प्रभवत्र उपायत्तु देवानांत्वं कृष्णदेवतां विनयन्ता॥ ॐ कु
नवज्रसमुल्लासपंचमात्रायपयतु बुद्धिमानां॥ हूंकारगीति काकां यं सर्व्व बुद्धत्वं जयन्ता॥ मह
प्य नवज्रसमुल्लोलुतानां गुरु सत्वमारिविद्याधर्म्मपिता खं कञ्जवज्रधूमानयन्तु॥ हूं हूं हौ हूं प्र
ज्ञापायन निर्नादप्रज्ञापायनकरामया॥ ॐ वज्रधर्म्मावगीतप्रवर्तिनः प्रावर्तितसर्व्वबुद्धक्ष
प्रव्यालिर प्रज्ञापायामितानादस्वभावा॥ वज्रसत्वहृदयसंगीतमतिः हूं हूं हौ हूं स्वाहा॥ ॐ सर्व्व ८४
तथागतासिद्धिवज्रसमयनिष्ठस्वमन्त्वां शुभयामि॥ ह्रीं हि ज हूं फट् स्वाहा॥ प्रज्ञापायध
र्म्मता प्रवृद्धजगाधादिवा॥ प्रज्ञानपकसम्भूतां सर्व्वबुद्धार्थनाथयन्तु॥ वज्रनखेन यालेख्यस्थ
धर्म्मानवादयन्तु॥ प्रज्ञापायधर्म्मानपवृत्ता जगादादिवा॥ विमानेन सत्वार्थकृतयागीता॥ म्न
कस्थनयागीनाहस्तघण्टावज्रध्यानिनादितां॥ सागराम्बविविन्नस्थासिद्धिर्वंवत्कृपता॥ ग नयुस्म
वज्रपथ्यसम्भाग हूं सूत्रादिलक्षणं॥ यन समाधिविधानेन सिद्धाभैनात्र संशयः॥ ४॥ हृदिका

थुकि मू क्लिस्तु सिं नथ ल्वाद्धिं मन्य कापवि गप भा क्लिक र्म्मा । हि अक्रु सूत सा लकू नं । हो व र्द्धे व ङ
नं वा । पि पक्व । वि जं वि लभ सू । पो । स्थि कवा कू सुयंतु स । नि मक्कु वि व कू ४ । कर्मं मा दिपुंगान्ध । दि
सर्व्व गान्ध विज्ञुभ न ४ । । वाजिता न्या दि पुतुठि का कृलाव हा नां पा । वि कि क्लिं तु ४ । । रू डाक काल वी ङ
कु वा । ह्नि नथ्ये व वा । भजं य ज्ञे प्र कर्म्मा । हि जू क्लिवा लपत्रि कि क्लिं न ४ । । भ क्लि पो । ह्नि व भा । ह्नि वान
पूत्रीजीव सर्व्व कर्म्मि न ४ । । मक्तु सा थ ना पर्यै । शु घ्व भा र्थ सू र्द्धि मव वा । । थ्रु लू म क क्रु भा । कि का पो । ष्ठि
कम्क था । अूहि वानतु व ष्टीनां वि ग ष कर्म्मा । या । भाजं य नू । प्र थ अ कर्म्म वि लाग क्रु म्क क सू ता दि क
ल्ला य न । दि भा वि दि सि व म ष्टू स्य म ध्य वृ ष्ठि न व म स्य तु । । न व दवा दि सू ज स्य न व म धि स्क य न
मूहन्कुयु जि का सर्व [illegible] स्ता प नि क त्रिं नं । व र्म्म सा क्लि जि स्मू पा नां धर्म्म ष्प तु व ड र्द्धे न ४ । क व न थ
सर्व्व संवि श्रव ल्व न पू वी मा कू वं । गाव य भा गो ना क व म ध्य तु मूम ना कू व म स्यं तु सि न व र्द्धे स वि
सुव शिका ला मन्त क ध्या । । मू गु ल्वा व ज्ञ म ध्य क्रु प स्र प तं तु वा म न । । पक्व व ज्ञा व नि मी र्द्धे ष्ठा संपूर्ण

नथमा

स्म मक्ष मुाह्याव प मू सर्व्वन खन मूक्त तस म पिवृक्ष्य नुा प म्क क्ष्य प मती मूनु स्पद्दि विभेष

नष वकीह्याबंतु वा माता वक्ता लेम नू व्यहाव म धा गम कि कं फा ट विह्नन पोम्छिक न मधा नह्नेन

ष मूवामाव गंध मिमूफ़ कं न कुं नामहि वावेन ष। मूयुक्त व आ कू म ध्वय ना कर्ष राव ना सम :

ह्नि नका पह्या वन सिद्यान नाव गंम ध्य ष। मूमखे न धा गि : नाम न ल म त हा व नाा मूनख वजु

पटा नामून सायतमू जाज वृन था या गिनां कव माल म्वा सर्च्व न लाम्बि का व पना। क्ष व म का

तु क र्मा मूप विसूफ़ टं तु हू व न ष। ष्ट्ध सम्मा कम हा हूा नं हून कर्ष्वं वि गम न ष। सम्मा हि गं

वकुमी ऊ म स म गा विहू ह्यद न श। वक्रम स तु लमधा हू हून वीऊन नि मि गं ह्याव या ह्नि न वे

र्ह्व तु पन मा सन माान सिनं। दिस ऊं स ल प र्क्ष र्के न्ह वी र य ए र प्त पि नं। मह्य मूडा क्षो पा ली ह

दिहू नक्त पी ऊ यना। सि न व र्ह्व सू ग ा रक्त त्रूप र्व्य वि गं व न पूतुं। स्थन नं व फ्व सम ये र्नी ना य

स्मिसामूक्तन षा मूगा प नऊम विधान न न मक्ष्क जा पंप्र कि र्हि र्नं। वाम र द फ्रि ए पा ति सांत्रम सांजा

८७

नयुग्ध

किती सुख॰ ञाति कालि विज्ञन हूं काल स्रुतस्सु वीनं ॥ भूसा विजंतु लाव म धागी लपू वु सु व खमा
पूयान् ॥ ॐ तिम नुस्त्री पहां व नाना मजल विं भागि ममनः पवठ ल ॥ ॥ श्लूवज्ञय:
थम तख मक्तु नि भाग ग लोकूना । संसाव नठु यागी भं पपा श आ हं दगया भिम । अठु मिच्छ भि
ह्लान ज्ञन वक्षा नाति की दभो ॥ धाव हेहलं विह्ला न स्यु गुन दा घादि की ह वा ॥ श्ल लं सुम्य कूप्र
भागमावं थम्ति कालक ॥ सु मार्गा भ हलं स्लुप्नं अमार्ग हव दा षक ॥ विइनाह स्युउ र्घा
नांव गृ भादिफर्शुया ॥ पानापान वावे स्पन्न वशाव स्या लकूनं ॥ नाहि काभि कं स्वर्ग कि
ना: सूपद्व हिना ॥ डर्खडर्ख कास्तुनस्य गल्लागाति ॥ प्रकीर्त्तिना ॥ पक्वा हाव नागभांक र्ह्ल ह्ला
सिठ्व द्वव गा ॥ यक्रू दिफ ह्ला नन वां नांन पवार्ह्निर्न ॥ हवपाव स्य प्रनामा हव दाष क्रि र्य
कनथा ॥ सृष्टी न वा कहावा नांग्रूपान्तं वं कूलपूजा हव संक्रान्ति लकूनं ॥ यमा घावा विज्ञा
षस्य संसाव हृदमहव ॥ जस्मा द्वाव विंगेभवन यागि भठु समाहित ॥ आगानाम सूकाव

ॐ सर्वक्र वीज ।

तथगग

[illegible]स्रापकारांसमस्तु विंकक्रुदर्शित नरहद्यपक्र वादितं मूलका क्रियागामहेम वउगाहे ४ पूर्वमा
यक्ते सर्व मायानिस्कल्पनं ॥ पश्चैसद्र कासहूमानं गावन ध्रुसाराव ना ॥ कगानिस्न स्प तान
वीजस्य सितमंचूर्णं ॥ पानापान ४ स्पाशीनानस्य वीजंतुकलिनवज्ञ ॥ तस्य पूर्व स्पर्श
सस्य लवयत्तू समाहिता ॥ वायूवर्ण स्पर्द हस्य वायम छुलखनसा ॥ वायू वीजस्यम ८४
लानि वायूक्ष मस्य मूलका ॥ विन्दूनाद स्यपूक मा कर्षयम ॥ वर्ण वीजस्य धाया नाम्न क
माहितु धाजयन ४ ॥ धमाक र्षिनदन दिहि ४ ॥ स्ढा नेश्च तु विगातिस्तन क ४ ॥ पदस्थ
नपद ऊर्ध्व नवसन्धितु ऊर्ध्व ४ ॥ ऊर्ध्वपलिन वीजन ॥ सय दना क्रव ॥ याव नाद
नत अर्ध्व अर्थं नस्य तु वीजकं ॥ वर्गयूर्वादि पर्व स्पधाकच या उतिं ॥ प्रयत्न नाद दनवा
मूवीजा विनीस्य तं ॥ पूक व्यानानी वीजस्य वायम छुलखनसा ॥ यठ विंमतिहि ४ स्त्रा नाग्रक
नेत्र विंऊर्ध्व पवननतु ॥ पलिम नतु ऊर्ध्व मूलतु एक्त्रयस ॥ नवसंधि वर्तं ऊर्ध्व सधाजा ।

कुसान्तस्थ द्वव पाठस्य विप्रालापपेक्षतं ठर्पितानि हर्मो ॥ सेवैका भापरोगास्यत्र
हा मार्ग हम्रू चा ॥ त्रितुयाथनलिफसारव दोबसप्रूव ना ॥ मथ पकसस्तूत्पत्र प
क कालिसृनिर्मल्हा ॥ तथपकादिहानां ह्लानकायाहि रव प्लिनं ॥ उत्क्रान्तिकालसंप्रा
फाजकालतृवयानतं ॥ तस्मा विक्रान्ति दहनां मायाय सठ सुवृद्धि नां ॥ ८ नाकनायथात
लू याग सा ध्यं वि ल चक ॥ तस्माविकृताव नपूर्वलकुत सर्वतत्र ॥ हदिमधुल मध्यस्थं
पथे वृक्षस्य वीजकेष ॥ तस्यकाला कवसीनावृया लभक पूतातसां ॥ पूर्वोक्त कलसु सत्पास्य
पूर्वलकृत संयुक्त तद्य प सर्वरूपादि हूं कावाहि नवकस्य ॥ वीजतत्र यं त्रिधा यव व्रम
गुलमध्यगत ॥ पग्रसास्तनमासी नाह्लानताकिनीमारानां ॥ वि विक्रयता ॥ त्रिमूर्धसंभु
संवेद्यत्री न्यठ कियीतमाल्लुमें ॥ हसितमश्री ठ गुणात्र सर्वौ हनमस्हाधिनं ॥ सिक पुदें नव वृ
सा सूर्य लभ हा व सूत्र रांधिनो ॥ सस्तनं व मध्येव सूत्रपश्चिके सहितं ॥ प्रथमतानविन्या ॥

स्व द्वितीयं अंकुशं तथा॥ तृतीयं वकारमूर्ध्वगतं वामकर्णे नीयं पश्चा॥ द्वितीयं पत्र ह्राहृषनूर्ध्वं क
थ्यते लिकाला मनक ध्या॥ स्मवृय न श्वास लिख वा॥ न्य स हक्रू वर्णि मास्वः द्वितीयं अंकुशं
तथा॥ ब्राह्लिकाली प्रमाता नय श्वहृस्य वीजं वकरा॥ त्रिकवर्ण द्विरूर्ध्व मं ह्स्क्रू ह्सा सं स्थूक
वीजके॥ कदली पुष्प स्यपन स्म हृदि अहु जस्थापन॥ जस्प्रम ध्यातु हूं विह्ला नमहि
मन तु॥ लावण्य लावा निष्क स्मृ॥ निरूप रूप॥ कलावा स्कृ॥ हिय कं स धाव पक्षि वक्ष पर॥ थि
गहव नवबाला वस्थूम तुल्य वकन॥ नस्य मध्यतु त्रिनाजा॥ त्रिम ध्यतु सर्व॥ ब्राह्लिका
लि मूक स्य वीज स्थूः नस्य वन कुंभिनि॥ दालाहा वह लाप हाशांगी नामवि कोष नठ॥
ह्लू न वीज स्थु दा ला ना हल मानतु मध्य ना॥ हृदय ह्ला न स्य हृदय मानतु पूष्यक॥ दाला दावि
नहृ ना हा थ हजा पता॥ हुं ह्ला हा व स्थूय वाली नांजाल वा स्कतु काव यम हा॥ दाला लकहं लं
क्ष्मा हा मात क्रदा ह्रक्ष्य हा॥ दाला हाव स्य यागास्थः समता ल लहाव ना॥ समा हि स्मावहा

वन सिद्धन नाजसं गया॥ ॥अथ ह्लानवू पः नगा ह्लय॥ प्रदीपाकार विरुहन कर्म्मकु
र्म्मादि व्रक्रल॥ ॥अव काव्दिहिनार्थ हिकाथिनं वसृ ताहिनं पस्फटिक विहिहि ह्लिवीकल प्र
दीपाकार वनसं॥ सर्व्व प्रपञ्च मालम्याप्रपञ्च निष्प्रपञ्च रसं॥ ह्लिलाव आगामा लम्ब्य सृवम
नसा॥ विलऊं गृ॥ हरगावनू कनह्लन नह्लान विश्रमनं हगवानाघा॥ ह्लानपञ्च विधं थाकं
गुञ्जरथं नह्लान वः॥ वानागम सृवाक्राध ह्लान नं॥ दिनान निप्रनह्लानस्पाहय प्रकृदंडु नानकं
॥ नीर्थकमाह ह्लान॥ अथ वनाध्याव नातिकं॥ प्रथम दनकाथिनं ह्लानजकु प्रकाशिनसकानं
वाल ह्लानं तु ह्लाजिना॥ ह्लान नल वि अघन्तु आगमास्तु वि अघनं॥ जन्म कोटिः सृहश्रवम
ह्लान नल धादि ता॥ ग्रह्मासृ लाप यह्लेन आगमास्त्रादिश व्याधि नन यंगास मायम॥
त्रुकिमृ क्लिपदंका नंआगमास्त्रा नृसा यनं॥ स्नाना सान पव यागं कथिनं भवः वनानन
॥ॐ नि श्री सर्व्वनथ भणाका यवाके श्रिकृगुम्लानिगुप्त गुप्कसमाऊनीर्थ काल॥

ापनलनलं नामस्तु आर्चितं ग मि नमः ४ पटलः ॥ ॥ श्रुवज्र प्रदीप्तवाज्रज्वालानलार्का मंवेव

हृलक्रंदां ॥ ॥ ॐ वज्रामृत मल सर्व हूं स्वाहा ॥ हृदयाय ॥ ॐ आः ४ हूं हूं स्वाहा ॥ वसस्वस्य गप

नथना मन्त्र ४ ॥ ॐ आः ४ श्रीं हूं स्वाहा ॥ नेत्र ॥ ॐ आः ह्रां हूं स्वाहा ॥ वज्रविश्वाय ॥ ॐ आः ऌं हूं स्वाहा ॥ या

मा वज्राय ॥ ॐ आः ॡं ह्रीं हूं स्वाहा ॥ वज्रसाम्पाय ४ ॥ ॐ आः उ हूं वज्राय कायाय ॥ ॐ आः ऊं हूं स्वाहा

वज्रडाकिनाय ॥ ॐ आः ४ अं हूं ४ स्वाहा ॥ वज्राय ॥ ॐ आः अं हूं स्वाहा ॥ पृथ्वीवी वज्राय ॥ ॐ आः ६८

४ उ हूं स्वाहा ॥ वं ॥ ॐ आः ४ हूं स्वाहा ॥ वीभस्य ॥ ॐ आः ४ एं हूं स्वाहा ॥ मकरध्वजाय ॥ ॐ आः ४

वज्रांकुशि ४ हूं स्वाहा ॥ वज्रांकुशाय ॥ ॐ आः वज्रपाश हूं हूं स्वाहा ॥ वज्रपाशाय ॥ ॐ आः

: वज्रस्फोटवं हूं स्वाहा ॥ वज्रस्फोटाय ॥ ॐ आः ४ वज्रघण्ठाहा ४ हः स्वाहा ॥ वज्रघण्ठाय ॥

स्व सा यांदी नापूर्व वनाञ्जिमक्तुजपस ॥ ॐ आः स्वाहा ॥ पुष्पाय ॥ ॐ आः स्वाहा ॥ ॐ हूं स्वाहा मगुरु

गान्धाय ॥ ॐ हूं स्वाहा ॥ दीपाय ॥ वज्रसत्वस्य ॥ ॐ ह्रीं स्वाहा ॥ हृदकस्य ॥ ॐ वज्रगु

क्ष सिद्ध पञ्चस्थानागय त्री कपालमाला भलिलि आध्येवत्रियपं गमगास्तः वाभि नि हूँ फ

ट् स्वाहा ॥ अपेर्थ्याह्र ॐ वज्रवन्ते गवनि रव हा भि महा वज्रे ॥ ती कपाल माला मकु द ञ्चाकघा

क ध सर्व्व दुष्ट स्यमाक छलद्रुत्री हूं फट् ॥ ॐ वज्र धनाहिः खे खवाही २ सर्व्व दुष्टा नांवि

कृत वेमा धा ॥ विनिविः कृना लंकाय हृषित ः हन २ दह २ पच २ मालिविलं व समयम

नुस्मर त प्रव गाय ॥ फ ञ्चुम घा उल्लापय सर्व्व हूं हूं फट् ॥ वका स्वा ॥ ॐ घ्नः हिरगावति वज्र

गुह्य अचिाहि वज्रविविध वश धा ॥ विनि सर्व्व नथमान गुह्य स्त्र समयमनुस्मर हन २ वंगाः

नाभ पय २ पूरय २ आविशय २ सर्व्व हूम ॥ निर्ह्र २ नर्तापय २ ह ह ह ह ह हूं हूं फट् ॥ पू

क स्वा ॥ ॐ वज्र मल त्यात्रिशिद २ सर्व्व दुष्ट न दस्य ॥ माकर्षय २ हन २ निमर्थ २ मारय २

विलम्ब समयमनुस्मर हूं हूं फट् ॥ वधुसत्वा ॥ ॐ वज्रम हामहगवि ४ हः हः हः हः हौं

मलसा हूं फट् ॥ हरूय २ सर्व्व दुष्टान् निर्मथ २ छिदय हूं फट् स्वाहा ॥ घस्मवाया ॥ ॐ हम्क्षा नि

गथाग

दिफ समसय वज्र हूँ रु प्रोहँ वृक सत्त्रिराय्या॥ ॐ वज्र व श्य ह्रीँ॥ वं गाथ्या॥ ॐ वज्रवीन्य ह्रौँ॥ वि धाय्या॥ ॐ

वज्र म कुल्न्दे रूँ स्वाहा॥ सूकुन्दाया॥ ॐ वज्रमर्दण हूँ स्वजाय्या॥ ॐ वज्र वडवा हुमारिव्याग॥ गश्व विह्रूँ य

हिहिहि हिहिहि रूँजः स्तु वंगम्या॥ ॐ वज्रयं स्तुवया ह स्तु रवीत्रौं वं ह्रौँ॥ वज्रमुख्या॥ ॐ वंज्रसय्यी रू

रा॥ सिनि सिहि वी सि ह वज्र सिहिलि मं सिलि हिनौ॥ वं वंसि हायय वज्र धातु संज्ञिपनी महायक्रटी॥

स्वानवूपि नि मसहप्रलयः निर्नादकामवूप॥ ॐ दुःनः हा स्वानां स्याग्व हृति सर्व्वमन्त्र॥ फिङ्गति ८९

स्वू रूस्य सपयि वा वा॥ ॐ क्रः स्वाहा॥ निवा स्माय्या॥ ॐ ग्राः स्वाहा॥ वज्रा॥ ॐ ह्रूः स्वाहा॥ योमवी॥ ॐ ह्रीः

स्वाहा॥ वा वि या गिनी॥ ॐ ङ स्वाहा॥ वज्रताफिनि॥ ॐ तु स्वाहा॥ पूकसी॥ ॐ ग्रूः स्वाहा॥ भाववी॥ ॐ

अ स्वाहा॥ ब्रुतिनि॥ ॐ दं स्वाहा॥ डाँविनिः॥ ॐ दं स्वाहा॥ योवि॥ ॐ अ स्वाहा॥ वोवि॥ ॐ अ स्वाहा॥ पं गगुष्ठ

रूालि॥ ॐ दुः स्वाहा॥ घस्मपि॥ ॐ ओ स्वाहा॥ रूव वी॥ ॐ श्रू स्वाहा॥ वेववि॥ ॐ तियी नेमालास प

यिवावस्या॥ ॥ ॐ दवपिवू वज्र हूँ रूँ हूँ स्वाहा॥ हं वज्रसपहृदयं॥ ॐ शं लां क्षाकंपनं हूँः रूष

स्वाहा ॥ चित्तहृदयम् ॥ ॐ कल २ हूँ सा फट् स्वाहा ॥ वज्रहृदयम् ॥ ॐ किटि २ वज्र ॥ हूँ हूँ हूँ फट् स्वाहा ॥ वज्रहृ
दयम् ॥ ॐ नमो हेमवर्णी वीरवीर्यवराय हूँ २ फट् ॥ ॐ महाकाल त्रिसत्त्रिलोम हूँ हूँ फट् ॥ ॐ जटाम
कुटमुकुटाय हूँ हूँ फट् ॥ ॐ अस्त्र कपाल ग्रहिषदामसुवोप हूँ हूँ फट् ॥ ॐ परशुपाश घण्टत्रिशूलखट्वा
ङ्गधारिणे हूँ हूँ फट् ॥ ॐ व्याघ्रचर्मवसनधराय हूँ हूँ फट् ॥ ॐ महाधूमान्धकारवपुषाय हूँ
हूँ फट् लोचनत्रयम् ॥ ॐ श्री हेरुकवज्रडाकिनीजालसम्बर हूँ हूँ फट् ॥ स्मशानप्रियचित्तहृदयम्
ॐ श्री हेरुकवज्रसर्वदुष्टसमयमुद्राप्रहञ्जक हूँ हूँ फट् ॥ पीजासर्वाधिष्ठहृदयम् ॥ ॐ फी हा हा हूँ हूँ
फट् ॥ विद्याराजहृदय ॥ ह्रीं श्री हेरुकोपहृदयमन्त्रं स्य ॥ ॥ ॐ वज्रवैरोचनी पक्तुडाकिनी
य स्वाहा ॥ श्रादशाकुला सिद्धडाकिनी मूलमन्त्र ॥ ॥ ॐ मायिचिसेस्वाहा मायिचिहृदयं ॥ ॐ माची
चिवज्र ली वगावीवज्राहमूषि स्वाहा ॥ उपहृदयमन्त्र ॥ ॐ पिशाची पर्णशबरि सर्वविमानप्रशमनी
हूँ महादेवी हूँ पर्णशवरी ॥ ॐ वज्राकुशाकर्षय हूँ ॥ ॐ वज्रपाशबन्ध हूँ ॥ ॐ वज्रकालिविजहूँ

दिपक समयवज्र हूँ फट् प्राहिम्रक सन्निरायाया॥ ॐ वज्र व श्य ह्रीः॥ वं गम्भया॥ ॐ वज्रवीना ह्रौ॥ वि मम्याया॥ ॐ
वज्र मकुन्दे हूँ स्वाहा॥ मकुन्दाया॥ ॐ वज्रमदंण हूँ सर्वज्ञाया॥ ॐ वज्रवडवा बु साखिया॥ एग श्व वि हूँ प
कथमाः हु हिहि हिहि हूँ जः ४ कुवंगमया॥ ॐ वज्र दं ष्ट्र वमा ह मूरवी ठों वं ह्रीः॥ वज्रमूरवा ४ ॐ वन्द्र सम्यो क्र
ह्यासिनि॥ सिद्धि वी सिह वक्षु॥ सिहिलि नं खिलि हि फीं॥ वं वं ति हास्य वज्र श्रतु साक्षिवती महामक ठी॥
स्याल पूपि निमह प्रलय: निर्नादका मम्यूप ४॥ ॐ दु ल २ हा ह्वा नास्या॥ ग्य हूंति सर्वमन्त्र ४॥ फुं॥ ति ६९
ध्यू कस्य सपवि वा व ४॥ ॐ प्रः स्वाहा॥ नेवा साय्या ४॥ ॐ गुः ४ स्वाहा॥ वज्रा॥ ॐ हूं स्वाहा॥ रोमेवी॥ ॐ ठंठी
स्वाहा॥ वामि श्री गिनी॥ ॐ उ स्वाहा॥ वज्रडाकिनि॥ ॐ तु स्वाहा॥ पूकसी॥ ॐ ग्रं स्वाहा॥ भवबी॥ ॐ
महा हा वज्र हालिनि॥ ॐ है स्वाहा॥ डाँविनि:॥ ॐ है स्वाहा॥ गौवि॥ ॐ उ स्वाहा॥ वीवि॥ ॐ ठे स्वाहा॥ प न्तुम्
हालि॥ ॐ स्वाहा: यम्मवि॥ ॐ ओ स्वाहा: लवबी॥ ॐ भ्रूं स्वाहा: खेवरि॥ ॐ किर्योनि गालाम्बप
यियावस्या॥ ॥ ॐ देवपिनू वज्र हूँ हूँ स्वाहा॥ हवज्र स्पद्धदयं॥ ॐ वं ला श्रा कं पने हूँ: फट्

स्वाहा॥ दिग्बन्धमन्त्र॥ ॐ ज्वल २ हूं फट् स्वाहा॥ वज्रकीलमन्त्र॥ ॐ किलि किलि वज्र हूं हूं हूं फट् स्वाहा॥ वज्र
जम्भ॥ ॐ नमो हेरुक वज्रवीरवीर्य वज्राय हूं २ फट्॥ ॐ महाक्रोधाय त्रिशूल त्रिलोचन हूं हूं फट्॥ ॐ खट्वाङ्ग
कपाल करोटाय हूं हूं फट्॥ ॐ जम्भाकराल कराल ग्रसित विनाशकाय हूं हूं फट्॥ ॐ परशुपाशाङ्कुश त्रिशूल डमरु
धारिणे विदे हूं हूं फट्॥ ॐ व्याघ्रचर्म वसनधराय हूं हूं फट्॥ ॐ महाधूमान्धकार वपुषाय हूं
हूं फट्॥ वीरतन्त्रमन्त्र॥ ॐ श्री हेरुक वज्र डाकिनी जाल सम्बर हूं हूं फट्॥ समयादि प्रियपदित्रमन्त्र॥
ॐ श्री हेरुक वज्र सर्वदुष्ट समय मुद्रा प्रभञ्जक हूं हूं फट्॥ पोज्ञा समयादित्रमन्त्र॥ ॐ ज्ञा स्वाहा हूं
फट्॥ विद्याचारमन्त्र॥ [illegible]॥ ॥ ॐ वज्रवैरोचनीये वज्रडाकिनी
स्वाहा॥ पाद शङ्कर सिद्धडाकिनी मूलमन्त्र॥ ॥ ॐ मायि विशे स्वाहा मायीयोग हृदयं॥ ॐ मारी
चिव हूली वरारी वराहमुखि स्वाहा॥ उपहृदयमन्त्र॥ ॐ पिशाची पर्णशबरि विसा प्रशमनी
हूं महादेवी फट्॥ पर्णशबरी॥ ॐ वज्राङ्कुशाकर्षय हूं॥ ॐ वज्रपाशबन्ध हूं॥ ॐ वज्रकालि वज्र हूं

ॐ वज्रसम्बिरङ्क हूँ ॥ ॐ वज्रकीला कीलय हूँ ॥ ॐ वज्रमुद्गरं ला काटय स्फोट नाश मन्त्राय स्व
गथगा सिद्धिमङ्गुभाच वज्रसाधना ॥ ॐ वज्रडाक हूँ मं वलीमं गृह्ण गृह्ण हूँ हूँ फट् स्वाहा ॥ ॐ ज्रः हूँ वज्रः
समयस्त्वां दृश्य हा ॥ एवं त्रिवक्त्रः पश्चात् धानुग्राह्य वलिः पठ्यते ॥ वज्रडाकिनी वलिमन्त्र
॥ ॐ खखः खाहि २ सर्वजक्षराक्षस हत प्रेत पिशाचोन्माद अपस्मार डाक डाकिन्या
दय इमं वलिं गृह्णन्तु समय रक्षन्तु मम सर्वसिद्धिं प्रयच्छन्तु हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा ॥ सर्व ६०
भौतिक वलिमन्त्र ॥ ॐ वज्रडाकिनि स्वाहा ॥ ॐ धात्वि हूँ स्वाहा ॥ ॐ वज्रकाली हूँ स्वाहा ॥ ॐ वज्रशु
लि हूँ स्वाहा ॥ ॐ पाटय मारय आकर्षय वशीकुरु पति विधिनामन्त्री ॥ ॐ वज्रसिंहिनी आः
स्वाहा ॥ ॐ ह्रीः स्वाहा ॥ ॐ वज्रगन्धकि ॐ स्वाहा ॥ ॐ वज्र उत्कामसु स्वाहा ॥ ॐ वज्रनाडी
ॐ स्वाहा ॥ ॐ वज्रदीपगज वसुस्वाहा ॥ ॐ वज्ररूपिणी रूपयसर्वसत्वान् ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॐ वज्रका गणुक्र
ॐ अः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीः ४ स्वाहा मन्त्राः ४ ह्रान्तडाकिनी सपविवायस्य ॥ ॥ ॐ ज्रः हूँ वज्र स्वाहा स्व

वज्रार्घमन्त्रः॥ ॐ खं घं स्वे वज्रादिमन्त्रः॥ ॐ हः हां ह्रीं स्वाहा महामुद्रामन्त्रः॥ ॐ कृत्वः सर्वसत्वार्थसिद्धि

र्दत्ता ह्रूं जः स्वाहा॥ आवाहनमन्त्रः॥ हि हि हुं हुहा हैं॥ विसर्जनमन्त्रः॥ ॥ श्री श्री श्री सर्वदुर्ग

तिपरिशोधनकल्पवाक्षिकृतगुह्यकस्य सर्वाभिरहस्यसमाप्तः सर्वक्रियासमुच्चय नाम चतुर्विंशतिप

टलः ८ ॥ अथ वज्रगर्भप्रमुखा महाबोधिसत्वा हस्ता वज्रं सर्वकल्पख्याता तापूजाञ्जलि

पुटं बभाषिरे॥ अहो हि सर्वतथागतानां तत्वनिर्वृत्तिपदविस्तरम्। कृतार्था निहिता नानाविकुर्वी

तोन्यतमाभिका॥ क्षमनानाहितानुग्रहवज्रहर्यकल्पनाविरूपाक्षताता॥ अवकाशितं पूर्वं

सर्वज्ञानाभिसंबोधिहितानां॥ मन्त्रतुलं दृष्टानि मिताश्च तु सावयय थाविधिनं॥ नाहि मस्सम हि

पर्वसर्वहृद्धानाहि कीर्तितं॥ तत्र ह्रस्व न हितानि विनानि ज्वलंकालवर्जितं॥ कीर्त

ऋतुहिनासद्धिरहस्य लेतं निवंशतं॥ सर्वबुद्धमहासत्व॥ सविकर्मसंप्रवर्तक॥ म

विद्याधिमहा॥ विरूपकाश्चिश्च यापि यथानुगामा॥ कविवुधा शि न देव वक्षज्वरवज्रमत म

नमस्या

हमां॥ कवि क्षाति विश्रुद्धा हिं कविनिष्क मर्दाहदूटां॥ क. वि धाधि महत्याउा॥ क
विमाप पत्रा हत्व ४॥ कवि श्रीमा॥ धि हिहं वाधि ४॥ का वि त्र कृपव हू. नं॥ क. वि स
नाहिमा॥ मसूह धर्मे विग्रह॥ धर्मे हा॥ वि ग्रह ः सद्वि सि॥ धि व हु व पी दी का क:
विजय, क वि हु इ सर्वक ल्प॥ ए सि खी वर्ष मन हूनं॥ ए व मा ये सुत्र ना ये ६ सू.
र्व वू ष्ठा वां: सत्व ये ४॥ हा वा शा व विनिर्मु क नस्मा ना॥ हः पवि शुजा हू ड॥ जु लि ई म
वा॥ मि श्राह्रदी म्म॥ वज्रो वव ४॥ ज्यादी या का॥ गं पर्यंकं धर्म धातु खगाव न ४॥ सना इ
नौ॥ पत्र वृक्षा नां हवव ना व व गु स धका॥ के ध मक र धतुनां म स. ने स र्व सिद्धि य ४॥
नमा॥ त्त नु मा रुच्य मूलो धतु लो पना॥ क्षेव वं वज्र॥ कन उ पत्र मा भा मू द्र ना॥ जु निलु
हू फार्थ वजी नी ज नपा॥ रुय त॥ क्षि हू ना ह समा॥ क्रा के ध ना व वि सि कि स. ना॥ सव व पूर्वा
धि विज स्प ज्ञ ह्या म धतु धा न य ता॥ का॥ लिपू मा क ना हतु पू ष्प वित्र ह व जि ल ४॥ सू

९१

नमस्क

मी सर्व्वयागोत्तमं श्रीयपगानुर्वकामप्रदं तद्धेव नतु हालात्तयाउयम् ॥ सर्व्वार्थं द्वत्तुनाय्यागी
सर्व्वपूजाप्रकल्पयत् ॥ अमाद्दभं नवगाहूवं यत्रव वज्रप्रकीर्त्तितं ॥ कस्य मध्यातु वीजा वा ॥ अ
लिकालितु यागानभ्या सर्व्वदेवतां प्रीणयत्कम मण्डयलं कालुन खेवनापर्त्तं ववि भाषकस्य
निध्याद्यथ स्फटिकरूपाभ तस्मात्सार्व्वं प्रकल्पयत् ॥ तस्माद्वह्र रूपमध्य कुजमर्गके सर्व्ववा
दयत् ॥ तद्यथा ॥ अथादि सर्व्ववस्तूनां वाक्षमनुतं प्रीणयत्कम ॥ वामहाताभ निरा शुष्य: द्वकिवां
क्रां द्वदर्शयत् ॥ सूक्ष्मक पादार्द्धं द्वे विष्णुहां हृदला लसस्फुवं ॥ कृष्णपक्षवतुर्दश्यामष्टम्यां
च विशेषतः ॥ कपक्षद भ्यां वसंपूज्य पूजाकालाकारे वत्र ॥ त्र कवकृ गजनाः कंद
नबूव अमपा र्व्वगृहक्के त्रहनां गाय विशेषबनम सखकाले भमलगाके कलेवविषे
वना ॥ कृष्णवू अ महाद्रूव यवताव स्मात ॥ कृष्णकमावी विहनन्दा ॥ कित वितायका
वक्षुहितथाव रूपाथडमाद्दं वीसत्तकताज यात्ववीज माचे व गूजिता सूपवा ॥ जिता ॥ हस्

तथ्या

कालि महाकालि स्कुल काली कुमारी योगिनी ॥६॥ ॐ श्रीवज्रदिग्यायिनि श्रीअम्बा कि हूँ दतज गर्वी
ग कर्म्मा ॐ हिदिपिनी ब्रूबैया मखाछिज यायिनी ॥ धावब्रूया महानुपाद्र ष्टु ब्रूपाकवा-
चि ली ॥ खचगाकयमछिका ॥ भावछ पद्म शूह हिका ॥ वज्रहस्ता ध नुः श्वेवप श्वेता केनी
महाफल सर्व्व कर्म्मानुसाधक ॥ ध्यानमनुल वागीव वज्र गर्वो प्रभुस्थ ॥ तथ्याल-
महाकाय नि नामस्य आगाह्यिका ॥ ॐ ह्रीं वज्र ध्यानामन आवाहन सर्वत्र ॥ ॐ ककक कं ॥ १२
दन ॥ वववं ध नः खखख वाउन ह सर्व्व हस्त्रान् ॥ हन २ पच पाठय २ मूसकस्य भ-
क्षिकूल हुँ हुँ फट् फट् स्वाहा ॥ मूलमन्त्रयान ॥ लम्बा मूलनवज्र मापूर्य्य कर्म्मादि विंन
न ॥ लव यथा आगिन्या सर्व्व कर्म्मादि सिद्धानि ॥ हूँ कार्यं हव नव रहि हा: कालग स्थ ना ॥ कृत्य
सनं ह्रीं का लं वी र्यहं नव क्रमत्रय विधिय न ॥ छिविधं त्रिहि बाय्यत्रिहि दव ना स्थाय
न पमन स्य भव ब्रूपं लव रहि काकि मामा ॥ गा: अदका का लासवे भाव नमा स्वाद वज्र ध्व

व वज्रपाणिनो ज्ञानदेवांश्च विसर्ज्जयेत्॥ पादिकं अपरं गन्धपुष्पहिस्तं हिसेहा वनमवज्ञाय
मनकृष्ण लवधूपाल् अकृष महावेधयु वृहि गन्धपिनिदानं वा।क्रिमः कमलावर्त्तु कावयत्॥ वा
मद्धकि दापानि स्पासति तोग्रानवर्द्धने ४ स्वागत् धर्म्मज्ञानाय वो।नाम नागा सूपान्ह गाहव
ओं आः एवं पदमहत् कन्या वाचि सूत्र।। सूर्य गायन गाहीयात् समाप्ता वाच मिथं कत्वा स्व विसर्ज्ज
क्षिं मिन याति न भास्यम सहामि।ति वकु वां।खवं महल्लाव पिवर्ज्जयत् वनाहि मज्ञ य थ अं या:
धाहा हिता ताओ ड ला सू विल कित्सुत ला।हूं हूं हूं वज्रपक्षोहि नाट सत्व स्वाम मैल गीति।।
कावज्रां ज्ञतिव मा क दय भावय गा।नन ८ सर्व्व सत्व प्रतिभन्त नि नाव यत्।सर्व्व सत्वाः स्व
ति।नो हास्तुसर्व्व सत्वानि गाम याथा।गा कु तियन समागत वृक्षवल गृप्पनन्न अ।तिर्क्षि साव या
मि।ज्ञसकामा व या न हा।चेर्द्रमा तलु सका।लिमं गा।गा।भाक्रु कि या मयं।।वज्रस।खिं दर्व व क्षा :
वा भिक्ष दयप्रक्षापत्नं।। सवा हस्ता प्रसार्य्य हमो स्कायप्य।विसर्ज्जयत्।।   ।ति।लिन व सुपत ता

नामसंक्षिप्तमिपटल॥ ।तुष्क्ष्पसासूखाव स्पसर्वालातिश्रूहं स्क्रिनथाअुस्कि गंनाय

नथ्याय मफाममसविधा स्वन्नाप टपूस्फ कमालिखयू। एतादवन कानाठिकथयस्ह महासूखव॥

हुयावानाह। स्पामापूवाधीश। विलूस्क्षु निविकल्पसू। ठा। ठे। श्री। धम्लाति सथ अदकु। अमा

यया। लाउवंहव ठाविजकत्र भायेलिखे-साधकपरूमड। चीपकर्पे नासवप्र स्कादिनकर्प

ठमहाय्। धिवंनं ठितकर्प ठ वाम्क्षीपू ष्यहाबेन कर्पपाेलि खेक्रावां मालीखिनथा। मत्ता वि २६

धिथायुस्क प्रूदडाह्रि स्कासतसमाहित्न नासिता। पयप्र क। ानवकॄहिं यंशोकैः पेवीवर्लकेड॥

हि ह्र कर्पूनादि ह्राविते लिखव नीमंगुरू पटकां। प्रथमममावायपेलासूमाहितनल श्री काव

चिर्लछिननश्री संपूठ्यागयूकें नं अ मिन गुबकंधा लाःयलीतयनथ्यपूना। स्कगवाना

हा। इतिवप्रथमश्रोवंद्धिनीयं सामसिष्यालि।। एकाउवनूलाहुन वेवस्कीयंशोव नवग्रह

मूस्पमूप॥ वाक्ष्यायानमायातु ॐ दंक्षा वे समावयक लाविहं मालिनीतूयसामना विं

श्माऽनां॥ वे धर्म्मतां हि जायव सर्व्वकर्म्मार्थ मोहि॥ स्थान भानि गनेगा लो: वाजुल स्थ हि ना
य नीं॥ य आ कर्थ्वि ष्ठ नार्थि: स हि लंम भ्रा॥ नि ग्रद्ध या॥ नवं प्राप्प ल्प स्थि ऽ काय ञ्जं नं द्र कव
लो॥ भूत स्य वा वृषा हृद्र भाव लं पूजतं तथा॥ श्री वला पाय हेतु ला ग्रा राम न्यत्र मा॥ भि ना ऽ
स्वव गा कि ष्य मक्का नानि भिलं सं ल वाय था॥ धर्म्म धातु गवीया॥ मं कपाल के न ह्य आत॥ यद्ध
पवितं पा वितं वस्व स्य धर्म्मि ताय प्राकं गौ व श्री हेतु कंल नं॥ तस्मात् सर्व्व प्रय लेन पूजय न्न
ऽ या स हसा धक॥ निज मूर्द्धा ल्ल ष्य वा भन व द्र वा नू व कृ॥ वृप योवन आहा द्या मृत्यु पाला
धक ऽ प्रियां॥ कृ ष्या म॥ भि ष्ठ वि प्र कंत व दा न व्यं न गा॥ लिख न प पं घा न सर्व्व सि हि प्रद पके
भून्य लो॥ के न द र्श प ला धक था॥ प ल्प ति वि त्र क व या॥ मे॥ ध्व वी म हा लाला पूष्ठ कं क थ मा
मिवा॥ हृद्र पत्र वा स्य ना प ह पत्र वा॥ लिख न समयी वा ह भव ल्लो पृष्ठ का॥ म हा म थ्वसी कृत्वा
ला ल्प न्या मानु षा हि नी॥ पूज कं प ट वे व या॥ दिद इन्द्र ऽ प च्छा॥ नि॥ ॐ हूं म नी॥ सिद्धि ऽ स्यात्

कालिमहाकालि सूल कालीकुमारीणी॥ ॐ हूं डीवन्दि धात्रि श्रीयमपा क्रीं ह्रीं दक्षिणवती

गप्या ॥ कर्मा ऊँ हिंपिनी ॥ बुद्धिविश्व मध्यक्षिप्त धाणीनी॥ धावरूपा महारूपा उग्ररूपा कवा

पिनी॥ खचागाकयमार्द्धिका॥ भद्र पद्म शूलिका॥ वज्रहस्ता धनु खेचरपद्मांजलिकेनी

महामल सर्वकर्मानुसाधक ॥ कामगमनाल नागाव वज्र ण्वो प्रज्ञुस्तूक्ष्मा॥ कथ्याल

महाकाय निवासम आगाहृष्टिका॥ ॐ हूं वज्र ध्यानाग्नन आवाहन सर्वत्र॥ ॐ ककक

दर॥ वववृध्वनः खख खेउलह सर्व दुष्टान्॥ हन २ घघः घातय २ गृम्र कम्प भा। ६३

क्षिकूरः हूं हूं फट् फट् स्वाहा॥ मूलकर्मध्यान॥ लम्बाम्बुष्टकव ड्रमापूर्ण्यकर्माद्धि विंन

न॥ लाव यथागा मागिनाम सर्वकर्माणि सिध्यति॥ हूं कायं हव मव ह्रीं ह्राः कालगन्धना

सनं ह्रीं का लंवी र्य हं मत्र क्रमत्रयविविधि यं॥ द्विविधं द्विहिमृ कार्य द्विहि देवताध्याय गगुरु

नपमनस्य ण्वव रूपं लव र्हं काकि॥ मान्॥ गः अदका क्रा लामवे भावनमाला द वज्र ध्व।

नवज्रकायचित्तौ त्रयाद्ववाक्चित्र हिर्हृदयमन्त्रा ।। ततोऽकिश्चत्रे भाद्यहित्वम्भूत्नद्धिस्तेहा वनमभवत्राय
मनकुक्षतवन्त्रालवकूमहावध्र ब्रह्मि गा, धनिदानक्त्या । क्रम: कमलावर्त्तु कावयम् ।। वा
मदृक्ति शापानि स्वासन्नि हाग्रानूवर्द्धौ ४ स्त्रागद्धर्म्मश्चानध्वत्रोजन नगाम्नूपाहगा । हव
ज्ञान एवं पश्यमह कथ्यावाक्चित्र ।। सूत्र । अथ नगहीयाकृ समाना बावमिदं नत्वस्त्वविसर्ग
त्रिं मि नयानिन ध्यायथ्म सहस्मिा । नैवक्रवां ।। त्रव महमाव पिवर्गी थनाहि मन्त्रग्रथअंय:
दोहा लिता नञ्जा त ला सूविलसिम्रुठ वा ।। हूं हूं हूं वज्र प ६ ठोहि नाटस्सत्व क्रामगैनल गीति ।।
काबजां हलिव थ्या फ्रदयभावय स्वा । लल ८ सर्व्व सत्वधालिअन नि वावयंक्षा ।। सर्व सत्वा: स
त्विना हान्तु सर्व सत्वालि नाम याथागक्रू । तियनमागान वृक्षत्वलम्नू यवनन्नमु । लोकृस्नाव या
मित्रान्स्कामाबयाम्नाहां ।। वैर्ष्मावात्तु सकालियनं याग ना क्रुक्रे पामयां ।। वज्रसत्वैं दर्ढवधा:
वामिकदयप्रह्ला पत्तं ।। सत्वाहस्ता प्रसार्य हमोह्लाप्य । विसर्गपटल ।। । त्रिभव सत्व पहाया

नाना पंचेंद्रिय मिथ्यात्व ॥ ॥ तुच्छ पच्चास्स खावर सप्पसर्वी सत्व निसह स्तिन तथा संस्क्रिंग तय
मध्यम ॥ मकान मनवि धानंतनताप टचूस्स कमालिखव ॥ एताद्दवनऊ नातिकथयच्छ महासुख ॥
हगावानाह ॥ सामासूनाभीशाविसुष्ठ निविकल्पसूताओ ऋाधमनियथ अदक ॥ तथा
यथाह एवं हवतो विउकवलापि लिखनाच कापलमठ ॥ बीयकर्पनासवप्पकादिनकर्प
टमसाय धिवंगतिकर्पट वानहीयूष्यहाविन कर्पपालि विहानां मात्नीविनथा ॥ गताव २६
धिधा तुच्छप्रदगलिह सामससमाहितनालिवतापथन ॥ नवकसंयओकः पेवीवर्लकें ॥
सिहाकर्पूनादिहाविनेलिखवनी संग्रवपटकं ॥ प्रथमसमावार्यलसमाहितनसर्वीकाव
विलक्षिनश्री संपूट्यागयक नं ॥ निशुवकंधावायतीतयनअपून ॥ हगावाना
हा ॥ इतिवप्रथमभावंढिनीपंथानमिथ्यानि ॥ एकतवनलाज्ञनयेवसनीयंसोव सगुष्क
मूलसु ॥ वाक्ष्यागुन नानायाविंतु हुं दंशाव समावत्त लाचिसमलिनी तयच्छानसत्नविं

ष्माज्ञाना । वे धर्म्मता हि ज्ञायव सर्व्वक र्म्मोर्थमोहे ॥ स्वान या निगन्तगात्नाः वज्रुल ष्टहिता
यमी । प्रथाकरिचि ष्टु नार्थिः सद्धि लंमथ्रा । ति ग्रन्थया ॥ नवं प्राप्य प्रय सार्द्धिः काय ज्ञं गंतुकव
लो ॥ अनस्य वा वृषा हृद्धं धाव तं पूजतं नथा ॥ जीवना पायहेतु त्वा । आ रामन्यतमा । मि ता ः
सत्वं मा । कि श्यमक्ता ना । नि मिलुं संलवायथा ॥ धर्म्मधातु गवीता नं कपालक न इष्यत । पक्षू
पविनं पा विर्तं वसत्य धर्मीतायं त्रा कं । मोव श्रीहेतु कं स्म नं ॥ तस्मात्सर्व्वप्रयत्नेन पूजयन्नू
डुयासहसा धक ॥ निजमूत्राह्नु यावाभन वन्द्र वानूवक्तु ॥ रूपयौवन । आहाथासमू पाला
धकः प्रियां ॥ कृत्वाम भिक्षु विप्रक तंव ता जव्या नगालि खेत पपधाव सर्व्वसिद्धिप्रदायकं
अन्यत्रा केनद र्शयत्वा धकश्चा पश्चात्ति वित्रक व ग्वा । भ्रत्रा दवीम हालालापुष्टकं कथमा
मिका ॥ तुज पत्र वा अनापहृपत्रवा लिखत्न समयी द्वा दशाग्र ली पूस्क कां ॥ स्वहाम धूमसी कृत्वा
लाख्येन्या मानूषा हि नी ॥ पूर्व्वक पठ वेवया दि द ईत्र पश्चा नि ॥ ॐ हृद्भम नी सिद्धिः स्यान्न

तथाग

वापम्न लो कम्व वज ॥ दायप लमयपसववस्य दर्शनंतककदा विगुः ॥ तमपित्र व्यं कवककः पुस्फ क
म घपुरम वथ ॥ ॥ वज्रोनिपठपलक निर्दृश्य नाम चतुर्विंशतितम पटलः ॥ ॥ ॥ गुह्य ध
वीप्रव क्षामि वाक्ष सं पूट लक्रणं ग्रूव २ गो २ स्मय २ यग व हा २ क्रूल २ हुंज २ क्र ल २
ह्रूं ह्रूं ह्रूं ह्रूं ह्रूं ह्रूं ग ओं ट घे ट घे । ह्रीं दां ह्रूं २ क्रू क्रू २ कोवज लज वके ह्रूं स्मा ३ ब्रूल २ ह्रूं स्मा
वज्र धवाथे ॥ जह्रिं जह्रूं २ डींपम्न २ जींजींजीं । डींडींडीं गंगं । डींडींडीं गतजमव क्राव
क्रदांवक्रकवजी क्षिप मूलंवयक मलयजाफुवा ॥ कृन्या निमाविगानि मन स्पिकंव । ९७
कावयक ॥ नदिर्दं मानमा स्मा ॥ द्वादश वेवष पं वौ गुल मूखे न थ्य ॥ नवसमं कार्य शामं
वेवकर्दर्थमू खेमभव ॥ सूपवंतमयू कपालं वंक्षिकं कापि वर्मा भिक्षु दिनं तथा ॥ पू
जयेपम्न लिखेन् स्त्री वृद्धिव । भयतम तिलं ॥ वर्ह्निं भ ग्भजन्कपाति व ब्राह्मि ध्य तगुह्य
गरुत्क्रमन वपम्न कर्णिका घयम कुलालि खना ॥ निमि वकुष्य थ्य वा भपदां गुह्य

नवतुनमस्म शुलकाले वज्रा क्रौँ मा नत्र ल्हा॥ वामपा ष्ठि कर्ष यन्तना मध्यह लपर्व्व कं॥ ख
हूँ ॐ हूँ सुधाव यन्ता नि दि हया ह्लुं नाउयप्तू॥ एवं सर्वा का वा लिका आह ष्यान॥ यदिनाम्
कृतःनदा त्रि यक्ष सर्वज्ञा किन्य ध्यस्व ध्यम वहि ध्यति ममवाक्ष न्मा सूप्र ध यदि
क्रैथ ग्ना वार्याउस नू का वाउयप्तू॥ फदाश्र अप्रवाह यूदनी॥ स्ना ह ॐ र्त्हि लूका हूसम
पसिद्धिं प्रयान हिपत्र मॐ य हूंउ शुमा॥ तिक्षे॥ ल्हुम्हु २ हाउय क्षवि यावृप लू संसा
यउला मूजा मावि इ वासू म ह्लरं याङ्गा ॐ लि सक्ष॥ श्रू नू देवी महाकाला से ह नंम
धर्म लकं॥ यत्रतुकिर्त्त वसिद्धि ४ सर्व्व कामार्थ साधका॥ भमभनपो वि कुर्उं वूम हा द॥ धि
नट भूवा॥ सूयवा विक्रन प्राक्ष यॐ दं हाउन माय हकू॥ पुष्प धूपक धा दीपा हूसमं वा
समृःपेवव॥ सुवा वि नासिनी श्रा का मा दि नप्रम दा सूना॥ सिंध धमदन प्राका क्ष
मनंवव वा सवथ श्रूकुं गमार्गजमस नं सर्ध्व वृष्ठन लिप्स्या॥ एकवी यामपूजा काम

नथागा

किं॰ वखवकात्मक कांकि कंस्तु विक॰ धाकुवटी प्राकोत्तुकाङ्किका॥ प्रवें वित्रि ना
रोजतेमयमा स्वसम हुवें प्रियाप्रतागासलगा॰ श्रीवज्रसत्व॰ प्रसिद्धानि॥ पञ्चाम्र
पत्रसंज्ञाक्रानाथिश्च ला॥ कृ॥ नागाकू लविवित्रं वप पं द्धमलल न॥ मूलत
गीकमूजन्वेन स्व वापि वि॰ भषग ॥ कककक २हि हिः ति २त्री २ कूंकूं ४ हां हां ४ हां न्
जं जं ४ ॐ ॐ ४ जूं ऊं ३ गंगा ॐ गां ॐ २ गं गं ४ हिं हिं ४ हिं ३ हिं तिति ३ डी डी ३ क
क हिं ही स्व वज्र व धू गंव म्ल कृया॥ नृ प्रत्री ह वू क या गाजम्रू जांथे वथिशष क॥ पंगाह्
षिं पदप ८ नथा॥ विकूर्विलिहिः सर्व वृक्षा नाप्य थन्त क्रम स्यपाल ॥ मामा रुपिनीस्याह्
हागीन यिवश्च जु का॥ पूजय निर्दयलाम्रां म्रि श्री गाला म तुल॥ वकरव गु महात व कं
दिव्यमदत्त नपूथितं॥ गुत्रूव दयात्म हाहा गाव दच्छिवाम्न्यं प ल्वत्॥ गह्लीया नपस्वह
ल्कन दयान नेवपालि नां॥ मृकूर्न हूः प्रमासव कूर्वतीनस्म साधका॥ ॥ ॐ कि व तुक्ष्मि

१६८

गगघ

...हि नाम: सप्तविंशतिपटलः ॥ ॥ ८७ वज्रपाणिर्वज्राचार्यस्य सिद्धिसमय कथय ॐ
ल: महावज्रमाल्यहृदयमनुत्तरं ॥ ॥ अथ विश्वरूपयमाध्यक्षस्य हिमकादि विस्फुरेत् वज्राचा
र्य तेन समं सिद्धि अन्यत्र संशय ॥ यस्मात् सर्वतथागतानां तत्त्वं वज्राचार्यं तां वज्रधृक् वज्रस
त्त्व: कस्य हृदि निष्क्रम्य सर्वत्र हा ह स्फुर व वसवा हा । माया मन्त्रं । कथितम् । सर्वहृदय
स्य प्रमफलहृदादि ॥ तस्मा । तेन सर्वविधानेन भाषिता तावत् सानुबोधि बोधिज्ञानं गांवा सं
गच्छ: माहि विशुद्धा ध्यायी सा श्री बिभवेन हृदि ॥ ॐ हूं फट् वि स्फारा तान्य सर्वाभिषेक पूर्वं सत्त्व
का सिद्धि प्रथम पितृ प्रेत वज्रावली ॥ मम हृदये ॥ आह । देवा हा वा श्रु ही हृदि वज्रपत्र क
ना श्री हुं फट् कर्मवज्र विशुद्धा मामकी । तान्त्रा हृदयाम्ल्य यात्रा भगवन् ना न ध दा मां हृदि गोली वासर
न्ता गोली मम सर्वतां विशुद्धा वीनं हृदि सिता ता हृदि वतिहा वसा ॐ धीमा जिनमे हृम सर्व सं
गच्छ ता वि ध्यायी ॐ मम विशुद्धा श्री भूमाय सिद्धि हृदवत वीर मानानामानुष कन्या विद्याधर कं

धृगुह्यमानवशुद्धाय्यी स्वन्मासि॥ क्रूरसमन्तधारयेवासि। शो वनप्यासदद्वदृष्टा मामब्रह्मवे
वसिद्धये स्फुरणा॥ पाञ्जुलमासनुप शीनासदहि ४ हिवा गभ्रुभावच ४॥ लज्जा कण्यासहव
शीषिदं ब्रा छा नवसि हक्षिरकृपा। सिद्धये नामसमन्तम्य सा क्रोधाच्छद्मपथ्य ठेऽनपूजा ४॥ क्रो
धपुरुषं विधिना मन्त्रहि धा॥ सा विधिना वे वय क्रो नामभ दाये सिद्धयागमा॥ नि
न ४ पूजा॥ अवमकथूपाय्यस्य हि शमनपूजिके ४॥ सबेसा धनमत्रय कइ
ष्कवर्ण उनवाहिनं प्राप्वे वत्व मनवद्धं विनाश॥ यनाघस्थाहासकथं इष्कव
नियमेन धाकह्रूं शिवृष्म खेपाम क पाह्या मार्थ॥ मधा क्षासूस्व स्वबे सा धनं प्राप्या
श्यत्वक्ष गा मिध्या ति पूज सि हृप्य॥ सर्वदा ४ मन्त्र कर्म
स्वप्नमाध्य व सर्वत न ग त्कर्ष्यं॥ बुद्धधर्मासंघा महासाधनसाधनाप्ताति॥
ॐ गुणिन्नाचार्य महासाधन ४ पटलः॥ ॥अथ पश्चिमनिविद्याग्रयपू

६१

गग्रुक

षः नस्मित्रि दग्निकवाह्वागि वलन वषद्विकावंह र्मी ज्ञेसनयथी विय मनीय ॥
भव दक्षा मगाधव ह्वा कं स्थिकासु दसं॥ निप सू काषाना ४ कलापानल सूत्रिना दगासुदि
कुकूकिनम हादधिभ वद्धासर्वेन ४ पटनितिर्पा ना ४ समह्ल व किसुपा ह्नू नान्ना कान
न्लाकि नवे वा॥ सू डागर्लासु कनउ धाउ कालाका ब्रह्मा विष्णुव सूत ४ मका सूदाम्बि व क्षि
मोहा नूष्ठाव ज्ञाय का: सिद्धा पादर्वी: किव्रम नापालिया भवापसुना व्यनमउरुम क्तेमबासि
ना दवा॥ मउपाघ्र प्रकवाक्रिय कं कुह्नमकसहदक्षा ४ वीमावन मुकुन्देमधू नेसख कान
लना वे ४॥ नन्दिपाट हमदं यो गगानक्ष्मी पूउयमनगान्त्र ग्रे सप्वम सावि घाभववाउ वाहे
कासर्वा ४ कु र्वद्ग्रम कवाम्र वागमपंनिवकिन्न वायक्षा थ॥ उय २ मा द्वादाना क्रिउा लर्न्वि
नउसमंगदं प्रवस्तृ तिहा धकावं सिहाप ना॥ नदवा मउ बिनस्क्ष ह्वा ४ प्रव वायप वायवा
पवभवाहिनग्न सनासूव पूजविया धवमागमूप्रसा मंवाकानिह्वाप र्थ्यक्षा॥ना नापूछ्

प्रकाश्य॥ नानागन्धनगन्धर्वश्च नानाधूपविधानं कुर्वन्त्यनिरहं क्लिष्टप्य दामर्थितना
पिन्दे हितवस्तुन प्र रसहाध्यपन्यान तेषकुसूवापूजास्का सां संपूजयतिन॥ ॥
मयमय इति श्री महामन्त्र सिद्धिपूजासंक्षा नामउत्तवि भक्ति सूत्र पटल॥ ॐ ॥
शिवविद्यापरव्रत्य ॐ क्रगां कृतिरतित्ति॥ अतनं तक व्याप्ति कथय महामहात्मस्थव हय
वाताह ॐ॥ सिद्धाविद्यापूजस्य ॐ कृष्वि पिन्यात यः॥ कविसिद्धु गाने वम्याप्यत मस्थान ९८
हिता निष्कुर्वन्ति त्रिलिक्तिरुवनलोका॥ सर्वेशात ॐ सर्वसर्वसर्वार्थ॥ सर्वसत्वविरुद्धः
सर्वपापविमुक्ता॥ सर्वयुलभलंकृता॥ सर्वशिवमयस्मसालि श्रादिता नाथक्राता॥
विधृतेनकल्या॥ सम्हुतवर्द्धवाहिता॥ छिन्नस्था रभवबानडा॥ वज्रहृदयसारब्र ॐ श्री
लापनाम्कालोका॥ तिस्स कत्वा हिंशरुलया शिवनवरगमहत्वाना॥ एवमुपमातेवेवि नयुध
विर्यागिहिरुपानित्तन सहश्वैकश्राकुगोसहानां सर्वविचितरूपाहिता पिताके द

तबवाहि॰ नाकाः ओश्रुम्व श्री ब्रासहृ आनन्द ॐ हू लिा प्र दान हू जमन विहृरपनिलाहव
दृह कं ॥ अ ज्ञाधिं निन संस्यनकि दभ सदानसृ विहृसनन सामान भव्न कथं हृवहृ॥ न
वानमय नश्राधोभृ गाधिकिंनमभ ध्यया॥ नव बाक्के दम्यनविहृ नाहृगोभ्रूकथ नव
हमं धूनीक्षिकोरसू जलाथकथेवबा॥ नहस्यपन मन हृस्पह ध्राम विसदाहि॰ न ॥
श्रम मालन कय थि वहस्य मिदंभि दभं। न्यथलिखा क्रयगानं हृ नमिमिर्हि॥ श्रुभद
नवानकिदभमबृकीदगोहृवृनकीद भहृवहृ॥ वृहकि मर्थाहि॥ किमवहितसा॥ याग
किसू यार्ने॥ जाकिनि कसासहृनाज्ञा लवफिदगहवन सावयगिकिमा ख्यानं हक्ष
विरधनथेव वालनागा किहृमा प्राकनविनागानथ पन॥ मध्यमाक सुमहृाकु सर्वक्षि
भासाध्यकथं॥ त्रि मनानप बाहा॥ दिकिमा ख्यानं संवध्य हिप्र याज्ञनं॥ याधि दाहृनपूर्व
वविक्व पञ्चपूठ नथा॥ क्षालिका॥ हि महस्पृ ज्ञ ज्ञ नहव हृ तमसध्यागावसनहृ वकिंदभव

गाथा

वह्॥ वाग्र सङ्गसमाथ्यौ हिं रव्या हिया गावे वसमा हिता सं वृद्ध वद्ध सूर्यानां मूद्धप:
किं देया हवर्तृ लोक्यावा लोक्यके थंश्रूपा सबक भ्रूतं मयत्र स्थापित न एव वा॥ गुरुक:
पिथव न ता नामि वद्धु घ्य विशि बेकृ॥ किं मा मा न व गवि दृषिक्ता विह्नं न एव व
के धर्वि रूप हलानां॥ वेन्हा न वल पे व वे॥ काय तहाव न धर्मा धर्मा न एव व वा॥ नदी

अं न इत्यमा रव्या तं उंव॥ धि थवि तान्क॥ नानाव न या व यारव्या वं व ह सं कथं ना ९९
पलव न॥ विहा नादि हान लवयाक्यार्न न लाय्यन न एव व वा॥ आलिमदि कथयाज्ञा
कं धर्ने वीजो येन थापवे॥ किं शका णो दधि मिश्रू कंक लपस्या॥ पि हि॥ किं हाषि मं स
र्का गि ण द्वाम व्यि महा धर्मा श्रु धां स का या दिन थापवा॥ आवलि यवु या रव्या गं
गना यिविंव या जसं॥ किं वा काव गया तान्न वजा सव महा हव दा॥ विं सर्थ हक्रि मगुन्ध
गाव श्री ॐ व वहु वि यं आम हवश्रा पात्रि वडमा रवी सर्मा शिकाय ददु या ज्ञानपु

र्वसत्त्वसमयेनगता॥ श्रीकृष्णगमनप्रवृत्तिस्थप्रहृष्टमनत्रकोदेशे। पश्चाद्द्वारावयदाक्षसत्वाद
दंसर्व्वजिना॥ बुद्धहवज्रसत्वहं ब्रह्माविष्णुहराःनाभिः॥ पूर्व्वबकाथिनमस्तुहीत
मितदाक्षिणे॥ सोमात्वनकथजवजिक्राधब्रूपिकथंहवत्रौ॥ धर्म्मकाम्यना॥ किंवा सं
तोतिकनववेसा॥ निकंवाक्षवज्रस्पर्शादहनुकः किंदश॥ प्राकृतपसनकाकायमनू
पःकथहयश्चपवमाण्वक्रमेववव ब्रववविविधंप्राकं सोमानादवकानावज्रभा
नाकथेवव॥ स्तुक्लिनंवत्वयामवानंगनायिकिंप्रयाजनं॥ किंमावद्वकावाख्यंकने
वाधिकमन्त्रवादिहिमात्र गहर्षसमाख्याहिवजसत्वकथाकथ॥ हयाताहा॥ नलमया
दिप्रहनं प्रथमावज्रकृतमत्रापिमुत्यवर्द्धमा कुलपुत्राःपुनवाख्यानं नहस्पर्शवं:
नमस्कविधसपार्थ श्रुसमवाख्यना॥ नहस्पर्शवंनमस्कविध सपार्थ॥ श्रुसमम:
वाख्यतकेत॥ नहस्पसमा॥ साख्यनादपस्केर्पादिनवनत्स्वला वाद्वासर्व्वबुद्धमयं॥ श्री

नथमा

न्ह स्य भा ॥ हृद्व स्व व म य व्ह ॥ स त्वार्थ कृ त्वा त्व ॥ सर्व विकल्पा वा ल्प त्वा स्व हा पा वह्ल
नं स्व राव त्वा नू ॥ वज्रस त्वा पू र्वा क न म न या ह्न आ न्ध्र लि क से रव सी म न स्प स्व राव त्वा
स्व नम त्वं म स्व व भ हि ४ ॥ पर्य वा धि स त्वा ज्र हि ॥ स्व प वार्थ स प ह कृ ॥ न न व सर्व द्वस
मा पा गा त्वा कि नि ज्ञा ल स म्ब वा ॥ स्या न वि व क्रि न त्वा क्रि म नां द वा या न न्त्र पा स क्का
हे ॥ मु सा वि नि ॥ प्प ज व दा नि नि हि स्तु ४ कृ ल पू जा ४ म सर्व ज व ज्ञा स मा गा पा ठा कि नी ज्ञा
ल सम्व वं भि त्वर्थ ॥ स र्व स्व वि प वि विक ॥ श्री वज्र स त्वा स नि नि ष्या ह्नि ना ॥ स्व रा ग ४ त्वा स १०५
ता ध न भ्रू पुं न व या गा ॥ स ज या ह्ल म का म क ॥ अ पू न ष ना क त्वा ह्ल पू न म ध्या व स्तु
ना न म्ब स्प र्थ म वि क्र प ना द्वा वि हि ४ सु भ ॥ म या गा ४ ह्नि न ज्ञा अ ष्व ल प स म म क्र भा ग्रू थ
वा ह्नि वा वि क ल्प का व म वा ल्प त्वा नू ॥ स्व प वा तु का दि या व द स्त्वा ना व्हा ग व ठ ४ स र्व नगुरू
द वी स्व त्वा नू ल व ना स न म म न र्थ ह्नि ॥ अ शो सा म न स्या स र्व वृ त्वा न व प श व गं ध

नमस्त्र भूत्वा स्वलाना दिक्षया त्वलस्वसमावसाव निषाद नकाकथामि॥ स्वलावैर्त्तुन कि
मसा विमि॥ जूनपस्वावृषगता वस्तप साग अवनस्याकाप्रभूतत्र हा नस्तलावसाग्रांख
नानिकमे ऊिवैविमि विवि अकर्मी यानयागवविमादिस्वलाव छा पववागगवत्रिनास
षा वजसत्वविधिकं कामप्रकृतिहजकास्कमांवेगा ववाहि नाविराम॥ अवैद्ध पवागमा
सर्वकौमिये वविमा नांहस्कपमनकुणया॥ वज्रसत्त्वप समागम यविधि फाकालव
मि॥ अवंमकुलपूजा अवंमलागवविमाप्रतिपरू गयथा॥ श्रीवज्रसत्वाय सार्द्धैगुला
नस्यावाप्रविमा माउत्सलिगाया मनुल यागानश्वागाकथा विनद विमव्यालाठ क
थकनकथा किदमी माकथामि॥ लगावनु॥ लगाकाना ह वहस्रलादिना कथसमि
कृमकाः लवक्लिनसस्वलावा॥ श्री वज्रसत्वसाउधर्मकायनिस्पदस्वनस्ता लावि
ककायस्तलावडपवावाकृ॥ श्रीवज्रसत्वाय इलसलिस्वलावकथसमि॥ विवामिवध

ॐ समन्तुव वक्षि वज्रा मम ॥ समन्तभद्र द्रव्याय ब्रव अभावन यथा प्रवाल [illegible]
एवम अहिगवान वज्रसत्व नाम ह्रिः [illegible] ॥ कुटि [illegible] मप्रवल प्रज्ञ
ग्रन्था ॥ सर्वाधिराम वाल पितृन भक न ॥ नम भा नरक नापि सर्व सत्त्व [illegible] विशुद्ध
विशुद्ध धर्मता [illegible] प्रव धान व न्यास हृदय गाना न ॥ न संसार [illegible]
[illegible] मक था वल [illegible] सत्त्व समाना निय [illegible] निय ति [illegible] क पश्चि [illegible]
न्य व [illegible] का का [illegible] ॥ [illegible] वा नम सर्व तथागता हृदय [illegible] सर्व तथा १०१
गता ॥ एवम् [illegible] विनी [illegible] मा [illegible] तथागता हृदय [illegible] वल मक
व [illegible] सर्व [illegible] ॥ [illegible] समा [illegible] वज्रा [illegible]
ति ॥ [illegible] नि [illegible] यो [illegible] काम [illegible] वा ना ॥ [illegible] नि [illegible] नगुक्क
[illegible] ॥ [illegible] सर्व [illegible]

ष्य॰ सर्वतथागताम्नमस्कृत्य नवबल सर्वतथागताक्षवनीति॥ जिनवल सर्वतथागतमहासत्व॥ सर्वतथा सत्व
कायवाक्चित्त जिनवल सर्वतथागताकाय॥ अथ वाक्चित्तवाग्वज्री वज्रमि॥ वज्रसत्त्व सर्वविशुद्ध
धर्मिणः जिनवल सर्वतथागतास्वक॥ सूत्रनाश्वकं तवनिष्ठाम्॥ धर्मधातुविशुद्धस्वभाव दर्शनहृत्तारस्थि
तं हस्तना॥ सर्वतथागता धर्मप्रकृति सकलसमाकसत्वहृदयता॥ सर्वतथागतपरिगृहीत
समाधियोग मण्डलकामिनवहस्तसकलधर्मा दयासकनानात्महृदयागवता॥ श्रीवज्रसत्त्व
नसत्वहस्ता स्फुरणा निर्माणा हि नवागतलक्षपिवसहागी केशवकाय॥ सममादावस्पर
विवार्थेनदालसकनयाकि मादकावन॥ अथ महासत्त्व लक्षागानसर्वताका धर्मलिकवस्तुगत
वृद्धं वलसमापन्ना एकलौलित्रिलगावकलक्षकलवरु ह्न नात्मप्रभावलक्षणासर्वबुद्ध स्फुनसर्व
बुद्धकनसर्वबुद्धसमहमत्यनषां समाकयाग सर्वबुद्धसमयाशेषसमानकावमप्रा
गापदन सर्वपाप नयाविरलसमापद्य॥ एकलौलितावाभ्यन्तनाग सर्वहावमयावसर्व॥

न.पुसा

नान्ता सर्व्वबुद्धसमाधयो गन्तव्याः ॥ अनन्तेन सर्व्वबुद्धसमाधयो नद गन्तव्याः द्धिक आकाशगान
न स[illegible]हेस र्व्वबुद्धसमाधयो गन्तव्याः ॥ किं नीप[illegible]॥ आनन्द व[illegible]स्था यापर्य्याया[illegible]व्या ॥ काष्ठा दि
[illegible]स्माया काव जिर्लिन ह[illegible]॥ दि ॥ वका स्यादि न थाना[illegible] स्त्री वेनायिक सत्वावर्ज नाय सम्य[illegible]
दिवक[illegible]वीरूपं सद र्नता[illegible]॥ अ[illegible]नेवल नन सर्व्वबुद्ध [illegible]मामा या[illegible]यदना नवसुरव:
सी ना[illegible] प्रा व धि कना थनगा नहूव ति ॥ न सर्व्वरूप गन्द्ध ना व्यग ॥ संस्कारवेदना [illegible]
र्थव[illegible] पूर्व्वक्रामा या याव [illegible] काल या मा या स्वरा वन य स्पर्थ [illegible] ॥ हिहि निष्प त्रा साव
स्वरा व लिहि थाक पंस्व रूप प विवर्ज्जैत्र ॥ लि ॥ स्वा निवना नि रूपाली आत्म[illegible] ॥ क्लिष्
म न [illegible] अन प्राल: जि का काय्या ॥ विरूहा ना निम पाप प ॥ विवर्ज्जता ॥ निष्प्र रूप पा वि वर्
नानि ॥ नेना स्पराव ना सत्मा थिता ॥ [illegible] सन ना प्रस्पर्थ रूपम रूस्यान् मान स्वरावा आ
[illegible] य पनाव र्हि लि स्पर्थ [illegible] यसमा [illegible] पपा वि वर्ज्ज ना नि ॥ नेना स्परावनास [illegible] स्वरा वा रू

१०२

न.पुस्क

सिद्धि हृद्धि हृवन्ति नमस्मा सर्वज्ञाय सूत्रात्मने ॥ सर्वाम्स्त्रीसिद्धासि निकाथि नहृवन्ति विविधाव
मायावस्मा विविध्रुनामा ॥ नानाव र्णाविस्काव सर्व्व दवादिरूपका ॥ तस्माविविचित्र मायाम्नूत्र्प्या
ङ्यनि त्रिऊ हिकया कयावङ्किस्ल कृखेक माहृ ॥ जाकिनीनि हृयाव नाव जू सद्ब्स्मस्वाकृ४
पूयमध्वगाक स्य दतहृ द्विङ्गाका तगामन्यन ॥ ३ ॥ यस्माविचित्रमायाम्नूऊ स्पर्श ॥ सर्व लो
किक लोकाह्नन गमस्तात्क रूप सिद्ध यात्त्वसंकनकना व्यक्ताताध्य सूर्थ ॥ जाकिनी स्मादि
सङ्कपा दवम्रूकं हृव नि ॥ यस्मा सर्व्व स्त्रीया हृगाव माव जदस्य ॥ सासाविकालत्यविह्ना ना
यहूवि धाञ्त्रयप नावर्हिं धालक्ष्लो वा स्यदर्शन सम का प्रस्पयक्रुमा कृ स्मानूस्मात्तहृ
ङ्गर्भीयाह्व हा व न या ॥ निष्य त्राकेस्य ॥ आदरमादिह्ला नविविचित्रमायाह्व व्रम्रूपास्कासाव नमा
मा मा ॥ स्त्रा का नमनगान क्रियासाविविचित्रवृपेवा वति ॥ स्नूगाविचित्रमायाम्नूऊ सजाकिनी
स्याहि वीयनङ्ङ्नि ॥ नकवलंहृ कायानासामाकाग गामनक्रि निहृष्यन ॥ अवंसर्वाकास

म ला॥ सिद्धिडाकिनीभि प्रसिद्ध॥ तिस्मात्त्रिगमयति सर्व्वत ॥ तिष्ठन्तसूदि क्वचि अ
घवाम्सू आस्व॥ विश्व मूजा लोचनादि सूक्ष्म प्रभृति विश्वमागा नाम्तवधातुमूजयाति

नथ॥ नम्रा मूजा क्षम्नाअवि भ्वस्य वासववाव स्फ श्रीवज्रसत्त्वस्य मगवधावि श्वमूजाद
सर्व्वमा विश्व संस्वर्वे लोनाप्रकारे श्वरबोध सर्व्वकामागाम तनूपा डाकिनी वृद्ध धा
तुविविचूक्षस्य॥ श्रीवेगाव तस्मा अपारि निवर्ति खलाव धातव४॥ सर्व्वतथागतका

१०३

मकाक्रिकृत्खिलावाश्च धात धावूष धातु गवद्वनावात॥ यथा श्रीवज्रसत्त्वस्यात्र याहि
लिवर्ति हि तवस्क खलावाश्च धातवा डाकिनीग ध्वनाका भगाम तस्व लावानिदिश्य
॥ जथवेवाउ नाकाश्य वलस्वच्छ वा भिता धामा धाश्व धात धाविद्रच्छ वा ५॥ सर्व्व
वृद्ध डाकिनी हवति लाव गावज्रसत्त्वस्य लाव नाया पवि वर्ति स्मा कामभगामन॥

गणुक

सर्व्ववज्रसत्त्वा डाकिनी॥ एवं श्रीहेरुकस्य जो यादि पवि वर्ति स्या का भगाम नंसः

र्धहेरुकाडाकिनी ॥ एवं नैरात्म्ययोगयुक्तस्य वज्राचार्यपवित्रिनिर्दहलक्षणकाः गमनाम
नं सर्व्वं नैरात्मिकास्मडाकिनी ॥ एवं ह्लादनयुक्तस्य वज्रडाकिन्यादीपवित्रिनिर्व्वक्तस्या
कालगम्यमनः ॥ सर्व्वे हह्लादनात्मडाकिनी हृन्मला ॥ एवं मायया महापद्मिनी मम वज्रया
नजा ॥ एवं परमात्मस्व वज्रेशस्य बीजयन्त्रं तथैवच ॥ अन्यानि मन्त्रसप्तिमालिनी फलहेतु
न हृदितं डाकिनीपवित्रलं तथैवच ॥ एवं सर्व्वबुद्धात्मडाकिनी ॥ निर्दिष्टसर्व्ववित्व
हम ॥ सर्व्वानिलिम्पहृगावनं श्रीवज्रसत्त्वस्य ह्लादनमूर्ध्या सहसमायातानां स्थितिकयन्तु
सत्वमलघना ॥ तद्वत् [illegible] सर्व्वसर्व्वा [illegible] मैत्रे वसर्व्वमायाप्रया
गतनात्मता ॥ सर्व्वआवकप्रयुक्त [illegible] ॥ हृदयार्थ ॥ सर्व्वबुद्धसमायोगडाकिनीजा
लप्रयोगाय वयस्सत्वमलघना ॥ [illegible] ॥ [illegible]
सर्व्वलं [illegible] ॥ अथ वज्रयुक्तपवित्रिनिर्दिष्टस्य विशुद्धिमायापमसर्व्वधर्मा

गध्या

वथा धम्र्न महायानसूत्र संप्रति॥ न शुन्यताभिश्रुकमित्रिव व न स्मारहत प्रत्येकबुद्धस्य स
म्बोधाह॥ न स्मिं वा र्हत प्रत्येकबुद्धं शुन्यतायां याः॥ सहत ४ नापि वा शुन्यता मिति॥ तास्क
आह कविकल्पा ताराता सर्वसार्थ न ४॥ यतत्वा ननु अह अह कारात्व ४॥ सप्का न
कतं नदपिह्लान विकल्पा सोविय वा नापलहेत॥ अर्हतत्वं हत हा नम ध्यमाः प्र
दिपमार्थ ४॥ सा च प्रज्ञापारमिता धारा॰ सू॰ त्व त॥ सत्रको पाय महाकबुलाक्षेपा
धापायायसूनं सोससकबू लपाय ४॥ अर्थलिखितं निर्वाण चहाव ४॥ जीवे यावन
किं तत्ता धर्म्म वा नारादि तं सर्व य ४॥ कथं प्रज्ञापारमितास्तू ८ के लपयमानमाप्राप
म धर्म्मा प्रतिव याकाश॥ प्रज्ञा मैवा त्मीयस मापप॥ पत्र॰ तागता प्रज्ञापारमिता
स्तू त ४॥ क नाविकल्पा पिताक कि पूर्वे न कल्पयत॥ पूर्वाधि यात्म मध्य दितिला व
४ किकल्पयन ४॥ सर्वकल्पनातू पाधि॥ सा न कुमा यापसत्रूप कां किं लक्ष ष्ष घ

१०८

र्भिक्षुर्विकल्पयन् सत्वार्थपरिकल्पनानिमित्तिकबुद्धभावमन सत्वार्थहितकल्प
न सत्वार्थकल्पनता कल्पनाकिं हृताभूतिश्रुतिकायबसत्वांप्रतिश्रुतिकाप्रतिभव
तस्यावबोधजात्महेशाय सम्यग्ज्ञानं योगभय नवद्विकल्पनृपाया ॥ प्रह्लादपारमितायां ॥
अस्याप्रतिश्रुत्काव वससमागो ॥ एवं हृताकल्पपहृ ॥ तपासीधर्मवानहृदितिः ॥ ततस्य
धर्मार्थविबृद्धिकुक्षिहानप्रतिसंविद्वकल्पनृपतोर्द्ध पासौविभाव ताद्य ४ त्रिसम्य
धार्मिकावा धर्मवाक ॥ पाप ॰॰ पथ सेवहृताविश्य तायस्मात्को क्वचित ॥ रहनिश्च
त्रनस्कत ॰॰ धर्मकाशिष्यलितः ॥ कावभन महृत्या नं वनहृायानह रतलाधावि
सर्वमार्गस्फविधूमहृह्रयायात प्रह्लादपारमिताधिसूत्राकसिद्धि ८ सस्मादपल
हृह्यंवञ्मानसिद्धैवञ्मनिवृक्षत्प्रसादकं लोकतस्पसहृताञ्जनवलवेभाव
याद्यपक्षिषांप्रवधविंसृतासो ॥ हृकंगुतनिष्पेस्तेयथिकाम्भृतितानायात व सी

गश्मा

सानन्दसमया धाकाय या त्रिकृत वदसाना ॥ स्वर्दृक धाराका वे श्रीब्रह्मादयस्तु नाकर्थं ॥ अविकल्प
विमास न प्रतिवि नादि न्याय्य न स्त्र कि सर्व कृत धारा ना यस्माद् क्षोभ ॥ हि गा लव स्य दिकं वा
फ शु या मा स्वहाबान्न हि न बला नादि कं ग न वा कं विहि फि मा त्र वर्ग अकु कन स्मान्स्व व वा
विष्णु द्व का धाया उक ॥ ०॥ ति ॥ यदि स्या मह ल्ल साव सर्व ॥ कि मि ति ॥ फ या का ल धाक स्त्री का न
दृश्य त ० ॥ ति हगवा भा ह ॥ यस्मादिति हा स र्वा का सर्व ता वि ना सू नाभि ति ॥ स्वयं विका न
सकृत्वस वि हु न कायत्रि ॥ अस्वस्य विर्हि विरूद्धपं धात स्वा स्व ज्ञा मा ह पूरुष नेथा निदया
न वृ आसमाहून ज्ञानति महगाव न ग नति ग फा ह लाव गान्य ४ स्यात् ॥ ति ॥ एकाविज्ञ सा
विरूपाणि स लाविद्रूपं सर्व व स्वरू दू र स ॥ अदि वा ॥ न नां स का ठि वा ह्नन मध ० ॥ ति
पूरुष श्रुत्य स्वरूप म नू ऊ ला न व का त्र क बद का प दार्थ स्वरूप कं का न ध स्वा मि ति ॥ ० ॥ ध्व त्र
वादि ना वर्ता धम काय धा मि थ व उ वि स ० ॥ ति स न्यका ॥ धर्मी गावा ल क ० ॥ कि से ना सि ज्ञा न १०९

गुरुः

पृथ्वीवरि धर्मप्रवर्तकांचा धर्मामृत पान हस्ताहस्ते लिखिले ॥ तद्वत् दर्शनाचा धर्म नानाविध्या व्याप्ति
प्रकार बहुत ॥ त्र्यंबक कल्याण्यास्ता साधनं धर्म यान निर्विघ्न हरि नाम कठशा अनुपना सेक त्यान
कल्याण ॥ त्याप्त नराय हस्ताना वक अंठ ॥ उकसा मना नाना प्रकार संतानन धर्मीय जलधन छत्ता
॥ तीर्थि ... नावताादि बहुप्रकारा ॥ श्रुतिहास ... किंरागाव त्रपवरयनका ... हा ॥ नदी ॥ अत्र
गड्न उदधि ४ समुद्रा कहि ॥ अथ नदीनाम सीतासिंधु गंगा तोंग गौतमी नदी ना ॥ अमका लाप्रवाह
नप्रवर्तन सिंधु जलसिंदा ॥ शिला सिजल सिंदागर्भ जलमिश्र ०० ॥ नाना स्वनी पल लव ॥ त
था गांहि नागाथ धर्मा धनी वार्हि हता नातिर्थि काना स्त्रा लडी पुरुष पुराल मिति ॥ नाना स्व
न प्रतिहासन किं रागावान बहु प्रकार मवाव नवन ल्याह ॥ तव भवा कामदा त्राहि मकर
लहि दक रूपता ग्रा अक्षणव कसाद्कलव बहुल मिला धि ॥ बहुल मिसि ॥ तथा थगादीनाय द्व
हल नाना प्रकारं संहाव नाप हरयता ॥ य स्नाव हरा लेसा एकल सहाव ४ ॥ अथ नदी बहुल

समस्तस्त्रहावःवनालादयप ४॥स्तितिमीठ्यूस्लापिनव्ह धागा।प्स्तुलापि विक्रमा ना ठना द
शायखदा सल्ह धर्म्म निवा लाप्त्रामिस्पति नदा नधांनानाल्हून प्रमिराहतो॥व्यथसूगव
मध्यग ख्रप्राविस्थला नदी नाम न कल्हु प्रामिराबाहावस्थानक ला ठलाबा दवकोकायकेूते स्वप्ने
धाधयलिमिति॥वविधनलरुतडपलल्हाको॥लुजनाह रूपूबक्कुगा॥लत्र नक्रा भ काए नः
यहवना प दशाल्हुलुख॥त इप द गानि ट्रिषूनाह स्वध्यान्मतिम पिनाबिरह सिल यथायद
पगवलिङ्गा॥कुग्रहिल्हुनं पश्चैव्यासेलएनं पास्रत्र स्कपिथ्यस्लाहा॥पस्रववकना छिस्लूली १०६
लप्रदशवकुगुकं॥ओबिशकुसाहिपंव ना छिस्लूले बाका ग ढलो थबाका वृद्धि कञ्जा॥न
यमहइादिनि नीलगी ख्रुलयास्कस्हल्हुलो गागमहुल्हा॥मगमि नगलंव धामकेवलाक्ष
तनकव लंपं व धामकेलकनकवलंमं वधामकेथ पन्न नापिविल्हुबितमिस्लाह॥
वहस्पाधी॥हाफविधथस्लुस्लु वा बालकुधी॥वहस्प नपुकलनासि त्र हस्यं तलाद्ध॥आ व

अहिंसु हि तमि ता हर सत्त्वानां संकुलाव हम्भ[illegible]ना वश्च विधाना ज्ञा न दसा[illegible] पुंगव ४॥
सुह्मे नव समया[illegible] स म याहान कांविद्या [illegible] ना ततका व्याप्ति रुवङ्क[illegible] विमला॥ बारा
हमस[illegible] मा हर [illegible] सह्नवर्द्धित ॥ व तप [illegible] विता[illegible] दि[illegible] नि त्रि म लि पूं
वे ५॥ विमर्द सुह्मे [illegible] व्याहि पवि श्रवा [illegible] य विय ह ६ समया ॥ ह बलि यम्भु लि
[illegible] मा कि हाव वी [illegible] श्री मा नि सृ दा मथ या भ वा हु कथ अनु भाहि [illegible] नि ता कि
नी [illegible] कि का ति वी वि स रा व क थ ग [illegible] संच मन र कश्च ॥ श्री जि पहल द वि रु [illegible] सर्व [illegible]
क हा न ला हि तु सर्व न श्रा व [illegible] [illegible] मस वा थि सल्ला ना म हा स ल्ला ना [illegible] ॥
ह व ना [illegible] ५ सा व म [illegible] व ति प व हवे [illegible] विन म श्र [illegible] नि ति॥ ॥
[illegible] सर्व [illegible] ह[illegible] [illegible] [illegible] सर्व ज [illegible]
[illegible] [illegible] ॥ ॥अथ वज्रा [illegible] म हा बोधि स

ति ५

तथागत

स्य पूर्नन पिपूस्मक्रत्वप्रभिपसुवमाह धप्रुकटकोयि न सर्व क्रिल काटि निल्लका
यक्रि क्ष्य ॥ आत्नम व्याहि यंद्र त्वा सुयमस्य स्न कथवा ॥ स्त्य हमिति महारन
सद्धाल पक्रत्वाप्र धञ्जगत वह्सप्रस्नुरे गावनकत्रवादि वह्र ॥ जपिदेवन ०ं
निप वर्ट्र विद्दिक्ष ॥ धमक्कवस्नसा मध्य धत्रत्र कमसिन्नि ॥ प्रधान वृष गवह्सप नै
स्य व स्य ह वा सानि सदाधिक्रन ः वंक्रि ॥ कर्षदूमायवनगवा ः सर्वं वृक्ष समायाराजा
विनिनाल सर्व व धाञ्चलकुक्र पंकनेप्र काय नासन्त्व यमनवसीहिंगा ॥ गोन्मवह्स
ग्वेद नहस वकिकिगा ॥ वक्रिहानि गोलो ॥ नि निवस ह्मकपर स्पव स्पाहिंगा
क्ववसपनि ह्र ष्किनका ॥ नसोह्य यद्भुप्रसक वाहा न्वसा न सवव ॥ क्ष सदागो
स्भत ढ्नस वाविक्रून ह्पम न विक्र निनि ॥ उ नयाहि ः ॠ सन व ह्सपवनन
सव सवी सानि सदा हिं ना ॥ व ह सा सिह सुवं धर्मिना ॥ कन्नु सर्वासनिसवं धप्र काव

१०१

गाउक्र

रिणयतः पताग लिनिष्क्रमात् बाललीलाबुः खमयमेव रिकस्थावं वज्ञा सनहमि संक्रम

नंमाद धीसनन सबुद्धित्वं ॥ धर्मचक्र निर्द्देन ष्वनाद ताविवव यापितृप्यतं कृतेल्लाक्कव

क्रदर्शनं ॥ एववाश्चैव याभिसतसपायानिर्वाण महानन्द कृतुषुर्धर्मसंयाक्षव ॥ एवं न

कुलपुत्रा धर्मचक्र विजय संलुपाण्य बुद्धनानक ध्यैदव दर्शयति यरुपि शिमायापूप

राजगाद्दर्षी ॥ ॥ कुलनि वृक्षन यावविकुर्वितनान [illegible] नि: पत लक्ष ॥ ॥ कथितं

ष्वकर पापूर्वो विद्युतवृ थिहि म कौमासस्य पश नकथर्वे हान सत्वेषु शुविकाख्यपूर

तो कथजनजायतपापयाद पापकथंफ लहगावानाहा ॥ ॥ अहूननमकायसत्वाः

हानापायविवर्जिता [illegible] वह्वहि निविष्ठा निर्विकल्पजाल विजाती कनाशलेषापापं

वपूर्वं वाशिहृय विकल्पनात्सृता वशुभां [illegible] धर्मसूनत्य नाशूनालया ॥ उपावं

दर्शितं बुद्धैः सत्त्वानाहार्थकृत्य ॥ पृथपपवमार्थ न प्राप्य न पृथ नहसाकजपुहथ ॥ पावनगासि

अथ पूर्व्वोत्तरदीऽऽयकपूविना॥ कासूहमादिसंहस्य उद्धकेश्च वनकूनाफमालन स
तथगा नृत्सिन्धीसूक्ष्माला कुस्थरवनत्रा॥ तवसंसानपानस्पृधम्मी धर्म्मी वशाहितं॥ सवनप्र
यागबोधिधर्म्मा धर्म्मविवर्ज्जिता॥ तस्मा क्लिकल्पजालेषु ग्रज्ञधर्म्मागाम्हीनबुद्धिना॥
अथयागनगादिकमार्भदविकल्पसंत्रविष्णु विकल्पादिसंगा आदद्धि पातकं॥ नि
र्विकल्पसमाधिसुलानिवे लिवनिर्म्मलं॥ द्वितीयसमापलाक्षा प्रवाक्षिकूमी लन ५०८
उत्तंकानन्तजिनविश्वंसर्व्वकोल विवर्ज्जितं॥ निध्यस्यतेवे हानं हानमिहेवऊनमति॥
श्रीपूर्वतिग्रहनलका कर्म्मा सार्द्धं विदर्भिकाम्सुह्लाले नेपकुविक हसमयायं काउिदवा
विक्लनेवपूकूध्यानसत्त्वानां विधिधतापलेश॥ द्वहसंकल्पकल्पनाहोहसमयायं विक्लव-
र्जिता॥ तेषुवाचाहितानलयज्ञतस्पृक्वाबहिं श्यातारहवकरा॥ शेवसमयायं वाग्वाक्ति तः गुह्य
मानेभाक्तिवाबहालेनवचामहयाद्यामकाजाद्याश्माहिमदकानलाहामलिहतमितया

हस्य वीजपंचकं वहस्य यूठ सहाव वहस्य गुरु पञ्चकं ॥ वहस्य कर्हिका वह्य वहस्यसर्व
समम ॥ वहस्य सह्यं क्रूयं सचिन ॥ संटा कू याः हस्य का चिविकुठु पहू याव्यादिगीयक ॥
कदूरभाद्रूकीयाठ वकुर्व हृदय वर्हुन ॥ पंचम न्सम काप्रा कूर्मे ठे वर्ण व्हिका ॥ सपः मिध
र्ममा हूः न मह सर्वदा हिः न धाचिविकूामन्तः लि नाः समा चिविवि धयवा ॥ ला र्यमा ॥ सिना
ग ॥ १ विद्या सुकसत्व स्यमा विया ॥ ठकासा वकूः हिरेदे ८ पहुपा वभिमाव सा ॥ मत्र्व ककूः सर्वगा८ स
र्वसआ हठु कास्मन घगमाया यूप गकं विद्या कूर्व विवू क्नसा रवा ॥ पनो व ॥ पिवेसा ठु यंस
मारवा ॥ ताञ्जूदर्भं छिविहाव नांप्रहण्या ॥ वमिना पा ठ ठकाव हृत पूर्व्या ३ ॥ भ्रादर्भग्रा
स्कू धगातापवे षहू भक्षीमा न्मातास्त्र व २ ॥ कस्मापिहुं न कयप व लक्ष्ये ३ पविकि हिन
वर्लेकं मस्ती हिप्रमांन तक्षं हा कृपा ॥ वकस्लव नहा हस्यमय्य लोक न विद्य ॥ ॥ तस्मा
दहं न कथयामि ठेः हेवा गगीन न ठु ॥ ञ्जूतृयसमत्नाम्या ठुय पूर्वापूस हगवान्सीव

श्रू ४

न सत्व ज्ञानाचीय कथ सर्वगानह्लनसर्वासनिसद्यास्क्रिनं ॥ पिनंवन्तु विध्वंपाक
नथमा वतुक नास मा यूत ॥ चतुप ध्व व वा स्क्रि न ४ स्रृभि व ह न प स्न स्क्रिनं व क्रु पस्न स्विवु
४ स्क्रि ना ॥ नाहि प स्न स्क्रि न नाहि प स्न स्क्रि न नाप ॥ तुक्र प स्न था ह गमान्नगामं न पूर्व
वि इयाग ८ प्रवृजनं सित वर्ह्ह नकं व न शुक्र व र्ह्ह विश्व मी न न श्वे व व ॥ विद्रू पर
गवास्या कस्लु प्र थ मं क स्नाक लो गाह्ला ॥ ध्वा नां ह वि नि र्ध ला ना ॥ ध्या सो ॥ वि या स ह विया १०५
अतना वि ध्व रूपि नि ॥ स्को सहा न प्रलया स्वर्हिं वि द्रू ना ट ॥ प्रर्ध लन ॥ वतु ना ॥ सि निध
मा स्क न्ध स ह स्न वि वि धि ना काय्य त ल स र्व व नि स्क न ॥ स्ना का शा म र व स र्ह ध र्म्मा ह्म द लप
नामास व स्क्रि नं ॥ महाक न्न भ व र व संह न हि न्न स का स मा ध्य मू र व संह न स्म नादि वि ध
न ध्व व मू र्ध्व न त्य वि नि ति भ हु ॥ अ न हि प व म न ल स र्ध वि प्र का सि ना ॥ स र्व भ नहि नि लि नगुक
नंन ॥ ह हि नित्र का वं धर्म्म धातु ना था नित ध्य व्य व स्क्रि नं स्ता रू प वि ज्ञा न नी स्म स्संघाय

स्तुविधियतो भूमिमकु वज्रकुपी डकलपम तां वमासर्ष वदक व मार्ड कहमिति
कथनं ॥ उनमाप्रानि उकानि पिहुसमगुहानि ॥ पूपवद नासहूसका ना विह्वानम
नं वा। पवे वू जमम्यं लिमवस्क धप्र ॐ लिकथा ॥ पूप गवथगन्धशवस वस्पर्गम
व व ॥ धर्म धातु विनिर वा ना धद्ध थायन नानिव ॥ उना सकाश ॥ लहलनशु काइसय
न मिव गु पि गु न्मानूपसत व ध मनधूव वाकाश थागु धाता वायनानिव ॥ ॐ इयसु
स्तुधरनाना मिति धाशूयहा ॥ मगु ल द हामि स्तुकं मगु सहा गाम्र या ता ॥ म्हुलवो
चिविरुतुत्रयम गु लक ला नाना ॥ कल्प ना न सकमरू गा म ज संव वा नि ब्रह्म स्था स्वंभ
निधिवि भाकृ निसल विय प्र कालय तृ ॥ मदनमन्त्रिमा स्वं हास वा ॥ ग तम श्री
गवेवनम संपूट मभव ॥ भवं मतकं विड्व लकसम ॥ कृहल गर्ह विविर्जि शाण नं ॥ जूल
न लावर्जि दीपकाल नतखपूलगु लं लसम ॥ नकूकूर गाजी कृष्ण वज्रदर्शकनक ध

कथका

रूपक श्रा लो ह त्रिना लमाठुला नि वीजपूरक टि॥ वि क्रिड वि ष क व ना वे रू क्ला उ:
रवद्धुसित द्रुरु यागाता व कव विबव वि त व॥ जूर्क वक्त ४ सल श्र ९ पत गा छ्या गि स्पर्श
वृश्चिक ४ सूर्य ६ शूलय क्व दि न क व ३ ४ भल्ल क पूतना वि नं वा न नी कपि विष यक
कूम ध्याम ग नल श्रितवाटि का ना गा वी नासिका द्विन कन क्रिब स ध्वस फ हि ना नी रूपर्य
शृ ना श्रा दि न क न ३ ४ अ ला स्य ग ग द्वि वि न हा गि ड ड ल्य ध्य ना स्पर्श द्वि बंद दा र्श
अम सूर्य रव वचु न ना गकं ग र वा हू व कू कूं स दना मयन्तक ८ कर हल का ला वि ष्प म
न कुरु गा वा ध्व वा जगाया ध्य ग र स हि फ स्य या गा ४ कं द्रु वपानीयक थ ति क्या वा वि
वि ष विश सन क प्रा का नम हू कय त्रिना ४ य स्प र्थ॥ त द्वि विज्ञा न मू द्वि वा य न ६॥ व हू स्य
वाह ७ व श्री विश्का ४ त ग न न नाग कउ कं मा हि स्व द्विन॥ ह का ज हु क द्वि म रवा हि द्वि
म रव ध्व र्ष ८ व क्ष्मा ति क थिति ह्रीं ह ६ ह्ला ष्मा त को व क्ष॥ त स्य फ ल पा नि र्हक ध ११०

गुरुक

ममत्रागयाविद नमदिहवति स्वर्थी॥ रमघुठंगमप्रठं ववक्ति नःहू ह्री क्रीं वंवा हिम्मपूव
कनवजवकुछि मूरत्नो हिपिनी न मास्मावाला मूलसफ ह कलानि सफरव अपिः॥
ॐ वज्रकव हूं हूं दा। रलाता मवाला कलकां नका रलन व सूसिष्ठि। पजि मा हस्कल्नका
ग्रह क्षमाकूप्रतेनान्मथ। श्रा तुजमत्र ४ सर्प नाज ४ कवावां निमा का॥ जुजगा। नर्मेयूव
४ गस्यं हक्रं हिन ४ काफ ३ दिवसहीपू वृ लूक ६ ठ व ।भा नव॥ ल्कुल वंधानि हिह क्रुफं
: वाह्न : हर्मि : यवल्हानाह विवि राभ ह्रीवनाह्ह शुकव • मूजका। क भाटो घिके ५ डल्कू
वकूम्हा हिनहलादकमेव ज्रू म्हाव नाम्रूह वि न समवकतागा नरव :॥ पूताम्नि पूक
पानफ ४ द म्ध हस्मी कनंब्रू का ट ब्रूंका ट वीजा हू गेने ताग नसिज्जि कक्र लब्रू क्रीय भेशाला।
नतेन- कक्री हूं नाजयन्न यनपूयापूष्य नक्र घ्र गूकागमेलकेल्फेन नगावपूतं का ट वीजने
सूवयहहया स्माक कांसां ठिव वकूआदिवा वहू रू पिहव किा। पू ब्रूंल्ह हावकमालरुलगस्ठुलि

स्वा हा विकें प ग्भ मि सिस ङल स बाव न छर्ु का ङक्ु के वू दर्दू व गे ल पा ल ठ ली मूले: स
मध हि ६ ह्रुम हि का म्ल्ेु नी ष्व श्र स्रफ व ६ इ इ हा छ्रि म्ल व सर्प स्त्रृ भि व प ठे म गॅ्रु क ल्ला म्ल र व प्र
कि घ्य ह्ला न श्री नाम्र वृ कृ भल व नी गै ल व नीं गं म व म व वृ क ल्ये व का ह म ग्गो न का इ र्म
भ ना म ऊे व धि ४ ॥ मि नाम ल्र्स्प ६ म्ल न ६ का स्ल नू ॥ मा क्ष्रि कों गु ठ व ु ठ भ व व स्रुप ना ले
का ङि कें ध्रि ङ ञा क्ल ला ६ मा ञा ना पिे ञा ल ६ ॥ क पि वीं न व ध्व्र पा का ॐ म्वा ॥ का का हि वू लू
का न कृ ला न कु ल ए व व न मा विे ञा ल ६ ॥ वूर्दे म ठु व ष्म वि ङें पू न क पा वा व का ॥ क पा त १११
मा ॥ द्राम वू ञा कु कृ ठ छ ए न यां संकू ख्रि वी वें भें ल क म र ला ति गिे वम्लु ठु नीं पि वृ म द त्रि
निम्वा ॥ व लि ठु क्का का ॥ ख्रि क स ना मा लि क स वू ली स क क्ष ल प्रा स्व या म ङि का: श्र हं ना ना कि
ना नि ङ मा ङ म लै न पू ष्य पुष्प न क्रु ना पी ॥ स्त्री वृ दे कि श्र व न क ङ कि का कृ ना ङ लि ६ मि
ख्वा र व ग न पि मि ग कृ ठ व क्रां सू व प नि ॥ प यि न्द्र भ पि सि वा म नि सि ना ना लू ऊ श्राव वा राम

क्रिन व्रहाइ र्वमंगा ल्पा थाव नाक्र्ंन्रुजकुट विज्ञं श्रीसकंदा नव र्वक्षे अनुरा वजन नकवत्र
नखगाठ खजनकाातिाविकाहिः काजूप नाजिमाागम ाआगाजन सह धा टके टके ठनावावक
ठक धम्मधू माक्रिक म घक्रिमाकन धूयष्ठि प्रथमक्रमप्रथमसमनज्ञ नखलावकी ख्रि लाक
मिातिसव क्षेव प्य नाजाक्षि माल वे नाय ल क्रितामाक्रं ंगाक वक्ष ागनि ना ामकस्क न्य
वाक्रन त्रीला ंगाक क्रव नजसक्र नगह नध्विन नविकाम्र वत्रा थाप्य व क्षितासव र्वहाग्यवाव
नाथाथा व ना ठंक्र गुञ्जी पृक्र थापुष्यमि तनिकनक सुममनमय ड ष्ठ धन नमू नायाख्याक्रि
वामाक्षिखिकमू र्वमी लाक यू नादितुर्कीनाथे यू काफि रुवन गम गान नत्रमर्दिन क्रतुम
क्र नाथनाक्र गेनील आमो ांगाक४ नष्याक्र थ दिक गख्यावायस नि द४ काकाल पय४नत्र
सा हर्हेग यक्रु गाष्व नि थासाकाल नर्दि ममस नितंक्रनाष्ठापावाव गस्यक्रक्रो ाजाज न
मगकितुविनिकाल नगमश्रमिज्ञाज नएव निजुष्ठि नविक्षाल खनिमान कष्ठ किता

नसबृषियसहस्थत्वगुरुसुउवयथगा॥कूतिनवगितानिघनानिसुनदामकूवा
लिवसयनहूदाकूला॥किलापलिसिंयाकउसावननाहाछेवेगासप्रयमाडि
कथा काराबहुहलितान्नगउसतनेविनासापूकासावपानाला॥किलायूख्पूष्यद्वन
सूडनप्रपूकीयनसकुगडाधाधिसपउयगनयानासिंहिरुवाति॥कूदयामंत
कमायामनागरसमरसुधयाधिसूयगा॥प्रथमसमूडामाविसाय्यपरबदंडने:
साधनवप्रक्रियास्याउनेहावयानयावह्लिडुनिमिकूसूपन्ननितिा॥याना कु: ११२
सिद्धिवहितंकनवलमिरंमाउनसाश्रादिकमपिकवातिसपर्थ४॥ऊमूक्रिअूउपि
सास्राटिइझायष्यनामासूाधिकेहवनिप्रक्रिअूउपिखावाजोनपश्चाम वाउपू
जा[illegible]रुअूउयिसाकान्टद्दूा॥सुपस्यहू॥भवक्रयाहवति॥तश्चेवस गुरु
विप्रानिमिनीडूयंग्रा॥ग्रहादिसर्वविप्रासमूद्धियगेवक्रमानेनमरू हामिमक्लि

ग ज्यादि स्या ह्य॥ स्त्री यानाकृ क्ष मंत्राक्रि य्यप थ्य ल्वमा ध नंप्र व्याभ स्नंपू द या धा

नमलु ज ह्वासा ध नियम्नि निवि लं ४॥ नम त्रु निर्दिल्यू आ ह्य ४॥ ॐ प्रभन्न नाक्सु

मगम्नावि क्रम्रु न हा वन स र्धी र्धमा धनि ह र्व स लवृ णकवि हुँ स्ह ह हुँ ख्वाहा॥ न

क्रि मृखव प्रजु ज द वीमामकि गोज वृपिनि फीज्री हूँ हूँ प्रम्र ह्रें ह्रें स्वाहा॥ ॥पू

र्वीस्तृ वद्लकम्क जपिस्ताः प थ्य पं ज न कृकूलम मपिसा धंथ्यादि मू कं हव मि॥ भन कृ

कृम नल ला ग ति लकके र्यादिप्रा ह्यास्त्री हमस्हयाव गकव तमाह॥ वद्ध नीलिफ

ह ग्ग पवि गगाव न पाहुं काव समाहिरव्य स्वानिनां ह ह हू पगा कू र्या माव स्म

याग स ह्या मोपर्लि दा स ब भाह खति न्ह्यहा वा ज ४ खान्ते स हस्रु पतिका फज ः

लिह पिज्रा वयु ज्ञिम्र्य क क ड स्पलसालि ड स्पलाक लिकालो ह्यपृ मिवा लाह विष्लु

व गा धादि गुप्नुलस क्र ल सकाम केर्म लगाभ क ने कछ्मा सा व दोह दा व्ह र्दरुप्रा

रा वा ला सि ध्वा व ३ विर्ज ल्री ध्वमाश्रि मंत्र कभव । नाग कँ भ त्र वि याय त्रि व व क्लक च
गथ स्मक । नाग ४ पू त्रा ग ४ चक्र मर्द ऽ ऊवि निद्ध वि ज्ञा भि । वि मय व भि स्वाप्र व था वा क ४
नि य (शु पल ध य ह्राहि श्री यर्प प्रभिका मनाक था त्राक व ऊ ४ म ऊह्ली ह्म नक हृप्ण न व्व
व व बवे त्कु कं च थी मस्क का । नाव् लर्वा वी ह्वीजा थ रा ड्व कूस्क क हव न ज ज्ञासिं ग ह कु
स्मं वा वा वृक्ष द व क ४ । क हन स्यय वि प क हू व म ल्लाधि सा धन प्रभूका नां क या वि द्व
व पूसां कें दां विं गास्क कं स्मस्यं कि ऊ ना लि वा कव भा य साबो यू धू मृज्ञा मा हृ॥ यक्ष पू क ११२
स्मम् कं न्व पा निम क न थे व वा । मू कं स्ताभा वि न वे व वा हृ यू कं व पं च मं । पा थे स्मृ ऊ प्रभि का ऊ
थं न वे द स्वयं भु वा । न ऊ स्म कं स्म कं स वा द्विकं कूस्म कं व भा दि क पा नि स्मृ कं व का द्वि क स्मू का
ला ध वी न भा दि कं । स र्ब स क्रु प वि स्था रा वाह्य यू द्ध वि पू पा वा द्वि व स्सं स्म कं । न्प श्री क क्र ।
गुह्य ह ल्लु न व सा ह्ला भ्र व क्र पा नि वि ग या । ग स्वक्रु ना लि नि ह्व था म ४ स्त्र ला ना क र्ष हा वा घ व ३ त्र

कर्मिन धमेगावबेवमाक्रे नहू ट। गाम ह्य सम यपदन वेभारव मू ड्म डुबम स्तुबेम ड्र
यत्सम्म आर्हि ठतुवन उयसह्ल नमू ग्रामाह। जह्वायुह्लपा। लिश ह्रिकू ८ सू ४ सोहिला
खि रु ठ हमयदह्ल नमिश्राडू वा ब्रागु हि हि गापादे नवू आनूव लावू हौ। पदीय गा ह्वायु
ला। या मह्ल न वे भा ल्यमू नास्या। हस ह्राकू गिस ह्ल का। ३ नद्दव विप र्थ्यसकु पु स्पाहि ट ः
घ कि सं र्थ। क्रू भि। थि ल्यसमसको। कामनलवे [illegible] नाप्र हर्षी यमन शुद्धि वकायम ऊ। सलो
ह्व वि। को ला गाव। विधा लगाम का। कि ना। प ऊ वा ग हणाज्ञ नयाह र्मा गाल बि [illegible] व रवा। विन
सू र्वे ध ८ पूर्णू यकन मू आ ख्वम यू रू र्ष ण [illegible] न धन रह्य मह्ले हू थि द ह्रि [illegible] वह्य वर्द्ध
गेबे व साव म ह्रि ध्वह्रि धलि पूर्वे वा इसम हू ला [illegible] शिमा कृ ग वकू ला हमम दे गाकर्ष यह्य
ह्लु सर्वे माक र्ष यह्व गलू। सर्वाकर्ष लम्सूजा सम्रु ह्रि पाल्य पन्ना। य क र्वू य मन नावन। । ।।
ऊ काह माउ हम ह्व [illegible] न। य ले दि ति। आ मव। काल लेका या ह्वाल शेह व ला व काल धानयपद्

गथा

षय नासू आस माकृ सप्र य थ नायं धार्था वेय या वि षि किंव विका क्ष अक ऊ सिक्षत ।
सूर्व पूल क्ष अपूव दाम आम छि वा क्षाद य ह्रक्रु गाव नाह बिकुसू कि त्रि वा गया तप्रसूव ।
न सिका गि वव ४ धु नूनू र्विज ममू ज्ञा ॥ वकुव स्र व गि हुवप गा ह गं न थेवव ॥ सव्य नवा
सूयय ध निस्र मूर्ह्व गा तन्न था ॥ क्रु मा का नो ॥ वह्न कृमाद गं वे वियु ना सू ना ॥ लि धा तु का न

हाव ना सू रवं ह्रि सप्तु आ ति ॥ श्री वे ला क्ष वि जय ह्न प म धा ॥ उ कि पं विशू कि पं न ऐ वव ११६

न ति कि सिद्ध वे व म र्धी क र्थ हसा धिका ॥ कूप हक्ष तमन वे व दिग्श हूप्र व वंग था ॥ गथ
ला था व ह मू जस्तु हाव प हू ष न उय ॥ ह र्वि हू व हस मूज्ञ स हु त्र सूर्व न ॥ सर्व सर्व या ।
सर्व सूय धनूव व दव नाम् आसि क्षा न य व मा कू व सि ति ॥ सर्वा यू ध मूज्ञा वूजव आमि
ति ॥ वे गाव न ४ लाव नाय पाप सूज्ञाय हक ४ वे गाव न मा गा वा निष्क्र लाव ना म त्र कु ग्रुष्क
मा गाना हूं हे वडक ल भ ह सु नाउ वह्न ववं गि धम मा स्थाति अन ॥ निस्या हा ॥ म क्षा नाम

त्पिण्डा मदा त्रिंह्र हात्य सिद्धि ददाति ॥ वज्रसाद्धि कम समय वाह्य वाति ॥ वज्रसमयप
दनाठि काय क्रालिन स्यावि ह्रु वज्रस्या ग्रसनमा नाम कि हूक्र नाय सिंसमा ध्मेस
ह ध्मे का ॥ वज्रकुलस्य हितं मन्त्राक्रया ॥ हि निश्चयं न दापूर्ह्रे साधस नीवे हाव य
त ॥ पापनाशन कौस्यात ॥ शान्ती मन्त्र वस्य लेख नावे कृर्याक्ता ॥ पूर्वे व क करव (टान
वल वष्ट्रि मूत्तज्ञे किलि विनय कृ ॥ सिह्यावाधम ॥ मिकाह्व ४ सर्वे ज्ञिता यनप श्रेत नरुप न
ह्रै नविका ण ध्मान द्दूह न मकव णस्त्व कुला ॥ सकपस्यासाव कव ह्ना ॥ निश्चव कीर्य तत न
लि कृत्वा नदा लंवन नासमाधि ॥ वज्र वज्रवला ॥ सकेनथ यन्न ॥ वेनाव न वज्र पय्य स
मिगाहा ४ कन कव र्द्देः सैन्त्रा कृयालि निश्चर्य सा ध्मम हिल्वि वायकृ ॥ साह्यापूर्षिः ज्ञनय
ति ॥ ता न्पवज्रह्न वण सूवाहव लभलप्राव प्रकृ ॥ धर्मी काण वह्न वर्द्धयति ॥ स्व स्तदयक हिं
कान्कस्वसमन्त्राके नमा लाश्रविद्धि तं ॥ विष्व वज्र ॥ पि वस्तं कृत्वा वर्याम ह्दविय क्राकता

मध्य

ति॥ सर्वव त्तिना निर्विकल्पं च गीता॥ द्व्यस्याश्च मनोधाधाकालि अमा घवजी सेवजीव
श्रीभगवान स्याचति का वं वज मरहयय सिंहामा ध्येन समाय घर कं मन्त्राक ना शि
निर्थ यो ति॥ सा क्षमा पूर्व्या ग प्पम न किं कनी कया तिह्या नावकाव कान॥ ना ना व ना च
ति न पा व लक्ष्व नस्वान स्वानून त्प्पकं का ह्या न न की ला का ह्व वह्वा नवि विक्षि काव ज्ञप
मा लकाद्य का धा रूपद्व य ह स्नू च व तार्थ पज्ञ ना किते ४॥ साह नन महिस्व ह्यु
चिर्ता ग्राम तिनि विख ह्युमन मा॥ न वयस्तु न का गाप्पद पा शु वि धान न ति फ दू ११७
क हवं ति य मा क्रम पग व ऊं पञ्चा दना सु हि ने याव वा॥ कक्ष्मा स्यादि फि सि काया र य
काव ताव मेति कि॥ स्व दवगाद कर्ह का विमन हा माह क्ष अस्तू सा घ व जि कस्य ह्या ना ज्य
वशा येन काधि विरहा न स्वा ह आप्प गाका ना य सि नमा ध्ये स न क्ष का॥ ॐ ष्यम स
कृष्ण ली म्र गाद स्या श्च या शु हि स न प्रति कार्हि ना शु ह स्व व न्द्र खा॥ वा न म शु ली प ज्ञि शुक

हृदवता॥८॥पूर्वतत॥८॥निवार्थ्यखल्लुनौहि॥ना॥८॥कूर्यार्द्धक्रध्वनावर्द्ध॥खालातनहायनद
हंकारकाकू भ्रंधापवयपतिजयवावमलु घाद्ययथ॥लुनकल्भनद्ध॥रूयापिवस्त्रापि
दिहिलवकुलाक्ता॥दिहिवहिषि व्या॥का॥ह्यापुत्रानकनूपपाथि ननाहमिपपनमालया॥व
ज्ञाधिपल्पववज्ञवामाहिथके ख्या॥हिषिवाषावर्द्धा॥भाकयाव॥भ्रूह्लानपठलमपनिप॥
दर्पनमाहदायवज्ञपर्यंक यागनेसवीढ॥कीया॥यथवृविजमादायाबामासुस्पंदननका
हि८तंयाकूर्णाना॥पूलनविपिमूरवखु॥ज्ञाकथ्या॥मि॥पूर्वकाब॥कुस्येमामूला॥जोवीदकिली
शोड्मूलवाताजीपदूनद्ध॥प्रभाहाहूखमदनप्रभाहहूरवावासनावैमा॥लिहर्वमूर्जि॥अप्तनका
लेवहर्कंयव॥सि॥नस्मृरिव भेसुखकाहूकव॥कुली॥पनवृप्राणाहून॥नवाजानहविक्रमम॥
रिव सौंस्मरी वायव्यञ्जुन॥जवर्ण॥नयान॥वनसूरिवघस्मेनीद्धा॥त्रेगानहवृकतलिनाहयाद्धुपि
लीगानहद्विहजोवीगोड्रस्त्री॥सेनीपमाहद्वि॥प्रभा॥हास्ट॥गाहद्धपनदाष्ठिवना॥लिनलदाष्ठि

पृ कलिडु र्ध ह्रि श्व गुलि सू ग न ह तिर घ स्ल ना॥ पृ ख्य गोनी त्र प विवि ह्य मस्ल ह्रद्ल तिख्मू ह्रि
गम गा ह्व ति ख्रू य वो वीपृ प॥ म्स्यप्र सा ह्रा सू पं॥ ड ह्र कं वका ली त्र पं॥ ह्र क्रसू माप्लू क्र सि न्य धप्ये
गोव गुलि सू ॥ न य सा ना॥ एकायुत सा मा या॥ ख्यन या गाव ह्रि कुं अपसा॥ गो वी ख्य
न्य नापी मृडु य नी ति स्त पं ४४ का र्थे॥ अयहृट्या व ल्हू या ॥ान खोव योवी ह्र द य क टिका
सा ख्य न वी रं प्र वि ग ख प्र मा ह्रा या ॥न सव मा ह मा हि ति सा ख्या नि न य ह्र॥ जव सू ख दा प्र ः
मा ह्रि ता प्रमा ह य ति॥ व क्रा हि ख्यन ना स्न त व वा वि न सू क य ह्र॥ म्न त स्न ल्हु प य न्कि॥ ख्य ११८
न्य गा क्र ता ना दा ता॥ पृ क्र ति न र्ल्य य ति प्रा ट ग्य म स ख्य न्य न स्हि कि प्र प व ग्य ली सा व प
ति प्र ल न प्र र क ता न न ख्य न्या न प स्र ना ह क्र य ति॥ ख्य न ह हि सा ख्य वृ क्र ल गो वी स्नृ
ईयाति म न सा सा ख्य ह्र द य प्र वि स्य न स्य ह्र स्य सं वा म ह सं ना सा या क र्व ना वो यी ह्र द य गुरू
ति का म न सा सा ख्य न स्व्या वृ स्वं नाह्र॥ जया ह्रस्र व पु गी ह न प्रमा ह य ति॥ म न सा सा क्ष ति॥

मृाहिता वक्रा लीम न क मृय लुा पयातिा म नसा क्षन सहे कि कसहम ह्ााञ्च मन कर्क यतिा
पृक्ष सिंप न रूपन र्दे यतिा मन साखा धान सहे कि कसह याम्ह रव माह नार्द्ध द्दविूस्र्याग्र वशु
हिस्मा गा नमाव यतिा पसुविस्मा शाम्राक्ष मृरवप्रक्रिष्प वर्व नक्ष परूकयतिसर्व गत्र व धास्हकहि
माहवतिस्वर्थ वड्हें काम वे धयक्ष क्ष नेव धाःस्प नामसहेते सवडस व्वसुँ सा वक्ष विजयाहवना
श्रुमन्व नमम सितिाहु लिा कव लावला दो नक्रादताग मकन था क्रान्दनष्पि कतिवूव क्राटसम
यतिा किनामक हयाव नक स्वार्थमाहा स्रुलय्प द्दविू जिवपूर्ङ्ग ल्वा नव्आ हिताव द्धतिम र्यक स्पा
नधीय्य मनाडधि कर्णि नघांकल्प लिव ड्रजि व्वसर्व कल्पाञ्चासिक स्रुस्पप्रहव पिव ड हे नकालाम
श्रीश्ताक्षा कथयतिस्रहेति कल्ल हृवि हवाहि ध्रतिल यथ्य। सवड हेवधा महलाया मिति स्रहला याीव
ड्रायाान र्द्ध पिनवजिनापाइक सस्रा ढ ठस रुपर्व हयवड नाभिहहिति। विध्र मा हस्लुनहि सम्माम
लामजस्याध्र ल कल ला न इाका माह पूम्ह म वाप वाल्वि नष्ठि का यसना चिन्मसङ्कुष्ठ्ठिा पय रव म क्ष

कथा

कि त कं श्रा ऊँ नान्त दि तुप विनस्क वा नमा क्षयाषि नर्द्धि मिदं ड स्तूक्ष धम या तूं कव लम्पाव

नात लि दि स्था पादि वा कास विलि नमाकम विरि नाम्नि व ॐ ति कर्निस्थका या ॥ एव मि व व मि

नं स्पमाया भक नति वेव मा घेहु न मा ऐक्षा सिर्द्ध वू वा एस वै वै वी श्रा हह गवान् सर्वतम यान

का यवा क्ति रू व कस्य थाना म्नुपवगावान् वडपा लि वो चिस ख म हस्त ख ह गाव नम्मन ह्ला यत ॥

शा दय ङ सप्त तिसृ वित ॐ हा निकपय स्वमवि श्वपथट ह त्रा नास ना निप यह यत न स्वा

व कस्क दवया [illegible] नवकाव याग यन क्लियन ह्लि दयं सप्त मिस्र वा मे नि ष्या ध्र न ॐ मर्थ ३ ॥ प ११८

गम ह्य सन्त्र पक पाह ज्ञ मत न न हूयत ॥ ॐ दावि मप्प ल ह्यु व हस्ह न कथ आमि न पथाग न

स म ह्युलम निव ह वं ह्यू कस्य ॐ व ह्यु स स्कन वायू वर्ह नील व के मि स्पर्श ॥ ॥ प स्पा काव: य

स्पा का व क्लिह्वायत वया कास ॐ मिय थ स्ना । कि भया नं व कय प्रव ल स ह्यु ला स नम धाय कल्व स्यं

कम्पत दव मथाना दि वि ध मयप व मा क्ष ॥ विध्वति व ध ना तः पव मा ह्या दिम ह्यु ल हव ति यथ ख गुरु

काया ह्रिति समरवर्णना ह्४॥ मञ्जोवृ नुब साशिकर्मा स्यतिविश्चाद र्लिकर्वेकु ति॥ जुक्ता पुरुहक मर्मा प्र
कृ मनि प्र शाब ह्या रप्रमामा गम बम गी दपा वेगाब नाम स्याधि खशवाकृ ग वव सथा॥ पब शाथा
थ षादि सहक नावद्धिना घृवि धूआ दय४॥ पेक्षे पवि अना॥ पृथि व्याधियवे रह नखहा वानि
मना॥ ह्रिति शव नैशि तिकल्यनाबहित मति हि अकूक४ पव प्रव क्ता॥ मि सर्व शा विभवमूलम॥
यठव प्र बठु नोरं छाव पाव समहि नाकल्यपकुदा मठुल मूक॥ मिदानी ख ला न ज म ठु खं दर्श
पशि॥ व र्वेमे विश्वम ज्ञादि जि धीवृ मशाव नादि द्वी नापृ कं सर्व गा वि थ वाक्रु गा॥ कृ तिजाव
ञ हृत खुपू र्वे वकेपदन्मा से॥ नदव्वव उहूय गा टोन मृञ मञ्जा वि शि वृते॥ म धुयु लखवा दिल
कि लर्वे वञ मृ अह नगल ञु गु सा र्मे कान्नाहि ४॥ गोजादि का हो पुत्र मादन के विजया था॥ ॐ
त्या॥ विकृ य हा॥ म गुत महय शृ॥ गा धर्हि हि दिम ञ लठु वन महि मञ्जल र्वे दवना स्तु नवृ लकृ
का य न सासा शाव गपृ र्वे कं॥ माम मठु ल क कृ या मह॥ स्व दव गाव कृं ति थ र्प सुँन सुम्प मि सा
सु

गुह्य

निहितानिकुर्यात यथे कं नि श्मा विकेत अेव दंदें वनाव ज्ञान सिंकदं कहाव अदिनियावनु
त्रा ज्ञ्म व श्च सात्र नीय यागवाने कामाहि हदय्यानि रक्षपनोला दि सर्व पंचव कलमयी कमुह
काव न पिनानह हू भागंड फें कुर्या द्वं ववजरव त्रि प्रथ अथो गामनद दवाडि पन्ना फ पप कवूर्घे
व शिहिनादि कम दुलं यथ अवदा संत्र वार्याद्य एथ पनवङः पात नकू यन प श्माकू मि षा प्रवा
कम शुह्व वकाः श्यन हृवित पीत वजह प्रकाववका द्वितीयनीय्प नकं चर्व स्तु यवक वेधनमसा
वकू या नी थि श्रा ठाल निति विश्वप मासिन नहवं भाव लि ग्वणयकृ पूर्वाद्दि काष्ठक कू मा
रेथ नादि वक पू र्वादि का लो पूलाखना द्वितीयपूर्वपूर्वादि दिक्षुबो ज्ञादिवजू दवा ध्वान्नीयप पू
पूर्वे दिगा लम मरे यादि वा धि ह खाव लि र्वादिति पूर्व वा नवड्रा कू मा हिन का सपूवजना
गा त्र वम दु लो मानि ता यथा व द लि मल्लु म्माकल श्म कू मा नड फा न कू र्मी रस लाक हागन दु
शू धि पानि ना वकु गव व ना दि न्तु दवी हिम वस्त्र सर्व द नना हि ह कू लत दल ध स्त्सु प्यामद्र

११८

गुह्य

बू निकन मिदू गम भानाथाभ व राज्ञाधविश्व र्हि नमो धम ना ला हि हि खाघ्र ति पि निते प धे ड्सु
मपू कथ नियव ज्ञ विना यका थाय सपूश्चि न खव यानमर्षि का कृ धी दि निया व न ा मन आन
वहसमू खप दि िाप काव प विश्रा हृवनि जम [illegible] उभग गुन्य का माल वा धा न धीव पाव
नयूपवि ना हा काय मासि कृष्ण वा धि न वनु व प्रम गु लंस क भ फ वि नू प्रह षक यका वा ष
न नी कृ मा न न म धा सा फ मा वि न्द मन खस प विद वश [illegible] फ वाम गाबु ना कृ म्ब व धी सकन वल
वि ज्ञ नि नान नख्व न य्या त्रि र्ण ज ला प व ल न ट किं वाज न वा कृ ध्याषा न व ध्ना विन निया
स्कृ नधस ना वं हा कृ स कृ धे लि नि षा दि ना कृ ग गाम्ह म यू रू हि न थाय स्व न व ज स हाव न्थ
र्वे नि धू म कु मू धि व थ न न स्या पा नि व ला का ता व कु व्य पि लव र्के मा हस्ने म शु तन खव द
हृ मू पंच म विकं म व दन न क न नि क धे ना व ज्ञा ध व ज्ञ न क्रो क हा व य न क हप नि षा मया
दघ राज्ञा र्थव हा म क म धू हू व भग पय दि नि व जधा व नि हमा व न वे ना व न वार्थ व

र्य्यं वालि रुपदन पर्व्वत मवह्रु ॥ पहा ॥ व ना रव ॥ भा गहक्रु वह्रु नकै हावयन्रा ॥ व वप्रस्तय
कातम्या ॥ पिस मस्यवार्यावि थ ॥ ८ ॥ क्रु गाह्रु व हस्रा ॥ र्यम हावल हयादिमाक्ष्र हल्लमा ॥ हिरव्य गह
लाङ्ग कना ॥ क्रू नकी क्रु लिका ॥ वामह्र कि गरवमा ह्र ॥ फिक्रु कमहा पक्ष कर्क्वाठक क्रमाना ॥ पिक
सिद्ध धयमहल हारव्वा ॥ पश्वस्व ॥ विजयपिषि लाना ॥ इह कुं कर्र्हि ह्रनस्र ॥ यथा ॥ हुना वा कर्व
सपूस्व वा मक्रुस्र क्रा थम्र र्ह्रिणा ॥ लाकल्पपि नमान हुँन हुं ॥ श्रु ॥ क्रवथना ॥ पादत स्तनपि
धयकें लवयन्र ॥ नागभथ वा ॥ लिप्रमा ॥ कना थगानह्र क्रिवानमार्थमाह्रा ॥ वका ॥ क्रैं व र्ह्स ॥ प्रह्र
वमा ॥ साने ॥ धा धनूपा ॥ विवि क्रा ॥ स्रव कुँ ॥ रें काव ॥ ना ॥ हिन जिह्वयान्मप्रमाना ॥ विदार्य्य पक्ष्रौं ॥ न
घना ॥ ना लि क्रमाना ॥ कल्रा ॥ नि श्वास्रक्रुल वलन भक्रा ॥ यदिवामह्रवस्र जागाना ॥ हिनक्र ॥ स्रु ॥ ब्र
॥ विपा ॥ दे ना ॥ क्षि ना ॥ क्षि ना ॥ थ हूं काव कन नश्य वा ॥ क्रु ॥ र्या ॥ ग ॥ सर्व्व ॥ वि थस नार्थ माहवा ॥ अप्रस्तय
स्या ॥ दिगमश्वन वा गावा ना ॥ क्रुल लाट निर्गता वलते हा ह्रव वेमन नस शु हल्रु षड्रुज वामन ॥

२५१

ॐ निष्कित सप्तमं हूंकार विदर्लित वकाय त धनुर्वक्ति तत्र थ [illegible] कार व हर वज्र हः कार मं हूं
का थंठ वज्र भव यक विविधि क्रूपत नेव वान [illegible] धे श्रुह हूं सर्व्व विघ्नाकक हूं कार ध्व
नि नादि [illegible] नत्वे भ्राद्धि प्रहव मादिश वपात नविश्वतु ४ ॥ नविघ्नान्तहान नू रु क्षि
न नाथि वव हकदान [illegible] निभ न गाध्य प्रतिक तिक बान नाहि कीला त्वांमा वीवी मन्त्र
विश्वप्रति मंत्री ता लास हूं ६ कील पि लाग हप ऐ व कु प्रविशु ॐ सह वज्र मूर ख ब न
वज्र मूर ख लन मूप व प्रज्ञा कार्ति धा प्रत्ता व बल भप न यप नार्थ मज्जन वर्म्मत्वादि वा
भा कार्य हूं हूं कि विदर्लित सूपर्व हूं निष्पन ॥ कृष्णवा गास हस्ता हनना रु मा हूं कर या
न वहाव पिवा ॥ ॐ वज्र नाय प हृत्यादि वदना पूर्वकी गन [illegible] बादय दमाव प्रि ॥ वर्जव
हाहं कप सूर्य्य माहात्म्य पयता ॥ माहूं वज्र ला प्र वूर [illegible] हिम घाति वा न नमा तांविन थ
रू मा हू ॥ पिप रू भव क व र घात ननदी हिमांकृत्या न ॥ वज्र विवा व ह मा हू ॥ हूम स्वादि ।

गुरुकारं लिलि ताक्षिपूर्विं वर्णीकवललृक हमसथनाहि नव ज्योक्ष्यानां प्रहि ध्म वक
[illegible] भावसपिकर्हवां। कूरुस्पलिष्ठव वकुवमार्ह वद्र धिका हकूर्यानां सीनपीनव
कक्षकूपंकज्ञ त्रिविखालिकव र्ष्णानि। ष्पू ख्याक्षि मवृनल गीलाव ज्ञालि कूर्मपदि हपर्थ
सर्वकर्मिक ऊफं मिलि। ह्कानीहिमक्षिन वामवज्ञ [illegible]। वामहस्ते धिपु कवक्रिकर्म
पत्र क्षिवि सविन विमिति गाखादिकं कर्मपविन पूर्णविना क्षिन को लाकाहूनप वि
नमयविति। [illegible] न्हूना हुव काला कालेन कलापस्तूप तेन यह्ना नख्राव ना हि धा १२०
प्रक नाकाव ह्वाहर्तं पनमसुंयमलनमूर्बान पना। ष्मक्षि पीहिक व पना। पृहि वा वकु सहू
कानकावाना। ष्ठवना व दलपंकजं हा मपक। विमस जाहू मौक लाल ४ स्यादि तिनाम कनि
याप्यसा हूवा मिदं। विकल्पनामात्रपवमा लखाव गुरुवाला। हंयं छि पसमाय लिलिपि ढ
वना। हूं कानपू वंक पुहूलपायावक वहसनेता महीमद रवीकूर्वनाना यं सर्वहृलतं ज्ञनपलि गुरु

फस्यार्थ थानस्थेवम[illegible]लस्य सामग्री ग्रा हि साध कथान [illegible] य न थगाजादि वि धसमयनि यपनमाछ्रे
वि धनि व गनान पनमा खाद्धि) नान थेव सा म ग्राहि खदिनि यथ काहि मिनि। [illegible] कि का [illegible]
नथ गनम [illegible] लम [illegible] व दा धाहि रव्य धापूध्य थव ल्लम [illegible] लं पृ र्सा कं हि [illegible] मधा [illegible] नाव
वावकम [illegible] ला(लि) गाबू कर्मा लि। [illegible] नाक म्मा।लि यज्ञम [illegible] ला [illegible] प गाहृ य था [illegible] मिनि। [illegible]
रहि थकका लं निपमा ना [illegible] र्थ [illegible] प्रति [illegible] वा [illegible] दि धतु [illegible] म [illegible] लं संपू
र्ण हि थकम धामा मू [illegible] क याद नव्या॥ [illegible] ड माह [illegible] थं भकवृक्ष मयना। एकरवठि कन [illegible]
नि।[illegible] कर वठि कंव मूर्ख [illegible] एकरवठि क भक कपाल [illegible] न वा हिथ कथ। कार्य [illegible] पम का:
[illegible] मकरव [illegible] मक [illegible] वर्ही मिनि। [illegible] व [illegible] कंककं पपाह [illegible] निनि कपाल॥ [illegible]
कं॥ एकवृक्ष मयमिक्ष एकपम मय [illegible] थ॥ ह गावका वेगा वनम [illegible] व लाहिथक थ। [illegible] क
स्थवगाहि थक। [illegible] नाह थका [illegible] हिथकथ [illegible] पि नामपि कार्य॥ वलर्ध [illegible] हिथका वृक्ष

कायश ाल रथहिं षं ले का हा यता ।वन मा ।अ स्थानि स्त्रतं दुत्र ख हा षे ना का ।त्य व ज स त्व ख हायग
कपा ह स त्त कि भन ययसा ध्व प्र कृ त्रि वा हि ना स्थि सि वि प्रहा व न त्व व हा व न ४ प्र गा व था सा ध ध्वं यग
न थ स्थ अश्व हे का विक ल्यान व का ग दृ पा ता न व व हृ व त्ल प्र कृ नि नि सि कि त त ।काया लु मा ला म कृ ठ वृ
पं स्व सा व कं ॥ ति ।स्नु व म्हा नात ज ग इ क हुलति ।य थ अ प्र नू फ़ना स्त्र का व दे वा हि ना त स्व न स्प
पि प्रस व ा दे व प्र कृ ति विशुद्धि ति वि कि ।स्न क ला स मम पीरा क व फ्नान सव न सर्व की ल व ४ ज
व ह ता या ग ४ स्र्व त थ ग ला दी ना वा दे ग्वा स्व न ज्व ड्ड वं काव फ्र का हि ला ख ग भ या हि न य त्र ग । १२१
ग ण समस मा ला न वि ग्प्प न ।व उ लस मु ला का ल पूत वा ज्ञु म झुल न ग स्था प त्रि प व स्व वि
क व आ ह का न्म हा व न या वा ।कि स्त्रिं न स्र ध नथ ग ात प्र वि भं तृ व व ज स द्वे नि ष्पा या व ति र्थ प ञ्ज
से ठ नि ख्च या ।य भव ह्नां प्व ना हैं टी नं वि व ठ प्र दि र्धं ४ ज व वे श व ना ।दी ना म पि स्व कृ वा दय गुरु
४ स्र वा गा ग ज स्व ना ४ ।ज्ञ न से व व प्र या ता न य स्व षा म ल्या ध्व मा म स ४ वा स्ना हि का ह्य का हा प न

म नान सर्व द्रवति उदधा लक्ष्मि निधान्नना॥ सर्व कर्म प्रसन्नाय यविधि॥ कवि दिति स्तुति॰
र्हि कंसव विलंप्रतिवद्य द्याथि विरू बाध्य वाफि मारुणी॥ बाधिसत्व स्कस्याव स्पी॥ यथा स्तवं संप्रा
फानूप स्ककी किग्र मूना॥ जयकनसर्वार्थसाधकं ज्ञानूर्वि यनूपमनावह्कि नधानूपलस
लार्था॥ तस्यैव नाना प्रकारवना जाति॥ सूलिवजलमा बाधिसत्वा ह्ववकुयन २ विशुद्धस्कन:
समनकल ह्र स्कनाम्पी बाधिसत्व यथा नूगाति बापूर्ववदिति निकुम सद्धरा जाविलि महापू
नूषलक्ष णा शी ल्पानू व्यज्जन नादि स्याद्कथा। पूर्वस्कं धस्कस्याय ना ह्वावि भक्तहानूषूनूष:
लकृता निगत कविकास्र। विपानू काज्जनानि कि दगासारून वापका ख्रकु नाद्यथा म
र्पासंघा ठपर्भिवह्नी॥ महाबाधिसत्वपा ज्ञा ४ मावनूप्पनसत्वा वि हूप ना मार ३॥ अवकप्र॰
मकव स्नावि ह मावनभ हाव मारावक्रया गा४॥ वकुर्मा व हंगनमावअयी कविका॥ माक्कसू॰
निहयाविस बाधा धर्मसू ज्ञानं ग्रुह। निगाकवदा माक्का विशुद्धि लौकिकयाधिनायू स॰

हे निम्भक व श्रय॥ अब कप्ल कव स्वानो धर्म्म अहय्॥ निम्रा काव मोय अवपूकं रु धर्म्म
गम रे न लोक्षिमन यथातः पवि ह्लन. स्वंभाक्र विश्लिनवनि॥ अतस्वर्थं रागवातु धर्म्म ब अंग्र व
रूपोर्वथाव नथा॥ नाना ऋद्धि प्राप्ति हार्थे ध्ववनाव क्रमू कुमं धाममधि स्त्रक्व वनस्पति विशुद्धिनं
हा ज्ञानमा नू पल ज्ञानि थ स्वरा वास्कस्वर्थ ४ भूव लोकि हापर श्रा नाडाप समू लाचंव श्रहबनु॥
शुचिनबवे थाज्ञा स मना न्नु ज्ञा नु मोना नाम्रा ऋद्धि प्राप्तिहार्य्ये हतु ध्ववमा बक्रम सू क्रम॥ तयथाभू
नसपिकु गल पूजा ४ सर्व्वम्रु असमा अनं ति॥ असमा गामनु कं ४ हस्वा नति विक्रा कु मनु शुचिनहूं ति
कु लपूना ४ हस्वावनि लोक धम्ु ४ आसर्वत थमा न समा ऋतु हापिनां न हगवानपि॥ श्रीपुस्तनस १२२
रावीवे भाव श्री नादिन थाननर पुन थो॥ सम नकन॥ पविवाति भाव ६ हस्वावनि लोक थन्नो सहन
स्वार्थ प समूह श्र व नो नानी क्षाक या हवा हव ना ध्व द म वाय क प्रतिनोहका नुलब्धिदा नन मा
ना नीस्थ हान पनमा पीविशुद्धि न दर्था मा सर्वंम्न ख्यानधिमतु लपविशुद्धिहानं निक साऊना शुभ
मा स्ष्टन्कु दाने १

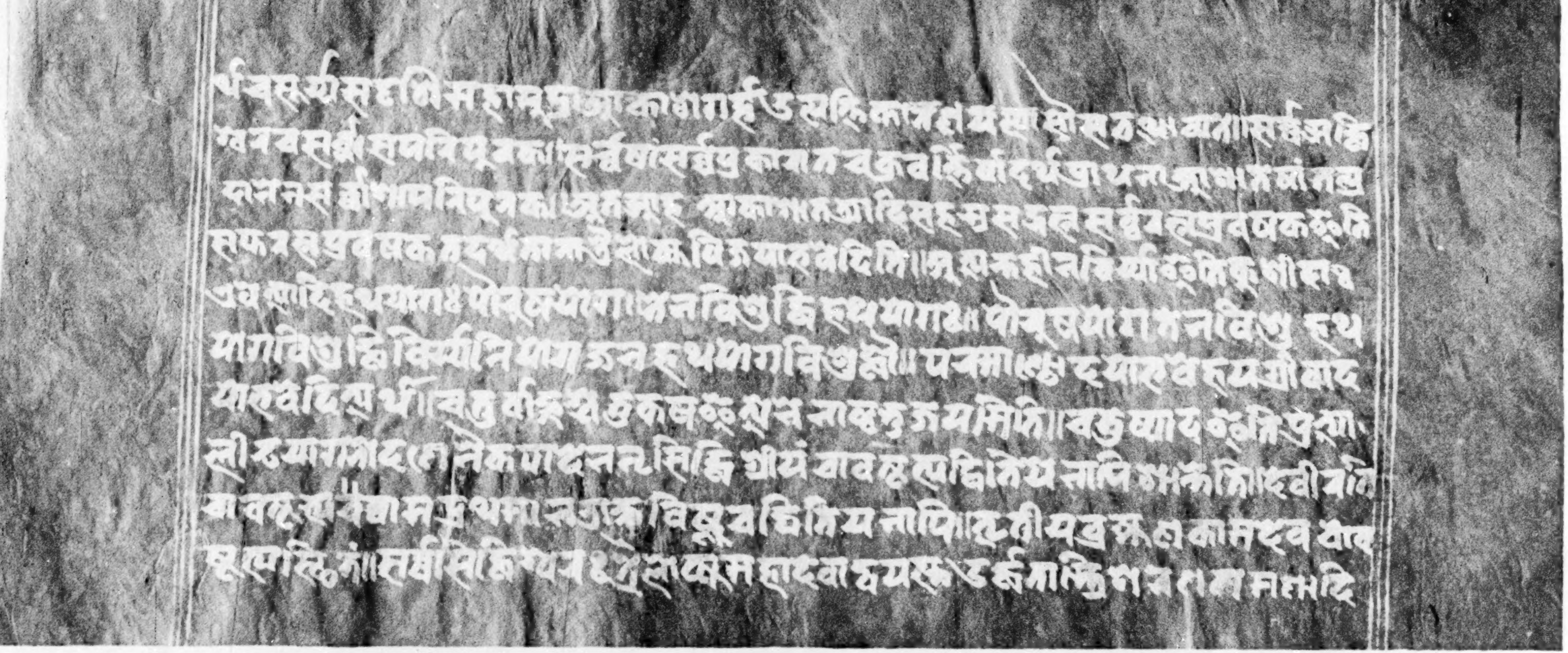

रिरिमोरेताकेनयजकामेन्हे मन्त्रोगुमनक्रावनम॥ नमस्तागुह्यजमानुनुपुद्रत्रिमेकृ
लेमहाद्धवनत्रिलोकमत्रियहुमत्रहक्षयकांमाम्लाम्नादिपविपूर्गुह्येमगुरुमिश्रपः
कतमंत्रमगुलम्नमातनसुजयदे॥नमकमकहम्कमक्षमामकहसंवहिह्रमकनके
बांकंदतमिकुमस्तलिवि॥वत्रमगुलसंकालामिनिमाई मगुलंवर्कुवएवादिसाहमृ
गावानाबेतालक्षेवमलमगुलप्रमदिकमरावनामिनिवलिवकावा॥मत्रनावमादेदी
हेतावुकाशेकुलादविमाकधेतुष्वतुश्रा॥तमावनानामसाक्षपत्यनहावनाकाकन
हेस्रेष्टल्यमेनायाइ४रुवमरूमिववनि॥नमदेकूलममलक्ष्मवसकमखाजहरेला
हिनक्षानइ४वनयामाहेमास्त्रवंवहक्ष्मयाइ४रवनहेपमथानिकिलुफाहतुवदतान
लेनिक्येयालसन्नवमत्रयंमवनवनि॥लानिनिवशावस्तुविरुनरायविक्रया॥विशाघ
नासह्यमावनवनिक्षालाक्षेहताकयायराममाधमामक्षिरुया॥साक्षगीकसवदानानिक्ष

श्री संघ॥ मार्गीन सुमव नय ति॥ स्मृ तज्ञा दो बतु सत्याव ता यामा॥ सल्लक्ष प स्तु न हाव ताव स्ति
य ता॥ स्मृ ताव शुन्य ताम ताव स्वरूव शुन्यताव॥ प जील धर्म सता नाप स्न क स्नु न्य ताप का
दस्या व पपवि भावार्थ य यथ क्रम त्र व शुन्यता या॥ स्वरूप विहृया॥ कथम् साधनं विहृय सक्लि
ष्टा स्वरूव ता सोम क्रा ३ सू ४॥ सर्व दहि न विशु स्ता व्य व्या या मा॥ निष्फ लो हव गा प दि ध स्तो
का शुन्यता सुगा तुके ३॥ सक्लेशी व नु ल त्रि पिय क्लिप कल सक्लि ष्टु रुव ता॥ सक्ले षा ता या द्वा य
न त्र वं सू क्रा ३॥ सर्व न ता हव सू ४ ल आ लव न विशु ला हव गा॥ मा क्रार्थेन ताभि नि ष्फ लो ल
व ता॥ व य व कल्वा न क स्तु ना तु क्षप्र स्वक प्रकृ ती व प्र ता स्व ४ लो व क स्या कथ न क्लिस्या
स्ता न स्ता न शु ता क्लि न पास्या॥ त्र व शुन्यता या ड दक्लि ३ उ रह भ स्ता वि गा हव ति क त्र शुन्यता
यां वि शुर्थ स य पा क ता न प्रा लि प्र का शु रा दि क्षप्र प्र लिप क्रा भे त्री॥ नो हि प्र ति प्र क्रा प्रा ते स्व
स्व स्व पाद ता ते त क य ता या या वि नि वृ हि त स्वर्थ सा दि लि ख ता ४ न नू रूप य त ता या ४ स्या ली य क

॥ ॐ इति श्री सूर्य विलथ गात काल वा श्रित वज्र गुरु कादित्य सु सुमाङ्गल [illegible] तंत्र वाग्
॥ सर्व्वक स्पनि दानति लक स माम्प॥ सम्पाकाप्तेन सु स म [illegible] ला
नथ स कं त्रुवा [illegible] ॥[illegible] क्मा स्वाहि॥ ॥श्रु ह सन्वज्र [illegible] मिमि अव न ३ ज
व [illegible] पादित संपूर्ह मिमि॥ श्रुह ॥ हिरिवंतं त शू [illegible] हेल ला न म हा प्र आलया॥ श्री वज्रा
चार्य्य वज्र [illegible] सिं [illegible] क श्री वज्र दवी सविक व सम हिं नं श्री [illegible] व ज्ञान स्व १०७
पुद्द क लि पि विक मिमि॥ ॥ शुभं मूत्र पू [illegible] नल ध्याप नदि पना पाप [illegible] प्त हे व [illegible] हू [illegible]
हि [illegible] पित न नम्ब [illegible] विपाग [illegible] लोक॥

[illegible] ग कथं वाक्ये [illegible] व कुल पूजा [illegible]

[illegible] नव वाम [illegible]

[illegible] स्य वाम ग [illegible]

[illegible] कालवति [illegible] पूजा [illegible]

[illegible] सम [illegible]

[illegible] पूजा [illegible] विशुद्ध [illegible] १२

[illegible] सर्पा [illegible]

[illegible] कुल पूजा [illegible]

[illegible] सकाल [illegible]

[illegible] सकाल [illegible] विशुद्धि॥ [illegible]

॥ इति श्रीसर्व्वतथागतकायवाक्चित्त [illegible] गुह्यादि [illegible] समाजे [illegible] तन्त्रराजे

॥ सर्व्वकल्पनिर्द्देश [illegible] लक्षण समाप्तः ॥ समाप्तश्चायं गुह्यसमाज [illegible]

नथ महातन्त्रराज ॥ [illegible] मा स्वाहा ॥ शुभमस्तु ॥ [illegible] मिति अष्ट [illegible]

[illegible] दिन संपूर्ण लिखितं ॥ शुभं ॥ लिखितेन [illegible] महा [illegible] लया: [illegible]

चार्य्य: [illegible] श्रीवज्रदेवी [illegible] श्री [illegible] ११७

[illegible] लिखितमिति ॥ शुभ [illegible]

लिखितेन [illegible] ॥